# ७३-मिलन

आज दाऊका जन्म नक्षत्र है। यह जन्मनक्षत्र कोई अच्छी बात नहीं। न दो-चार बरसपर आता न दो-चार महीनेपर, प्रत्येक महीने पहुँचा ही रहता है और जन्मनक्षत्र आया तो मैया वन में नहीं जाने देगी। कन्हाई दिनभर पृथक रहेगा। पूजा-पाठ, स्वस्तिवाचन, हवन-दान-दक्षिणा आदिमें श्याम बहुत उत्साह दिखाता है; किंतु दाऊको विशेष रुचि नहीं इनमें। मैयाका भय, बाबाका संकोच, माँका आग्रह नहीं तो वह सबको अँगूठा दिखाकर अपने छोटे भाईके साथ वनमें भाग जाय। कृष्णचन्द्र भी चाहता है कि उसका दादा अपना जन्मनक्षत्र मनाये और दाऊ आज घरमें है। वनमें नहीं जा सका वह। हवन, गोदान, पूजा-पाठ, वाद्य-गीत, बड़ा महोत्सव होता है इस दिन और आज भी हुआ है; किंतु दाऊको लगता है कि वह एक बड़े भारी जनहीन मरुभूमिमें पड़ गया है, जहाँ एक नन्हा झींगुरतक 'चीं' नहीं करता सुनायी पड़ता। सुनसान-सुनसान। सब कोलाहल, सब धू-धड़ाका, सब भीड़-भाड़; किंतु दाऊ को जैसे यह सब दीखकर भी नहीं दीखता! वह अनमना सा है। मैया जानती है, माता रोहिणी जानती हें, अपने अनुजसे पृथक यह ऐसा ही गुमसुम हो जाता है।

'कनूँ आ रहा है।' बड़े तेज कान हैं दाऊके। सबसे पहले वंशी-ध्वनि इसीके कानोंमें पहुँचती है। माता रोहिणी पुकार रही हैं, मैया द्वारतक पीछे लपकी आयी है-बाबा, 'हाँ-हाँ' करते पकड़ने दौड़े आ रहे हैं। गायोंके झुंड-के-झुंड दौड़ते आ रहे हैं और उन कूदती-उछलती सहस्रों गायोंके बीचमें यह नीलाम्बरधारी नन्हा-सा दाऊ सीधा ताली बजाता दौड़ा जा रहा है।

'हम्मा!' गायोंके पद ठक-से रुक गये हैं। वे सूँघ लेना चाहती हैं। वे असमंजसमें पड़ गई हैं-'उन्हें गोष्ठमें जाना है या वनमें? दाऊ तो वनकी ओर जा रहा है।' वे खड़ी हो गयी हैं। पीछे देखने लगी हैं और कुछ मुड़ भी पड़ी हैं।'दाऊ उन्हें देखता क्यों नहीं? पुचकारता क्यों नहीं?' वह तो उनके बीचमें दौड़ा जा रहा है। वे उसकी ओर मुख करके 'हम्मा हम्मा' कर रही हैं।

'दादा!' आज श्याम नहीं देखता कि द्वारोंपर किनके थालोंमें नीराजन-दीप हैं। वह नहीं देखता पुष्प झरते छज्जोंकी ओर बंक दृगोंसे। न कहीं आज उसे पुष्प

फेंकना है, न मुस्कराना है। आज वह नाचता ही नहीं। उसकी मुरली भी आज विचित्र गतिसे बजती है। वह मार्गके इधर होता है, उधर होता है और बार-बार उझकता है दोनों पंजोंके बल-'दादा!' इन गायोंके अपार समूहके आगे उसका दादा दीखता नहीं उसे।

'दादा!' दोनों हाथ फैलाकर दौड़ा कन्हाई और वह दौड़ा आ रहा है दाऊ। दोनोंका मिलन...जैसे युगों पश्चात् मिल रहे हों दोनों।

गायें गोष्ठोंकी ओर दौड़ी जा रही हैं-लक्ष-लक्ष गायें। उनके पीछे नीलाम्बरधारी, निर्मल और गौर वर्ण यह दाऊ और उसके सामने नाचता, वंशी बजाता, कूदता, हँसता यह वन-पुष्पोंसे सजा, गौरस-धूसर श्यामसुन्दर। आज अपने दादाको छोड़ इसे जैसे और कहीं देखना ही नहीं है। गोपकुमार दोनोंको घेरकर नाचते हैं, गाते हैं और तब मण्डली थोड़े पद चल लेती है। आजका यह मिलन-महोत्सव...।

## ७४-श्याम पहले जगा

'श्यामसुन्दर! उठ लाल! देख तो कितना सबेरा हो गया! देख, तेरा मयूर आँगनमें कैसे नाच रहा है।' मैया बहुत धीरे-धीरे हाथ फेर रही है मोहनके शरीरपर। वह बार-बार रुक जाती है-अभी जगाये या न जगाये? किंतु देर होनेपर यह ठिकानेसे कलेऊ भी नहीं करता।

एक ही शय्यापर नीलाम्बर ओढ़े दाऊ और पीतपट ओढ़े श्याम सो रहे हैं। मैया चाहती तो है कि अब दोनों पृथक् सोना सीखें, पर कन्हाईको बड़े भाईके बिना नींद ही नहीं आती।

'देख तो, कितनी देरसे बेचारे ये नन्हें पक्षी तुझे पुकार रहे हैं। कितने सुन्दर पक्षी आये हैं आज! तेरी कामदा बुला रही है तुझे।' मैया धीरे-धीरे पुकार रही है।

श्यामसुन्दर हाथसे मुखपरसे पीतपट हटाता है, तनिक नेत्र खोलकर मुस्कराता है और फिर मुख ढककर सो जाता है। बार-बार वह यही कर रहा है। मैया अपलक देख रही है उसका बिखरी अलकों से घिरा चन्द्रमुख। झीने पीतपटमें से इस मुखकी शोभा...।

'तू कहता था न, मुझे दाऊसे पहले उठा देना! तू नहीं उठेगा तो मैं दाऊको जगाती हूँ।' मैयाने स्नेहसे फिर पुचकारा।

अब कन्हाई मुख से पीतपट हटाकर देखने लगा। सचमुच दाऊ अभी सो रहा है। चरणोंसे पीताम्बर को हटाकर पैताने कर दिया इसने और बैठ गया नेत्र मलते मलते। एक बार मैयाकी ओर देखकर मुस्कराया और फिर दोनों पैर लटकाकर शय्यासे उतर गया।

'दादा!' एक हाथसे शय्या पकड़कर दूसरेसे दाऊके ऊपरका नीलाम्बर खींच लिया मोहनने। जैसे बादलोंमेंसे चन्द्रमा निकल पड़ा हो। दाऊने नेत्र खोले और अपने छोटे भाईको हँसते देख झटसे बैठ गया, उतर गया शय्यासे।

'दादा! मैं तुझसे पहले उठ गया!' कृष्णचन्द्र बहुत प्रसन्न हो रहा है। दाऊ उतरकर उसके पास आ खड़ा हुआ है।

'अच्छा, अब आओ तो तुम दोनों!' मैयाने एक-एक हाथ पकड़ा। दोनोंकी अलकें बिखरी हैं। दोनोंके नेत्रोंमें अलस भाव है और काजल दोनोंके नेत्रोंका फैल रहा है। दोनोंके मुखपर मधुर हास्य है। दोनोंकी नीली-पीली कछनियाँ ढीली-ढीली हो रही हैं। दोनों बार-बार जम्हाई ले रहे है और अलस पदोंसे अटपट चल रहे हैं। मैया दोनोंका मुख धोयेगी अब। वह दोनोंको गोदमें लेकर बैठ गयी है सम्मुख जल रखकर और दोनों मैयाके गलेमें हाथ डालकर, कंधेपर सिरपर रखकर एक क्षण और सो लेना चाहते हैं।

## ७५-संकल्प

'दादा, ये राक्षस बहुत बुरे होते हैं।' श्यामसुन्दरने अपने विशाल दृग बड़ी विचित्र भङ्गीसे अग्रजकी ओर उठाये।

'हम सब असुरोंको मार देंगे।' दाऊके भ्रूमण्डल भी कठोर हुए और वह अपने छोटे भाईके पास बैठ गया। कन्हाई इतना गम्भीर बने, उसका यह नित्य प्रसन्न चंचल अनुज इस प्रकार सचिन्त दिखायी दे--दाऊ इसे किसी प्रकार सह नहीं सकता।

'मैं अभी वस्त्र बदलता हूँ, तू तनिक खड़ा रह।' कन्हाई अपनी धुनमें है। वह सदा अपने ही धुनमें रहता है। इस समय उसे बड़े भाईका शृंगार करनेकी धुन है और बिना इसे पूरा किये उसे कछनी बदलनेको प्रस्तुत कर लेना सरल नहीं है।

गीला पीतपट कटिसे चरणोंतक चिपका हुआ है। इन्दीवर सुन्दर श्रीअङ्गकी आभा उससे झाँक रही है। भीगा हुआ है पूरा अङ्ग। अलकोंसे बिन्दु गिर रहे हैं और भाल, कपोल, कंधे, वक्षपरसे अभी जल फिसल रहा है। घनश्याम हाथोंमें पुष्प लिये अपने बड़े भाईके सम्मुख खड़ा है और उसकी किंचित् आर्द्र अलकोंमें उन्हें बड़े यत्नसे सजा रहा है।

'हो गया। ले, पहिन तू इसे।' दाऊके हाथोंमें कन्हाईका पीतपट है और उसे शीघ्रता है।

'तू तनिक रुक जा। हिल मत।' कन्हाई अपनी धुनमें है। उसे जल्दी करनेका कोई कारण ही नहीं दीखता।

## ६८-मनुहार

'दादा, तू आज उदास क्यों है?' श्यामसुन्दर आया और बड़े भाईका हाथ अपने हाथमें लेकर पास बैठ गया है। 'तू खेलता तो है नहीं।'

'कनूँ, तू खेल। मेरा जी खेलनेको नहीं होता।' आज दाऊ गुमसुम बैठा है। पता नहीं, किसकी व्यथाने इसे क्षुब्ध किया है आज।

'मैं नाचूँ? देखेगा तू?' मोहन देखता है कि आज हठ करनेसे कोई लाभ नहीं। कहनेसे दाऊ खेलने भी लगे तो ऐसे बेमनके खेलमें भला, क्या आनन्द आना है।

'हाँ, तू नाच।' दाऊने छोटे भाईको प्रसन्न करनेके लिए कह दिया। वैसे आज उसमें जाने क्यों उत्साह नहीं है।

'नहीं, दादा! तू आ और यहाँ बैठ।' कन्हाई थोड़ी देर ठुमुक-ठुमुक नाचता रहा। हाथ मटकाकर थिरकता रहा। किंतु दादा आज ताल नहीं देता, साथ देनेको आता नहीं और प्रशंसा भी करता है तो वह पूरे उल्लाससे पूर्ण कहाँ है? ऐसे नृत्यसे क्या लाभ? नाचना बन्द करके कृष्णचन्द्र आ गया बड़े भाईके पास और

'सब राक्षस बुरे होते हैं। हम सबको मारेंगे।' तोक समझता है—इन राक्षसोंमें दम कितना होता है। बड़े मोटे देखनेको होते हैं, पर कन्हाईने चपत मारी तो बरसाती छत्ते-जैसे फच् हो जाते हैं। दाऊ सबको मारेगा तो क्या वह दस-पाँच भी नहीं मार सकता। अपना लकुट लेने दौड़ गया है वह।

## ७६-करुणा

'कनूँ, तुझे किसने मारा है?' सुकुमार कन्हाईकी पीठपर कटिदेशमें एक नन्हीं-सी खरोंच आ गई है। रक्त आया नहीं है; किंतु छलछला आया-सा लगता है। नन्हीं खरोंच-किंतु श्याम कितना सुकुमार है! दाऊके कमल-दलके समान सहज अरुण नेत्र सर्वथा किंशुकारुण हो उठे हैं और उनमें जल भर आया है। भ्रूमण्डल कठोर हो गये हैं और मुख तमतमा आया है। उसके रहते कोई उसके भाईकी ओर अँगुली उठा सकता है। कौन है वह?

'कहाँ? मुझे किसने मारा?' श्यामको पता ही नहीं कि उसे खरोंच भी आयी।

'यह क्या है?' दाऊके नेत्र तो वहीं स्थिर हो गये हैं।

'यह?' मोहन इस प्रकार सोच रहा है, जैसे बहुत गम्भीर बात है यह। इसे तो कोई लम्बी, उजली दाढ़ीवाले ऋषिको आसन लगाकर, नेत्र बंद करे, दस पाँच दिन सोचना चाहिये। 'उस लताने।' एक ओर अँगुली दिखाई भोलेपन से।

'तू उसके फूल लेने गया था?' आज जब यह उधर गया ही नहीं, तब लतासे खरोंच कैसे आयेगी?

'ना, फूल तो मैं कदम्बके लाया हूँ। उस कदम्बके।' अब इसका कोई समन्वय है कि फूल पूर्वके कदम्बसे आये और खरोंच पश्चिममें दूरस्थित लतासे लगी?

'तब लताने कैसे मारा?' दाऊ ठीक सोचता है मोहन बता नहीं रहा है। किंतु मोहन कैसे बता दे कि श्रीदामासे झगड़नेमें उसके हाथके नखसे अनजानमें ही खरोंच आयी है। बेचारा श्रीदामा—कितना दुःख होगा उसे? उस दाऊका ही क्या ठीक ठिकाना है कि क्या कर बैठे। कभी तो यह बड़ी से बड़ी बातपर हँस देता है और कभी तनिकमें लाल हो जाता है और फिर इसका क्रोध...।

'तब इस पत्तेने मारा है।' कोई सजीव, सहृदय, सज्ञान प्राणी तो मोहनको जान-बूझकर तनिक भी कष्ट देनेका विचार कर नहीं सकता। खरोंच आयी है, तब किसी निर्जीवका काम होगा यह। वृक्ष टूटकर गिरे एक पीले पत्तेको हाथमें उठाकर कृष्ण इस प्रकार देख रहा है, जैसे जान लेना चाहता है-निश्चय कर लेना चाहता है कि इसी ने मारा है उसे या नहीं।

'कनूँ!' दाऊके मुखकी अरुणिमा लुप्त हो गई है। भ्रूमण्डल सरल हो गये हैं और नेत्रोंमें अद्भुत भाव है। वह एकटक अपने अनुजके श्रीमुखको देख रहा है।

'दादा!' अधरोंपर मंद स्मित लिये श्याम भी एकटक देख रहा है अग्रजको। अब इन दोनों भाइयोंकी दृष्टिमें क्या भाव है-श्रुतिपारद्रष्टा ब्रह्माके लिए भी यह अज्ञेय है।

## ७७-डाँट पड़ी

'दादा, कनूँ धूपमें नाच रहा है। देख न, रेत कितनी तप रही है।' भद्रने दाऊसे कहा। आज श्यामसुन्दर सखाओंको खिझा रहा है। सुबल, भद्र, तोक—सबने कह लिया; किंतु वह किसकी सुनता ही नहीं।

'कनूँ!' दाऊने पुकारा। किंतु कन्हाई कहाँ सुनता है! धूप पड़ रही है, रेत तप चुकी, उसके भालपर स्वेदकण चमकने लगे हैं, उसका मुख लाल-लाल हो गया है; किंतु उसका ध्यान सखाओंको खिझानेकी ओर है। सबको खिझानेके लिये वह और शीघ्रतासे नाच रहा है। जान-बूझकर पैर इस प्रकार पटकता है कि नूपुर अधिक-से-अधिक शब्द करें। हाथ नचाता है और घूमता है।

'कनूँ!' दाऊने कुछ अधिक ऊँचे स्वरसे पुकारा-'चल, छायामें आ जा। रेत तप रही है।'

कनूँ सुनता नहीं, देखता नहीं किसीकी ओर। वह मुसकराता जाता है, नाचता जाता है। उसकी एक-एक भङ्गीमें नटखटपन है। जैसे वह कहता हो-'मैं नाचूँगा। क्या करोगे तुम सब? मैं कहाँ किसीकी चिन्ता करता हूँ।'

'कनूँ!' पूरे उच्चस्वरसे डाँटकर पुकारा दाऊने। 'यह तपती रेत और ये सुकुमार चरण—नहीं, अब और सहा नहीं जा सकता।'

दाऊका स्वर सुनकर कन्हाईने देखा बड़े भाईकी ओर और नृत्यको उठे उसके पद जैसेके वैसे रह गये। दाऊ तो क्रुद्ध हो गया है। अब भागनसे भी क्या लाभ? अपने दादासे भागकर जाया भी कहाँ जा सकता है? वह तो दस पैंडमें पकड़ लेगा। हाथ ढीले हो गये। मुख झुकाकर धीरे-धीरे चलकर कृष्णचन्द्र बड़े भाईके सामने आकर खड़ा हो गया। ऊपर मुख करके भयकातर नेत्रोंसे बड़े भाईके मुखकी ओर देख रहा है वह। उसके विशाल नेत्रोंमें आँसू भर आये हैं। उसकी कातर भङ्गिमा कहती हैं-'दादा, मुझे मार मत। मैं फिर ऐसा हठ नहीं करूँगा।'

दाऊने अपने भयाकुल भाईका मुख देखा, भरे नेत्र देखे और खींचकर हृदयसे लगा लिया। श्याम चिपक गया है बड़े भाईसे और हिचक-हिचककर रोने लगा है। दाऊके कंधेपर मुख छिपा दिया है इसने। हिचकने-सिसकनेके वेगसे इसका सिर और पीठ हिल रही है। रोता है—रोता जा रहा है कन्हाई।

दाऊके नेत्र झर रहे हैं। श्यामकी अलकोंको भिगाती जा रही हैं बड़ी-बड़ी बूँदें। छोटे भाईकी पीठ एवं सिरपर हाथ फेरते-फेरते दाऊ बड़े स्नेहसे कह रहा है, 'कनूँ! तू धूपमें मत खेला कर! तेरे चरण देख तप गये हैं। रो मत! रो मत, कनूँ!'

## ७८-विश्राम

'कनूँ, तू थक गया है। ला, तेरे पैर दबा दूँ।' भद्र धीरेसे श्यामके चरणोंके समीप बैठ गया।

'तू थक गया हो तो तेरे पैर मैं दबा दूँ।' कृष्ण इस समय अपनी मौजमें हैं। भद्र उसके पैर दबाने लगे तो कोई पत्ता लेकर वायु करने आ पहुँचेगा। यह सब इस समय उसे अभीष्ट नहीं। भद्रके पाससे अपने चरण उसने एक ओर खिसका लिये।

हरी-हरी कोमल दूर्वा है। कहीं-कहीं शंखपुष्पीके उज्ज्वल पुष्प हैं उसमें छोटे-छोटे। ऊपर मौलिश्रीकी घनी छाया है। दाऊ पालथी मारे बैठा है और बड़े भाईके समीप ही श्याम पेटके बल घासपर लेटा पड़ा है। दोनों चरणोंके लाल-लाल तलवे खिले कमलसे ऊर्ध्वमुख हैं और मोहन कभी-कभी चरणोंकी अँगुलियाँ

ाचा लेता है। दाहिनी कुहनी भूमिपर टेककर खड़े दाहिने हाथकी हथेलीपर ि।बुक धरे, वक्षसे ऊपरका भाग पृथ्वीसे उठाये सामने नाचते मयूरको चुपचाप ःख रहा है और मन्द-मन्द हँस रहा है।

'भद्र, गायें तो दूर चली गयीं। मैं जाऊँ क्या?' इस पूछनेका अर्थ बहुत स्पष्ट है। गोहन इस समय उठे, यह कौन चाहेगा।

'तू लेटा रह। मैं गायें घेर लाता हूँ।' भद्र उठा और सबने अपना लकुट उठाया। गायें दूर चली गयी हैं। सखा भी खेलनेमें लगे हैं। कन्हाई उछल-कूदकर थक गया है। अब इसे तनिक विश्राम कर लेना चाहिये।

'चल, मैं तेरे साथ चलता हूँ।' दाऊने भी भद्रके साथ गायोंको घेर लानेके लिये उठनेका उपक्रम किया।

'दादा, तू बैठ।' कन्हाईने पड़े-पड़े ही दोनों हाथ उठाकर दाऊके दोनों घुटने पकड़ लिये और धीरेसे अपना सिर उसकी गोदमें रख दिया।

पेटके बल घासपर लेटा हुआ यह श्यामसुन्दर। दोनों चरण अब इसने उठा लिये हैं घुटनोंतक ऊपर और उन्हें पीठकी ओर मोड़कर हिलाता है, नचाता है। दाऊकी गोदमें सिर रखकर मजेसे कभी मयूरका नृत्य देखता है और कभी बड़े भाईके मुखकी ओर मुख घुमाकर देख लेता है। कुछ गुन-गुन करके मन-ही-मन गा रहा है।

'दादा, तू जायगा?' नटखट कहींका। गोदमें सिर रखकर दोनों हाथोंसे दोनों घुटने पकड़कर तब पूछता है कि तू जायगा? अरे तू गोदमें सिर रखे लेटा रहे तो दाऊ जाना तो दूर, हिलना भी चाहेगा? छोटे भाईके सुन्दर मुखकी ओर देखता दाऊ मन्द-मन्द हँस रहा है। उसे क्या आवश्यकता कि उत्तर दे।

## ७९-ऐश्वर्य

'दादा!' तोक दौड़ता हुआ आया, किंतु सम्बोधन करके फिर हिचक गया। दाऊके पास आकर धीरेसे कहा उसने-'दादा! आँधी आ रही है। तू उसे मना कर दे। कनूँ सो रहा है न।'

'कहीं आँधी भी कोई मनुष्य या गाय है कि मना करनेसे मानेगी।' गोपकुमारोंने कुछ कहा नहीं, पर प्रायः सबके अधरोंपर हास्य आ गया। यह तोक अभी बहुत छोटा जो है—समझता कुछ नहीं।

'तू मेरा नाम लेकर उसे मना कर आ। कह देना कि अभी आयी तो अच्छा नहीं होगा।' यह दाऊ घूँसा दिखा रहा है बाप रे! इसके घूँसेसे आँधी तो क्या, आँधीका बाप भी मान जायगा। तोक मना करने दौड़ गया है, किसी बालकके मनमें अब कोई संदेह नहीं है तोककी सफलताके सम्बन्धमें। कोई नहीं देखता कि गायोंने चरना बंद करके कान खड़े कर लिये हैं। बंदर वृक्षोंपर जा चिमटे हैं और वन-पशु चौकन्ने हो रहे हैं। आकाशमें चढ़ती हुई धूसर धूलिकी घनघटाकी ओर कोई आँख उठाकर देखतातक नहीं।

'दादा!' तोक फिर प्रसन्नतासे उछलता आया। इतनी देरमें भला, वह कितनी दूर गया होगा। इस बार दाऊके कानके पास मुख ले जाकर अपनी समझसे वह बहुत धीरे-धीरे बोल रहा है; पर उसका स्वर ऐसा है कि सुन सब रहे हैं। वह कह रहा है-'आँधी तो मेरा ही घूँसा देखकर भाग गयी।' मैंने तेरा नाम तो लिया ही नहीं। मैंने कहा-हमारा कनूँ अभी सो रहा है। तू भाग जा, नहीं तो 'हूँ...।' और अपनी छोटी-सी मुट्ठी बाँध ली उसने फिरसे।

'तू क्या किसीसे कम है?' दाऊने प्रोत्साहित किया तोकको! श्याम सो रहा है। सघन तमालके नीचे लाल-लाल आम्र-किसलयोंकी शय्यापर भद्रकी गोदमें सिर रखकर वह सो रहा है। सुबलकी गोदमें उसके चरण ऐसे पड़े हैं, जैसे दो खिले कमल। पटुका उसने एक ओर हटा दिया है। बड़ी-बड़ी पलकें बंद हैं। वक्ष और उदर मन्द-मन्द हिल रहे हैं। सो रहा है कन्हाई। मण्डलीभद्र कमलके पत्तेसे वायु कर रहा है उसे।

दाऊ पास बैठा है सटकर। वह अपने निद्रित अनुजके अधरोंपर जो स्मितकी रेखा है, उसे देख रहा है। कभी-कभी धीरेसे कन्हाईके भालपर आयी अलकको हटा देता है। यह अलक भी कम हठी नहीं है। यह बार-बार भालपर चली आती है।

तोक आज संरक्षक बन गया है। कन्हाईकी दूसरी मूर्ति तोक—वैसा ही पीताम्बर-परिधान, नीलसुन्दर, गोपकुमारोंमें सबसे छोटा तोक तनिक दूर चरणोंकी ओर

अपना छोटा-सा घूँसा बाँधकर खड़ा हो गया है। उसकी भङ्गी, उसके नेत्र, उसकी भाव कहती है-'कोई बोल नहीं सकता। कोई आ नहीं सकता। न आँधी, न आँधीका सङ्गी साथी। हमारा कनूँ अभी सो रहा है।'

## ८०-अन्वेषण

'कन्हाई कहाँ है?' सायंकाल हो रहा है, गायोंके लौटनेका समय हो गया। गोपकुमार उन्हें घेरने भी लगे हैं। ठीक इस समय श्याम कहाँ चला गया? अभी थोड़ी देर पहले तो यहीं उछल-कूद रहा था। पता नहीं किस पक्षी या मृगके पीछे दौड़ गया। किसी कुंजमें पुष्प लेने भी चला गया हो सकता है। अब उसे झटपट आ जाना चाहिये। दाऊ इधर-उधर देखने लगा है।

'श्याम कहाँ गया? किधर गया?' अपने छोटे भाईके आँखोंसे ओझल होते ही यह दाऊ चंचल होने लगता है। वैसे यह सबमें गम्भीर है; किंतु कृष्ण कहीं गया तनिक दूर और इसने खोज प्रारम्भ की। फिर इससे बैठा नहीं रहा जा सकता।

'कनूँ! कहाँ है तू? आ। दौड़ आ। अब हम घर चलेंगे।' कृष्ण तो कहींसे बोलता नहीं। दाऊके गम्भीर स्वरकी केवल प्रतिध्वनि आ रही है। 'कितनी दूर चला गया श्याम?'

'तुमने मोहनको देखा है? वह किधर गया?' सब सखा तो यहीं हैं। अकेला कन्हाई चला कहाँ गया? ये सुबल, भद्र, श्रीदाम, तोक, अर्जुन, ऋषभ आदि सबके सब तो यहीं हैं। इन सबसे पृथक् होकर वह चला गया?

'तुम सब बताते क्यों नहीं हो? कन्हाई कहाँ छिपा है?' ये सखा कोई उत्तर नहीं देते। श्याम सचमुच कहाँ गया? यदि ये न जानते होते तो इस प्रकार क्या मुस्करा पाते? दाऊ समझ गया है कि उसका छोटा भाई कहीं पास ही छिपा है। पर परिहास कर रहा है।

'श्याम, कहाँ है तू?' लेकिन श्याम कहाँ बोलता है। वह क्या-दाऊकी पीठके पास कमर झुकाये, सिर उझकाये, सिकुड़ा-सिमटा मुस्करा रहा है। दाहिने हाथकी तर्जनी अधरोंपर रखकर सखाओंको चुप रहनेका संकेत कर रहा है। दाऊ जिधर घूमता है, उधर ही घूमता हुआ पीछे छिपता जा रहा है। कितने खिले हैं उसके नेत्र। कितना प्रसन्न है उसका मुख।

'अच्छा।' दाऊ हँस पड़ा खुलकर। ये सब सखा कहाँ देख रहे हैं? क्यों ये उसके पीछेकी ओर देख-देखकर हँस रहे हैं?

'दादा!' श्यामने देख लिया कि दाऊ जान गया। अब वह झटसे पीछे घूम पड़ेगा। पीछेसे दोनों भुजाएँ बड़े भाईके कण्ठमें डालकर चिपक गया है पीठ से और गर्दनके पास सिर रखकर हँस रहा है।

## ८१-तारक-दर्शन

'भैया! यह कौन-सा तारा है?' इस गर्मीकी ऋतुमें श्यामसुन्दर बड़े भाईके साथ एक ही शय्यापर खुले आकाशके नीचे सो रहा है। चन्द्रमाका उदय तो अभी दो घड़ी पीछे होगा। निर्मल नील गगन खिले तारकोंसे भर गया है। गोचारणसे सायंकाल लौटे राम-श्यामको मैयाने स्नान कराया, वस्त्र बदलवाये, भोजन कराया। खा-पीकर अब ये दोनों लेट गये हैं शय्यापर। मैया पास आ बैठी है। कभी कन्हाई और कभी दाऊ मैयासे किसी बड़े चमकते तारेका नाम पूछ बैठते हैं। छोटे तारोंमें इन्हें अभिरुचि नहीं और हो भी तो इतने ढेरों तारोंका नाम मैया जानती कहाँ है।

निर्मल दिशाएँ, शीतल-मन्द पवन चल रहा है। भूमि खूब सींची गई है और अब भी पूरी सूखी नहीं है। उज्ज्वल कोमल दूधके फेन-जैसे आस्तरणके ऊपर राम-श्याम लेटे हैं। कभी उनमें एक उठ बैठता है और कभी दूसरा। दो क्षण किसी तारेको देख-दिखाकर या तो वे स्वयं लेट जाते हैं या मैया आग्रहपूर्वक लिटा देती है। मैया शय्यासे नीचे बैठी है सटकर। उसके इन चंचल पुत्रोंने शय्याका आस्तरण कुछ सिकोड़ दिया है स्थान-स्थानपर। बार-बार वह आस्तरण ठीक कर दिया करती है एक हाथसे।

'अरे, यह तो रंग-बिरंगा तारा है। लाल, नीला, बैंगनी, पीला। देख, दादा।' कन्हाईने पूर्व और दक्षिणके कोणपर एक तारा देखा है—बड़ा-सा। उस तारेमें कई रंग स्पष्ट दीखते हैं। वह कुछ काँपता-सा भी जान पड़ता है। मोहन उठ बैठा है शय्यापर और आकाशकी ओर मुख करके देख रहा है उसी तारेको।

'रंग-बिरंगा तारा? कहाँ है?' दाऊ भी बैठ गया है।

'वह—वह है न?' श्यामसुन्दरने झुककर बड़े भाईके कण्ठमें दाहिनी भुजा डाल दी है। दाऊने भी अपनी बायीं भुजा कन्हाईके कंधेपर धर दी है। दोनों एक दूसरेकी ओर झुक गये हैं। दोनोंके सिर और कान सट गये हैं। कृष्णचन्द्र बायाँ हाथ फैलाकर ऊपर दिखा रहा है उस तारे को। दोनोंके मुख ऊपर उठे हैं। दोनोंके विशाल लोचन आकाशकी ओर लगे हैं।

'नीला और लाल—बहुत सुन्दर है यह तो।' दाऊने अपना हाथ छोटे भाईके कंधेसे उठा लिया है और प्रसन्न होकर ताली बजाने लगा है!

'मैया! देख तो तू!' कृष्णचन्द्र अपनी खोजका यह तारा मैयाको भी दिखा देना चाहता है।

'हाँ-हाँ! बहुत अच्छा तारा है, पर अब तुम दोनों सो तो रहो। मैं कहानी सुनाती हूँ।' मैयाको किसी तारेके देखनेमें कोई रुचि नहीं! उसके सम्मुख तो ये दो पूर्णचन्द्र बैठे हैं। भला, क्या होता है कोई नन्हा-सा तारा! मैया अब नहीं चाहती कि ये दोनों जागते रहें।

इन्हें अब सो जाना चाहिये।

## ८२-गो-सेवक

'नन्दा! घास खायेगी तू?' किंतु नन्दाको इस समय घासकी चिन्ता कहाँ है। वह तो आधे नेत्र बंद किए आनन्दमग्न हो रही है। उसके चारों थनोंसे दूध की धारा झर रही है।

'कामदा! तू भी आ गयी?' जब नन्दाको पुचाकारा, सहलाया जा रहा है, तब कामदा क्यों नहीं आयेगी। आनेको तो अब कपिला, कृष्ण, चित्रा, गौरी सब आ रही हैं। सब दौड़ी हुंकारती आ रही हैं। उनके हृदयमें यह स्नेह पानेकी क्या कम उत्कण्ठा है।

दाऊ थोड़ी-सी घास ले आया है। दो-दो दूर्वादल वह इस प्रकार बाँट रहा है, जैसे किसी मन्दिरमें उसका पुजारी दर्शनार्थियोंको तुलसीदल बाँट रहा हो। गायोंके हाथ नहीं हैं, यह तो ठीक; पर उनमें दूर्वा लेनेके लिए किस श्रद्धालुसे कम उत्सुकता है।

'हाँ, हाँ, तुझे भी दूँगा; तनिक ठहरो तो।' मुख ऊपर किये एक दूसरीके मध्यमें घुसती आती गायोंकी यह भीड़ बढ़ती ही जा रही है और दाऊकी नन्हीं मुट्ठी। किंतु उसकी मुट्ठी तो अनन्तकी मुट्ठी ठहरी।

'तुझे भी? हाँ।' श्यामसुन्दर सहलानेमें लगा है गायोंको। गायोंके गर्दनके नीचेके भागको और कण्ठकी दोनों बगलोंको वह अपने अरुण कोमल करोंसे सहला रहा है। उसके दोनों हाथ व्यस्त हैं। गायें उत्सुकतासे गर्दन उठाकर मुख आगे कर देती हैं। मोहनके कन्धेपर मुख रख देती हैं धीरे-से। वह कभी एक और कभी दूसरीको सहलानेमें लगा है।

रंग-बिरंगी सहस्र-सहस्र गायोंका यूथ वृन्दावनकी इस हरित भूमिपर पुष्पित सघन वृक्षोंके नीचे एकत्र हो गया है। मण्डलाकार हो गया है यह यूथ। एकके पीछे एक सब मुख उठाये आगे घुसनेके प्रयत्नमें लगी हैं। गोपकुमार पृथक् पड़ गये हैं इससे। वे सब चुपचाप दर्शक बन गये हैं।

गायोंके यूथके मध्यमें घिरे हैं राम-श्याम। दाऊके बायें हाथमें एक मुट्ठी दूर्वा और दाहिने हाथसे वह दो-दो तृण बाँट रहा है। गायें हुंकार कर रही हैं बार-बार। उनके स्तनोंसे दूध झर रहा है। बड़ी उत्सुकतासे दूर्वा मुखमें लेती हैं वे और लिये रहती हैं! उसे खा लेनेका स्मरण ही इस समय उन्हें नहीं है।

नील-पीत-वसन ये गौर श्याम दोनों भाई—अलकोंपर आज नोवनेकी रस्सी लपेट रखी है दोनोंने। बायें कंधे एवं वक्षको घेरकर भी रस्सी लपेट ली है। पटुके कटिमें कस लिये हैं। आज दोनों पूरे गोपाल बने हैं गायोंके समूहसे घिरे।

ये गोसेवक! गायोंसे भी बड़े देवताका पता सृष्टिमें सृष्टिकर्ताको भी नहीं।

## ८३-पूजन

'ऊँ, ऊँ, ऊँ!' आज दाऊ कुछ गुनगुना रहा है। बिना मुख खोले केवल नाकसे स्वरमात्र निकाल रहा है वह और कभी-कभी चुटकी बजा लेता है।

पुष्पित कदम्बकी एक मोटी शाखा कालिन्दीके कुछ ऊँचे तटसे नीचे जलके पास तक झुक आयी है। उस शाखाका अगला भाग फिर फैलकर ऊपर उठ गया

है और फूलोंसे लदी एक मालती लता फैल रही है उस पूरी शाखा पर। मालतीके हरे सघन पत्तों एवं उज्ज्वल ढेर-के-ढेर पुष्प-स्तबकोंके बीच-बीचमें कदम्बके पीताभ पुष्पोंकी छटा अद्‌भुत ही है।

दाऊ कदम्बकी शाखापर बैठा है और कालिन्दीके प्रवाहको देख रहा है। उसके नीचे लटके एक चरणको कलकल करती जलधाराकी लहरियाँ बार-बार स्पर्श कर रही हैं।

श्याम जिधरसे प्रवाह आ रहा है, उधर तनिक दूर तटपर अपनी अंजलिमें खूब बड़ा-सा, सुन्दर-सा खिला लाल कमल लिये झुककर कुछ देख रहा है। कुछ अनुमान कर रहा है। बैठकर अनुमान करके कमलपुष्पको धारापर छोड़ दिया उसने और फिर झुककर, मस्तक बायीं ओर लटकाकर देखने लगा-उसका पुष्प ठीक स्थानपर जाता है या नहीं।

दाऊकी दृष्टि नीचे गयी। बहुत सुन्दर सरोज उसके चरणोंसे आ लगा है। 'यह किसका पूजनोपहार है?' दृष्टि तटके साथ आगे गयी। श्याम अब भी झुका देख रहा है और प्रसन्न हो रहा है। दाऊके नेत्र अद्‌भुत् भावसे भर गये हैं।

'दादा, आऊँ मैं?' कन्हाई एक हाथमें वंशी लिये दौड़ा-दौड़ा आया है। वह दाऊके मुखकी ओर देखनेके बदले उसके चरणोंके पास जलमें स्थिरप्राय अपने पद्मपुष्पको ही झाँक रहा है।

'आ जा!' दाऊ तनिक-सा हिला, किंतु श्याम तो इस अनुमतिसे पहले ही डालपर चढ़कर जाने लगा।

'दादा, यह तेरा पूजन कर रहा है।' बड़े भाईके बायीं ओर उससे सटकर, उसके कंधेपर दाहिना हाथ रखकर कृष्णचन्द्र बैठ गया है। अब भी उसकी दृष्टि नीचे पुष्पपर है।

'ये सुरभित श्वेत सुमन तेरे चरणोंके पास ही घूम रहे हैं।' दाऊ मालती के पुष्प तोड़कर गिराता जा रहा है। कुछ मोहनकी अलकोंमें उलझ गये हैं और कुछ जलमें लटके श्यामसुन्दरके चरणोंके पास नाच-से रहे हैं।

कदम्बकी हरितिमासे भरी श्वेत पुष्पोंके मध्य पीत कुसुमोंसे सजी शाखापर बैठे और गौर-श्याम, और नीचे कालिन्दीके प्रवाहमें लटकते उनके अरुण सरोज-

से चरणोंके पाससे बहुत-से श्वेत सुमनोंके मध्य विकच अरुण कमल। इन दोनोंमें किसने किसका पूजन किया? कालिन्दी दोनोंके श्रीचरणोंका पूजन करके कृतार्थ हो रही है।

## ८४-कर्मयोगी

'कनूँ? अपनी गायें थोड़ी देरमें पानी पीयेंगी। यहाँ कगार उतरने योग्य तो है नहीं। चल, यहाँसे हम चलें।' भद्रको भी यह फूलोंसे लदा हुआ यमुना-तट बहुत रुचा है, किंतु कगार ऊँचा है यहाँ। गायोंको जल तो पिलाना ही पड़ेगा।

तटकी भूमिको गायोंके उतरने योग्य बना लें हम सब। श्यामसुन्दरने बड़े भाईकी ओर देखा कि कहीं दादा मना न कर दे।

'यहाँकी भूमि उतरने योग्य बनेगी?' भद्रका संदेह अकारण नहीं है। क्या हुआ जो कगार रेतीला है और थोड़े श्रमसे गिर पड़ता है। बहुत ऊँचा है कगार। गायोंकी इतनी बड़ी संख्या उतर सके, इसके लिये कुछ हाथ-दो-हाथ पतला मार्ग बनानेसे काम नहीं चल सकता।

'बनेगी! बनेगी क्यों नहीं?' कन्हाईका स्वभाव ही सबसे भिन्न है। इसे असम्भव कुछ जान ही नहीं पड़ता। इससे तो पूछो कि 'आकाशके तारे खेलनेको मिलेंगे?' तो भी कहेगा-'मिलेंगे! मिलेंगे क्यों नहीं।' और जब यह हठपर उतर आता है, इसके लिए कुछ अशक्य नहीं। यह ऐसी युक्तियाँ सोच निकालता है कि कोई नहीं कह सकता कि अपने नन्हें पटुकेके छोरमें तारोंको उलझाकर खींच लेना इसके लिए सचमुच ही असम्भव है।

'दादा! तू मेरा पटुका और वंशी रख!' श्यामने कछनी समेट ली है, वनमाला उतार धरी है और अलकें पीछे कर दी हैं।

'तू बैठ, मैं मार्ग बनाये देता हूँ!' दाऊ उठ खड़ा हुआ है। कृष्णचन्द्र परिश्रम करेगा और वह बैठा रहेगा? उसका छोटा भाई व्यस्त बने, इससे तो वह अकेले ही मार्ग बना दे—यही अच्छा।

'ना, दादा! हम सब मिलकर मार्ग बनायेंगे!' श्यामसुन्दरने बड़े भाईकी ओर विचित्र भङ्गीसे देखा।

'अच्छा चल!' दाऊने भी पटुका और वनमाला उतारकर श्यामके पीतपटके साथ रख दिया।

शतशः गोपकुमार लग गये हैं कगार गिराकर मार्ग बनानेमें। कोई लकुटसे रेत गिराता है, कोई पैरसे और कोई दोनों हाथोंसे। कोई गिरी रेतको सम करता है, कोई नीचे ठेलता है, कोई बड़े डले लुढ़काकर हटाता है।

'तू रोटी खा आ, तब काम करना।' कन्हाई किसीको चिढ़ाता है, किसीकी प्रशंसा करता है, किसीपर रेत की मुट्ठी डालता है, किसीको ठेलकर ढालपर लुढ़का देता है। सब हँसते हैं, परस्पर ठेलमठेल करते हैं, लुढ़कते हैं, पुकारते-चिल्लाते हैं और फिर भी पूरे उत्साहसे काममें लगे हैं।

धूलसे भरी अलकें और शरीर, स्वेदसे आर्द्र पूरा श्रीअङ्ग, कुछ अरुण बना हँसता मुखचन्द्र जुटा है श्यामसुन्द मार्ग बनानेमें। वह बार-बार आग्रह करता है- 'दादा, तू बैठ अब! देख, हमने कितना चौड़ा मार्ग बना दिया।'

'कनूँ, तू अब रहने दे!' दाऊ छोटे भाईको रोकनेका अत्यधिक प्रयास करता है।

जुटे हैं ये दोनों कर्मयोगी और इनका बनाया मार्ग—गायोंके लिये ये मार्ग बना रहे हैं।

विश्वके लिये इनको छोड़कर कोई दूसरा मार्गनिर्माता कहाँसे आयेगा?

## ८५-झगड़ा

'दादा! कनूँ मेरी सब रोटी खा रहा है।' सुबाहु आज बहुत रुष्ट है। क्रोधसे तमतमाया हुआ है इसका मुख। क्रोध करनेकी बात भी है। कोई किसीका छीका चुपचाप उठा ले और उसकी सामग्री उदरस्थ करने लगे, पूछनेपर मुँह बनाकर चिढ़ाये तो छीकेका स्वामी क्रोध नहीं करेगा?

'तू मेरे छीकेको ले ले; जितना जीमें आये, खा ले तू उसमेंसे।' दाऊके छीकेमें इतनी सामग्री रहती है कि उससे एक तो क्या, चार-छः मजेसे छक सकते हैं।

'वह मुझे अँगूठा दिखाता है, मुँह चिढ़ाता है।' केवल भोजनका प्रश्न होता तो इतना बखेड़ा क्या था। सुबाहु इस प्रकार मान नहीं सकता। वह कह रहा है-'मैं लड़ूँगा उससे।'

'अच्छा चल!' दाऊ उठ खड़ा हुआ। सुबाहु अवस्थामें छोटा है। शरीरसे भी दुबला-पतला है। वह अकेला ही लड़ पाता तो दाऊ दादाके पास दौड़ा नहीं आता।

मालतीकी सघन कुंजमें श्यामसुन्दर एक छीका सामने रखे बैठा है। सुबाहुको देखतेही उसने अवशिष्ट रोटी मुखमें भर ली और उठ खड़ा हुआ। फूले हुए दोनों कपोल—दोनों हाथोंके अँगूठे खड़े करके, पूरी भुजा आगे फैलाकर सुबाहुको चिढ़ा रहा है वह। मुख भरा है, किंतु नेत्र मटकानेमें कोई कोर-कसर नहीं।

'कनूँ!' अरे दाऊ दादा भी पीछे हैं, कन्हाईको यह तो पता ही नहीं था। अब उसकी भोली भङ्गी देखने योग्य है। मुख लटकाये किसी प्रकार मुखका ग्रास निगल लेनेका प्रयत्न करते कितना सीधा, कितना सरल दीखता है वह बड़े भाईके सामने!

'दादा! मुझे खूब भूख लगी थी।' मुख खाली करके श्यामसुन्दरने अग्रजके बिना पूछे ही अपनी निर्दोषता बतायी। इसे भूख लग जाय तो यह दो पद भी चल नहीं पाता। अचानक लगती है इसे भूख।

दाऊ अपने छोटे भाईका स्वभाव जानता है। किंतु इसका माखन खट्टा था और रोटी तो सर्वथा फेंक ही देने योग्य थी। ओह! भूख ऐसी थी कि ऐसे पदार्थसे भी काम चलाना पड़ा।

'यह तुझसे लड़ने आया है।' दाऊके मुखपर स्मित आ गया है।

'आ, लड़ ले।' दादा प्रसन्न है तो श्याम झिझकनेवाला कहाँ है। यह लो, कछनी कस ली इसने।

'किंतु तू रोटी खाकर तगड़ा हो गया है और यह भूखसे दुबला हो रहा है।' दाऊ अन्याय नहीं होने देगा। 'तू इसे पहले अपनी छाक खिला।'

'मैं इसकी छाक नहीं खाऊँगा।' सुबाहुकी अस्वीकृति अब कौन सुने? श्याम तो अपना छीका लेने दौड़ गया है।

'दादा! तू इसके हाथ पकड़े रह।' बेचारे सुबाहुके हाथ तो दाऊने पकड़ लिये और श्याम उसे बार-बार गुदगुदाकर भरता जा रहा है उसके मुखमें मोदक, नवनीत, दही-भात। दोनों भाई हँस रहे हैं और भोजनके ग्रास मुखसे भीतर उतारता भी सुबाहु झगड़ रहा है। उसे छोड़ते क्यों नहीं ये दोनों।

## ८६-वर्षामें

'कनूँ, भाग! वर्षा आ रही है।' दाऊने अपने कम्बल की 'घोघी' सिरपर रख ली और दौड़े वे छोटे भाईकी ओर। यह श्याम न आँधी देखता न पानी। कितनी दूर डाल रखी है अपनी कमरिया इसने। श्यामका कम्बल उठाकर उसकी भी घेघी बनाकर उन्होंने मोहनके सिरपर रखा—'सुनता नहीं, कितने जोरका पानी आ रहा है। देख उधर।'

'अरे!' अब दृष्टि गयी कृष्णचन्द्रकी। सचमुच पानी तो बड़े जोरसे आ रहा है। बड़ी भारी हरहराहट है और अब तो आँधी आ भी गई है। वृक्षोंकी शाखाएँ झकोरे लेने लगी हैं, लताएँ झकझोर उठी हैं, गायें पूँछ उठाकर 'हम्मा-हम्मा' करती दौड़ी जा रही हैं भाण्डीर-वटकी ओर। वनपशु भी भाग रहे हैं।

'भाग, दादा! भाग!' अब मोहन बड़े भाईका हाथ पकड़कर भागने लगा है। काले कम्बलकी घोघी ओढ़े ये दोनों भाई दौड़ते जा रहे हैं! गोपकुमार गायोंको भगाये आगे-आगे थोड़ी दूर निकल गये हैं। 'दादा, गुफामें चल।'

यह शरद् ऋतुकी वर्षा-अभी कुछ क्षण पूर्व धूप निकल रही थी। पता नहीं किधरसे मेघका एक खण्ड आ गया और देखते-देखते बड़ा हो गया। 'पड़, पड़, पड़' बड़ी-बड़ी बूँदे गिरने लगी हैं तीव्र वायुके वेगमें तिरछी होकर। अब राम-श्याम भागे जा रहे हैं। उनका पूरा शरीर छिपा है काले कम्बलोंके नीचे। हरी-हरी दूर्वासे आच्छादित जलसे आर्द्र भूमिपर दोनोंके लाल-लाल चरण बड़ी शीघ्रतासे पड़ रहे हैं।

'दादा!' गुफामें पहुँचकर दोनोंने घूमकर बाहरकी ओर देखा। श्यामके मुखपर प्रसन्नता है। एक भाव है-'हम कैसे भाग आये।' अलकोंमें हीरक-कण-से जलके कुछ सीकर उलझ रहे हैं।

'बड़ी शीतल है ?' गुफामें कुछ दूरतक बौछारकी बूँदे आ रही हैं। अपना एक हाथ बढ़ाकर श्यामने हाथपर बूँदें लीं और फिर खींच लिया हाथको।

'तू हाथ क्यों भिगाता है।' दाऊने छोटे भाईका हाथ पकड़कर खींच लिया पूरा और श्यामको अपने पास समेट लिया-'कितनी ठंड है।'

बाहर वृक्षोंकी शाखाएँ झूम रही हैं, लताएँ झुकी पड़ती हैं, बड़ी-बड़ी बूँदे पड़ रही हैं। पृथ्वीपर जल बह चाहता है। दूर भाण्डीर-वटके नीचे गायों एवं गोपकुमारोंका समूह एकत्र हो गया है और यहाँ गुफामें कम्बलोंमें लिपटे, केवल मुख खोले, परस्पर सटे बैठे हैं ये राम-श्याम।

'दादा!' कन्हाई बीच-बीचमें ताली बजाता प्रसन्न होता है किसी वृक्षका हिलना या किसी पशुका भागना देखकर।

'तू हाथ बाहर मत निकाल।' दाऊ समेट लेना चाहता है अपने अनुजको।

'कितनी ठंड है!' पर यह चंचल जब माने।

## ८७-निर्भय

'मैया! आज वनमें मुझे तो लंगूरोंने घेर ही लिया था।' यह श्यामसुन्दर नित्य कोई-न-कोई नवीन समाचार लाता है वनसे। मैया वैसे ही आशङ्कित रहती है और उसपरसे यह समाचार। अब पूरी बात सुननेका धैर्य उसे कहाँ है। वह अपने इस सुकुमार पुत्रका एक-एक अङ्ग बड़ी व्याकुलतासे देख रही है कि कहीं बंदरोंने इसे नोंचा तो नहीं।

'मैया! खूब बड़े-बड़े मोटे-मोटे लंगूर थे।' अब दोनों हाथ फैलाकर, मुख खोलकर, नेत्र फाड़कर कन्हाई बता रहा है-'बड़ी लम्बी-लम्बी थीं उनकी पूँछें। बड़े-बड़े दाँत थे। मुख फाड़कर सब मुझे डरा रहे थे। 'हूप, हूप' करके कूद रहे थे।'

गोचारणसे लौटकर कृष्णचन्द्र मैयाकी गोदमें बैठ गया है आते ही। मैया भूल गई है कि इसके हाथ-पैर धुलाने हैं, मुख धोना है, वस्त्र बदलने हैं, जलपान कराना है। आते ही इसने ऐसा विवरण देना प्रारम्भ किया है कि मैयाका हृदय धक्-धक् करने लगा है। वह बार-बार पूछती है-'उन सबोंने

मुझे कहीं काटा तो नहीं?' पर यह उत्तर देनेके बदले अपनी धुनमें कहता ही जा रहा है। कभी गोदसे उतरकर 'हूप, हूप' करके कूदकर बतलाता है, कभी मुख दिखाता है खोलकर, कभी हाथोंको पंजेके समान बनाता है।

'मैं तो बहुत डर गया था। दादाको बहुत पुकारा मैंने, पर दादा भी नहीं आया। यह तो उलटे ताली बजा-बजाकर हँस रहा था।' बड़े भाईकी ओर श्यामने देखा।

'तुम अपने छोटे भाईको सम्हालते नहीं?' मैयाने उलाहना दिया दाऊको। कैसा है यह दाऊ? यह तो अब भी ताली बजाकर सिर हिला-हिलाकर हँस रहा है। इतनी प्रसन्नता क्यों है इसे? क्या मिल गया है इसको?

'कनूँ, तुझे कोई काट भी सकता है क्या?' दाऊने मैयाके उलाहनेपर ध्यान ही नहीं दिया। उसने तो छोटे भाईका हाथ हँसते-हँसते पकड़कर हिला दिया।

'कहाँ? मुझे तो कोई कभी नहीं काटता!' श्यामसुन्दर अपनी दोनों भुजाएँ और उदर ऐसे देख रहा है, जैसे अभी ढूँढ रहा है कि किसीने कभी उसे काटा भी है क्या। 'मैया, मुझे कोई नहीं काटता! बताऊँ?'

'अच्छा रहने दे तू!' गोदसे उठनेको उद्यत पुत्रको मैयाने अङ्कमें समेट लिया। अब यह पता नहीं क्या बतायेगा। गायके, कुत्तेके, बिल्लीके-किसीके मुखमें हाथ डाल देना साधारण बात है इसके लिये।

वे लंगूर कैसे भागे, यह जाननेकी बहुत उत्सुकता हो तो अब आप किसी लंगूरसे जाकर पूछिये। मैयाने तो अपने लालको अङ्कमें दबा रखा है। उसे कुछ जानना नहीं। उसके पास यह दाऊ हँसता खड़ा है। कोई लंगूर उसके पास आनेका साहस नहीं कर सकता इस समय। उसकी गोदमें उसका लाल पूरा निर्भय है।

## ८८- उत्सव

'माँ! आज उत्सव है न?' गो-चारणसे लौटे तो श्यामसुन्दरको देर हो चुकी। वह स्नान कर चुका। मैयाने उसे थोड़ा-सा पुष्पोंसे सजा दिया है। अब घर आये सखाओंसे पता नहीं क्या बातचीत कर आया है कि माता रोहिणीकी गोदमें सहसा आ बैठा है और उनके कण्ठमें दोनों भुजाएँ डालकर बड़े भावसे पूछ रहा है।

'अनन्त-चतुर्दशीका उत्सव तो दिनमें होता है, बेटा! ब्रजराजने बड़ी श्रद्धासे भगवान्‌का पूजन कर लिया।' माँकी गोदमें कृष्ण जब इस प्रकार आ बैठता है, वे वात्सल्यमें बेसुध-सी हो जाती हैं। झरने लगता है उनके वक्षसे अमृत।

'नहीं माँ! उत्सव इसी समय है। तू बहुत-से पूए, खीर, हलुवा बना ले।' श्यामसुन्दर कोई नवीन योजना लाया है।

'किसका उत्सव है?' माँको तो कोई उत्सव स्मरण नहीं आता। 'दाऊ दादाका!' कन्हाईको जैसे अपना दाऊ दादा ही सदा दीखता है।

'क्या है दाऊका आज?' माँको हँसी आ गई।

'उत्सव है।' श्याम नहीं जानता कि उत्सवके लिए कुछ और भी होना चाहिये।

'अच्छा लाल! तू जब कहे, तभी उत्सव!' भला माँको क्या आपत्ति कि उनका कृष्ण यदा-कदा उत्सवके बिना भी उत्सवकी धूम कर ले-उन्होंने पूछा-

'किंतु इस उत्सवमें खायगा कौन? ब्राह्मणोंको निमन्त्रित करना है क्या?'

'मैं खाऊँगा, दाऊ खायगा, सुबल खायगा, भद्र खायगा-सब खायँगे।' मोहनके सब सखाओंका उत्सव है यह। 'अपना मधुमङ्गल ब्राह्मण है न?'

'अच्छा, तो थोड़ी देरमें तुम सब आ जाओ। माँ हँसकर उठ गयी तैयारी करने। किसीको निमन्त्रण नहीं देना है, नित्यके ही देवता आज भी भोग लगायेंगे।'

'यह क्या हो रहा है?' मैयाने चौंककर माता रोहिणीसे पूछा।

'कृष्ण कहता है उसके बड़े भाईका उत्सव है आज।' माँ हँस रही हैं और बड़ी तत्परतासे पकवान बनानेमें लगी हैं।

'रातको यह धूमधाम?' बाबा भी एक बार चौंके, पर वे कहते हैं-'कृष्ण ठीक ही तो कहता है। आज अनन्त-चतुर्दशीको रात्रि-जागरण करके भगवान् नारायणका कीर्तन करना चाहिये था हम सबको। हम यह बात भूल गये थे।' अब वे गोपोंको एकत्र करके गोष्ठमें रात्रि-संकीर्तनकी व्यवस्थामें लग गये हैं। अनन्त-चतुर्दशी और दाऊके उत्सवका समन्वय वे क्यों ढूँढ़े।

उत्सव दाऊ दादाका है, नन्हें गोल-मटोल काले-काले गुमसुम शालग्रामजीका पूजन भी इसमें हो जाय तो श्यामसुन्दरको आपत्ति नहीं, पर वह अपना उत्सव पृथक् करेगा। उसने बड़े भाईसे कहा-'दादा! तू शंख बजा, मैं शृङ्ग बजाऊँगा; भद्र भेरी पीटेगा, सुबल ढोल। ऋषभ...सब कुछ-न-कुछ बजायेंगे, कुछ न हो तो ताली ही। गायें, वृषभ, बछड़े-सब खोल दिये हैं इस समय बालकोंने। अन्तत: वे भी उत्सव मना लेंगे।

वर्षाका धुला मेघहीन गगन, उज्ज्वल चन्द्रिका-इस चतुर्दशीकी चन्द्रिकाके सामने शरद्की पूर्ण चन्द्रिका भीं झूठी हो गयी है। फुदक रहे हैं चारों और बछड़े; कूद रही हैं, नाच रही हैं गायें; हुँकार रहे हैं वृषभ। भद्रकी भेरी, सुबलका ढोल, किसीका मृदङ्ग, किसीकी तुरही और बहुतोंका करताल या किसीका बर्तनको ही बजानेका शब्द। गूँज रही हैं दिशाएँ और इस महाशब्दमें सबसे ऊपर गूँज रहा है श्यामके शृङ्ग और दाऊके शंखका महानाद। आज उत्सव है-नवीन उत्सव है और इस उत्सवमें गायों, बछड़ों, वृषभों, गोपकुमारोंसे घिरे राम-श्याम होड़-सी लगाकर शंख और शृङ्ग बजा रहे हैं। अब ब्रजराजने गोपोंके साथ जो संकीर्तन आरम्भ किया है, उसकी ध्वनि क्या इस ध्वनिमें सुनाई पड़ सकती है?

## ८९-मैं रोऊँगा

'दादा! मैं गुंजा ले जाऊँ?' कृष्णचन्द्र बहुत कम पूछता है कोई बात अपने भाईसे; किंतु आज इसे कुछ दूर जाना है, अकेले जाना है। लौटनेमें देर हुई तो दादा डाँटेगा। बड़े भाईकी ओर कुछ सामने होकर यह आगेको झुका सटकर बैठ गया है।

'चल! मैं साथ चलता हूँ।' दाऊने उठनेका उपक्रम किया।

'मैं अभी आ जाऊँगा। तू यहीं बैठ।' श्यामसुन्दरने कल सायंकाल बड़े सुन्दर पके हुए लाल-लाल गुंजाफल देखे हैं। उस समय तो गायें गोष्ठको लौट पड़ी थीं, किंतु उन गुंजाफलोंकी माला बनाकर बड़े भाईको पहिनानेकी बात तभी आ गयी थी इसके मनमें। अब यदि दाऊ भी साथ जाय तो फिर माला पहिनानेमें आनन्द क्या रहेगा।

'अच्छा, तू सुबल और भद्रको साथ ले जा।' कन्हाई अकेला जाय, यह दाऊको अच्छा नहीं लगता।

'ये मेरे गुंजा-फल ले लेंगे। मैं किसीको साथ नहीं लूँगा।' श्यामने एक बार सखाओंकी ओर मुड़कर देखा। सब बालक थोड़ी दूर खेलमें लगे हैं। कन्हाई भी उनके साथ खेल ही रहा था। सहसा उसे गुंजाकी बात स्मरण हो आयी और दाऊके पास दौड़ आया है वह।

'तू मत जा! मैं तेरे लिए जितने गुंजा कहे, मँगा देता हूँ।' वह स्थान पर्याप्त दूर है, जहाँ जानेकी बात श्याम कहता है। वैसे केवल गुंजा लेकर लौटना हो तो वहाँ जाकर आधी घड़ीमें लौट आया जा सकता है; किंतु इस चपलका क्या ठिकाना। यहाँसे जाकर यह पता नहीं क्या करे और कितनी देरमें लौटे।

'दादा! मैं झटपट आ जाऊँगा। और कहीं भी नहीं जाऊँगा। मैं फिर कभी तुझसे दूर जाने को नहीं कहूँगा।' कितना अनुरोध, कितना अनुनय, कितना स्नेह है इस कनूँके स्वर एवं नेत्रोंमें। अपने हाथसे दाऊका चिबुक पकड़कर पूछ रहा है यह 'तो जाऊँ, दादा?'

'मैयाने क्या कहा है?' सीधे मना करना अब दाऊके लिए शक्य नहीं रहा है। श्याम इस प्रकार पूछे तो 'ना' कैसे कहा जाय।

'तू मुझे नहीं जाने देगा तो मैं रोऊँगा।' मैया तो नित्य बार-बार कहती है कि दाऊको छोड़कर कन्हाई कहीं न जाने पाये; किंतु मैयाकी बात क्यों कहता है दाऊ? श्यामसुन्दरने दोनों हाथोंसे मुख ढक लिया है और दाऊकी गोदमें अपना सिर रख दिया है।

'क्यों रोयेगा तू? रो मत।' दाऊको हँसी आ गयी। वह अपने अनुजकी अलकों पर हाथ फेर रहा है।

'मैं रोऊँगा। नहीं तो, तू जाने दे मुझे। मैं झटपट आ जाऊँगा।' मुख उठाकर कृष्णने फिर अनुरोधपूर्वक पूछा-'जाऊँ, दादा?'

अब दाऊ कैसे रोक दे इसे। इसका रोना कहाँ सहा जाता है दाऊसे। और यह रो पड़ेगा-यह बात तो झूठी नहीं है।

# ९०-विवशता

'दादा! यह मेरे केश खींचकर भाग आया है।' श्रीदाम का सहज पाटल-सा मुख क्रोधसे और लाल हो गया है। वह वेगपूर्वक दौड़ा आया है। कन्हाईको वह मार्गमें पकड़ नहीं पाया और अब दाऊके पास तो अभियोग ही उपस्थित किया जा सकता है।

'क्यों कनूँ?' दाऊने दाहिना हाथ पीछे करके छोटे भाईका हाथ पकड़ा और सामने ले आनेके लिए खींचा सहज-भावसे; किंतु कन्हाई सामने नहीं आना चाहता। वह पीठसे चिपककर खड़ा है।

'मैं इसके केश क्यों खींचूँगा? इसने मेरा पुष्प अपने केशोंमें लगाया क्यों?' श्याम इतना भोला है कि इसे ठीक झूठ भी नहीं बोलना आता है।

'दाम! अब जाने दे इसे तू। मुझसे तो यह छोटा ही है।' दाऊने छोटे भाईका हाथ छोड़ दिया और श्रीदामको मनानेकी चेष्टामें लगा।

'यह छोटा है मुझसे।' कृष्णचन्द्र यह कैसे सह ले कि वह श्रीदामसे छोटा है।

'दादा! देखो, यह अब भी मुझे चिढ़ा रहा है। तुम इसे मना कर दो।' श्रीदाम क्या करे। यह कनूँ अपने बड़े भाईके पाससे हटे तो समझा जा सकता है वह इसे; किंतु यहाँ दाऊके पास तो झगड़ा किया नहीं जा सकता।

'तू इसे यहीं रहने दे, और सखाओं में जाकर खेल। यह है ही ऊधमी। अब इसके साथ मत खेलना।' दाऊ श्रीदामको भी असंतुष्ट तो करना नहीं चाहता और उसका यह अनुज, बड़ा नटखट है यह।

'तू भाग जा। आँख बंद कर ले तू।' स्वर्णगौर नीलवसनधारी अपने बड़े भाईकी पीठसे चिपककर कदम्बके नीचे खड़ा यह पीताम्बरधारी मयूरमुकुटी नटखट। यह हँस रहा है, मुख बना रहा है, दाँत दिखा रहा है, नेत्र मटका रहा है और अँगूठा दिखा रहा है। क्या भय है इस समय इसे। अग्रजके आश्रयमें खड़े इसका भला कोई क्या बिगाड़ लेगा।

सामने क्रोधमें भरा श्रीदामा। दाऊ कहता है कि वह अब इस श्यामसे न बोले, न खेले इसके साथ; किंतु यह कैसे हो। इसका साथ क्या छोड़ा जा सकता है? छूट सकता है।

# ९१-दधिदान

'अरी, कहाँ जा रही हो सब?' दाऊने सहज भावे पुकार लिया-'मुझे दही खिलाओगी?'

इस नील-वसनधरी, एक कुण्डल पहननेवालेसे किसीको कोई आशंका नहीं। यह कहाँ अपने छोटे भाईकी भाँति ऊधमी है कि किसीको छेड़ेगा या तंग करेगा। यह तो सबकी सहायता ही करना जानता है अथवा चुपचाप बैठा रहेगा।

रंग-बिरंगी चुनरीमें सजी वृषभानुपुरकी बालिकायें छोटी-छोटी दहेंडियाँ सिरपर धरे निकली थीं। इन्हें दही बेचनेकी आवश्यकता है? लेकिन किया क्या जाय? दिनभर घरमें सब मन मारे बैठी रहेंगी, इससे वनमें घूम आवें तो अच्छा, यह समझकर माता-पिताने अनुमति दे दी है।

वनमें-जी हाँ, वनमें वृक्ष-लतायें, मयूर-मृग आदि तो हैं ही। ये सब दही खरीदेंगे? लेकिन वनमें ही तो व्रजराजकुमार सखाओंके साथ बछड़े चराता है, जिसको देखे बिना भवन काट खानेको दौड़ता लगता है, तब ये वनमें न आवें तो जायँ कहाँ।

आज दाऊ साँकरी खोहसे आगे आकर अकेला बैठा था कदम्बके नीचे शिलापर। लड़कियोंको दहेंड़ियाँ लिये आते देख सहज भावसे बोल उठा था। सच तो यह है कि बड़े भाईको यहाँ अकेले देखकर लड़कियाँ कुछ हतोत्साह हो गयी थीं। बड़ा भाई समीप न हो तो छोटा ऊधम अधिक भी कर सकता है और सर्वथा न करे, यह भी सम्भव है। कहीं आजकी यात्रा नीरस ही न रह जाय? बालिकाओंकी आशंकाने ही मानो दाऊको द्रवित किया हो।

दाऊके शब्द कानमें पड़े और सबकी सब खड़ी हो गयी! सबके मुख खिल गये। सब सिमटकर समीप आ गयीं और संकोच, आदर, श्रद्धा-पता नहीं क्या-क्या आया सबके अंतरमें। दाऊके समीप सबने दहेंड़ियाँ धर दीं। कोई एक शब्द नहीं बोली किंतु नेत्र सबके आनन्द-विभोर।

'अरी नहीं, मैं यों ही कह रहा था। तुम सब ले जाओ!' दाऊने बालिकाओंकी सरलता देखी और शान्त बैठा रहा, किसी एक भी दहेंडीकी ओर दृष्टि नहीं डाली उसने।

'तुम थोड़ा भी नहीं खाओगे?' बड़ी कठिनाईसे एक बालिका ने कातर कण्ठसे कहा। सबके नेत्र भर आये हैं। सबके हृदय हाहाकार करने लगे हैं-हाय! आज वनका आना व्यर्थ हो गया। यदि बड़ा भाई भोग नहीं लगाता तो उससे त्यक्त दहीकी ओर छोटा आँख उठाकर भी नहीं देखेगा।

'अच्छा, यहाँ थोड़ा-सा डाल दो।' दाऊको स्वरकी कातरता स्पर्श कर गयी। झुककर फूँक मारकर सम्मुखकी शिला स्वच्छ कर दी इसने।

'तुम इन्हींमेंसे- खा लो।' बालिकायें प्रसन्न हो गयीं। कहा एकने सानुरोध, किंतु सबने अपनी-अपनी दहेंड़ियाँ और सामने खिसकायीं।

दाऊ इतनी सारी दहेंड़ियोंका दही कैसे खायेगा? लेकिन किसे निराश कर दे यह? सबमें ही इसे अँगुली डुबानी है। कम-से-कम चखना तो सबको है।

बालिकायें जब दाऊ दही खाकर बैठ गया, अँगुली पोंछकर, तब दहेंड़ियाँ उठाकर चलीं। सब परस्पर एक दूसरीकी ओर साभिप्राय देखकर मुस्करा पड़ीं। सब सिमटकर चलने लगीं।

गौर-श्याम पर्वत ऐसे नीचे आकर मिल गये हैं कि मध्यसे एक साथ एक ही व्यक्ति निकल सकता है। पर्वतोंकी ढालपर दोनों और सहस्रों बालक बैठे हैं और सम्मुख मार्ग रोके मयूर मुकुटी वनमाली, घनश्याम कटिमें पटका लपेटे, दोनों पैर फैलाकर, कटिपर दोनों कर धरे खड़ा है मार्ग रोके। वह कह रहा है-'तुम सब मेरे वनसे प्रतिदिन छिपकर दही बेचने निकल जाती हो। आज मेरा कर देकर जाना पड़ेगा।'

'वन कबसे तुम्हारा हो गया?' एकने तनिक धृष्टतापूर्वक कहा-'बड़े भाईने सबकी सब दहेंड़ियाँ जूठी कर दीं और अब ये कर लेने आ गये हैं।'

'सब दही मेरा है। मेरे दादाका प्रसाद है।' कन्हाई ताली बजाकर प्रसन्न होकर बोला-'मैं दूँगा उसे मेरे दादाका प्रसाद मिलेगा।'

अब इस तर्कको आप अस्वीकार कैसे कर सकते है? अग्रजका प्रसाद अनुजका स्वत्व नहीं है, यह कोई कैसे कहेगा? लड़कियाँ दही नहीं देंगी तो कन्हाई अपना स्वत्व छीनेगा ही। इस छीनाझपटीमें दहेंड़ियाँ फूट जायँ, हार-आभूषण टूट जायें, वस्त्र फट जायँ तो कोई क्या करे।

लड़कियाँ लौटेंगी तो घर बड़ोंको बतलानेकी बहुत बातें उनके पास हैं। मार्गमें कपि हैं, रीछ हैं और वे दही देखकर झपट पड़ते हैं। भोली बालिकायें डरकर भागेंगी नहीं? गिरनेसे दहेंड़ियाँ फूट जाती हैं। भागनेमें लताओंसे उलझकर वस्त्र फट जाते हैं, आभूषण टूट जाते हैं, कहीं शरीरमें खरोंच भी आ जाती है।

बरसानेमें तो सभीके माता-पिता आशीर्वाद देते हैं श्रीब्रजराजकुमारको। नन्द नन्दन बहुत सदय है। वह प्राय बालिकाओंकी चीख सुनकर दौड़ आता है और रीछ, कपियोंको भगा देता है। इन्हें उठाता है, इनके वस्त्र-आभरण कटीली लताओंसे सुलझा देता है।

## १२-वृक्षपर

'कनूँ!' दाऊको अपना छोटा भाई दो पल भी न दीखे तो वह तुरन्त पता लगाना चाहता है कि वह कहाँ है, क्या कर रहा है, आस-पास है भी या नहीं।

'कू!' श्यामसुन्दर कोकिलाके स्वरमें कूककर उत्तर दे रहा है अपने अग्रजकी पुकारका।

'अरे, कहाँ छिपा कूक रहा है तू?' अब दाऊ ऊपर वृक्षोंकी ओर मुख उठाकर देखने लगा है।

'खाँ, खाँ खाँ' यह नटखट कन्हाई रुष्ट बंदरकी भाँति बोल रहा है। 'म्याउँ' यह दूसरा स्वर निकाला उसने और अब तो क्रम चल पड़ा। कभी मयूरकी 'केका' में बोलता है, कभी कुत्तेकी भाँति 'भों-भों' करता है और कभी बछड़ेकी भाषाका अनुसरण करता है।

'तू इतने ऊपर चढ़ा है?' दाऊ आकर ठीक उस शाखाके नीचे खड़ा हो गया है। ऊपर उठा है उसका मुख। अपने छोटे भाईको एकटक देख रहा है वह।

एक खूब सघन भली प्रकार फूले हुए कदम्बकी मोटी शाखा पर श्यामसुन्दर पेटके बल लेटा है। दोनों हाथोंसे शाखा पकड़ रखी है उसने। दोनों चरण कभी शाखाके दोनों ओर फैलाकर हिलाता है और कभी पीठकी ओर उठाकर नचाता

ै। नीचे खड़े अपने बड़े भाईकी ओर देख-देखकर हँसता जा रहा है और अनेक प्रकारके पशुओं, पक्षियोंकी बोली बोलता जा रहा है।

'तू नीचे आ।' दाऊने अपना दहिना हाथ उठाकर उँगलियाँ हिलाते हुए बुलाया।

'आऊँ दादा?' यह लो, उचककर शीघ्रतासे डालपर बैठ गया कृष्णचन्द्र। दोनों हाथ डालपर टिके हैं और दोनों चरण एक ही ओर लटक रहे हैं। नीचे मुख करके वह ऐसे पूछ रहा है कि यदि बड़ा भाई उसे गोदमें झेल लेनेको प्रस्तुत हो तो कूद पड़ना चाहता है यहीं से।

'अरे, कूद मत। उतरकर आ।' बड़ी शीघ्रतासे दाऊने दोनों हाथ ऊपर करके रोका।

'अभी आया मैं।' अब मोहन बंदरकी शीघ्रतासे उतरता आ रहा है।

'धीरे-धीरे उतर। जल्दी मत कर। धीरे उतर।' दाऊकी पुकार कभी सुनता है यह चपल। यह तो केवल बीच-बीचमें मुख घुमाकर हँसते हुए देख लेता है बड़े भाईको और उतरता आ रहा है—उतरता आ रहा है। शीघ्रतासे उतरकर समीप आनेका इसका सदाका स्वभाव...।

## ९३-तितली

'दादा! देख, कितनी सुन्दर तितली है।' सचमुच पाटलके पुष्पपर खूब बड़ी-सी रंग-बिरंगे पंखोंवाली बहुत सुन्दर तितली बैठी है। श्यामसुन्दर दो क्षण देखता रहा स्थिरतासे उसे और फिर दबे पैर धीरे-धीरे उसकी ओर बढ़ने लगा।

'देख, यह तो मेरी उँगलीपर बैठ गयी है।' मोहनने हाथ तो बढ़ाया था तितलीको पकड़नेके लिये, किंतु तितली स्वयं उड़कर उसके दाहिने हाथकी अनामिकाके अग्रभागपर आ बैठी। इतना सुरंग, इतना सुरभित पुष्प उसे बैठनेको कहाँ मिलेगा।

'दादा! भगा दे तू इसे।' कृष्णचन्द्र पहिले तो प्रसन्न हो गया। तितलीको देखता रहा वह थोड़े क्षण। फिर उसने हाथ धीरे-धीरे हटाया और बड़े भाईके पास आया। अपने हाथपर बैठी तितली दाऊको दिखायी उसने। किंतु यह तितली तो अपने पंख एकमें चिपकाकर उसकी उँगलीपर अड्डा ही बना बैठी है। कभी-

कभी एक टाँग हिला देती है और बस। न हाथ हिलानेसे उड़ती, न उँगली हिलानेसे। भला, श्यामसुन्दर इसे कबतक अपनी उँगलीपर बैठाये रहे।

'कहाँ गयी भागकर वह!' दूसरे हाथसे उड़ानेका प्रयत्न करनेपर तितली उड़ गयी। अब कन्हाई इधर-उधर मुख घुमाकर उसे देख लेना चाहता है।

'गयी कहाँ, यह क्या तेरी अलकोंपर बैठी है।' सुबल हँस रहा है।

'दादा! भगा दे तू इसे। यह कोई बात है कि हाथसे उड़कर यह सिरपर डेरा जमा ले।'

'दादा! दादा!' श्यामसुन्दर ताली बजाकर नाचने लगा है। दाऊ उसकी अलकोंपरसे तितलीको उड़ाने लगा तो वह दाऊकी उँगलीपर ही बैठ गयी। बड़े भाईके हाथपर उसे बैठी देख मोहन बहुत प्रसनन हुआ है।

'रह, इसे मैं भगाता हूँ।' दाऊने हाथसे उड़ाया तो वह उसकी अलकोंपर जा बैठी। भला, कन्हाई किसीको अपने बड़े भाईके केशोंपर बैठे रहने दे सकता है। लेकिन तितली भी कम चतुर नहीं है। उसे चार स्थान मिल गये हैं! जो केशोंपरसे उसे हटानेको हाथ बढ़ाता है, उसकी उँगलीपर बैठ जाती है और वहाँसे हटानेपर अलकोंपर। राम और श्याम उसे बार-बार हटा रहे हैं और वह भी एककी उँगली या अलकपर बैठती है और कभी दूसरेकी उँगली या अलकपर।

'रह, तुझे पकड़ूँगा मैं।' और इससे अधिक अच्छी बात दूसरी क्या होगी कि यह नीलसुन्दर अपनी लाल सुकुमार उँगलियोंसे किसीको पकड़ ले।

## ९४-काली नहीं, सफेद

'कनूँ! दामकी कृष्ण बछिया ब्यायी है।' भद्रने बड़े उत्साहसे दौड़ते हुए आकर समाचार दिया।

'बछिया तो मेरी है।' श्यामसुन्दर दौड़ा आया और दौड़ आये सब गोपकुमार। सब चारों ओरसे घेरकर खड़े हैं और बड़े स्नेहसे, बड़े कुतूहलसे उस गायको देख रहे हैं। वह अभी अपनी नवजात बछियाको चाटनेमें लगी है। कन्हाई सीधे पहुँच गया है बछियाके पास और उसे गोदमें उठा लेना चाहता है।

'बछिया मेरी है, तू उसे अभी छेड़ मत।' श्रीदाम गायको कुछ खिलानेके प्रयत्नमें व्यस्त हैं। वह बाँसकी पत्तियाँ तोड़ लाया है किंतु यह कृष्ण बड़ा झगड़ालू है। अभीसे यदि इसने बछियाको अपना लिया तो सदा लड़ता रहेगा इसके निमित्त।

'बछिया मेरी है! चल, दादासे पूछ ले।' श्यामसुन्दर बछियाको छोड़कर श्रीदामकी ओर घूमकर खड़ा हो गया है। वह स्वत्वका निर्णय पहले कर लेना चाहता है और सब विवादोंका परम निर्णायक तो उसका दाऊ दादा ही है न?

'चल!' श्रीदाम भी झगड़ा समाप्त कर देना चाहता है। दाऊ कभी निर्णयमें पक्षपात नहीं करेगा।

'दादा! मेरे वनमें गैयाने बछिया दी तो वह मेरी हो गयी न?' बड़े रोबसे कन्हाई चलता आया है। मौलिश्रीके नीचे अपनी मौजमें दाऊ इस समय अकेला बैठा है। श्यामने आकर उसका दहिना हाथ पकड़ लिया और देखा श्रीदामकी ओर। श्रीदामको कुछ कहनेकी आवश्यकता जान ही नहीं पड़ती।

'बछिया तो उस कृष्णकी है।' दाऊ हँस पड़ा और श्रीदाम प्रसन्न हो गया।

'हाँ, उसकी तो है, पर दामकी नहीं है। मेरी है यह।' कृष्णचन्द्र ऐसे झटपट माननेवाला कहाँ है!

'हाँ लाल, वह तेरी ही है। गैया भी तेरी और बछिया भी तेरी है। मैं तेरे गोष्ठमें अभी पहुँचाये देता हूँ उसे। तू दूध पियेगा न इस गैयाका?' अरे, वनमें ये श्रीवृषभानु बाबा गोपोंके साथ कैसे आ गये? गैयाके ब्यानेका समाचार पाकर तो नहीं आये? सब-के-सब बालक संकोचसे चुप हो रहे।'

'बाबा! मैं काली बछिया नहीं लूँगा। मैं सफेद बछिया लूँगा। तुम इसे दामको दे दो।' बाबाके साथ सब आये गायके पास। श्यामसुन्दरने फिर देखा बछियाको। उसका मत सहसा बदल गया है। बड़े भोलेपनसे, बड़े प्रेमसे दोनों हाथोंसे बाबा का हाथ पकड़कर वह अपनी बात कह रहा है।

'लाल! अभी तू इसीको ले ले। कपिलाको बछिया देने दे तो तुझे सफेद बछिया भी दूँगा।' बाबा आनन्दसे पुलकित हो रहे हैं।

'नहीं, मैं काली बछिया नहीं लूँगा।' अब श्यामसुन्दरने बड़े भाईका हाथ पकड़ लिया है-'दादा! हम सफेद बछिया लेंगे न?'

'बाबा! कपिला कब बछिया देगी? तुम उसे कल बछिया देनेको कह दो।' अब बाबा क्या कह दें किससे और क्या कहें इस भोले नीलसुन्दरसे। उनके कण्ठसे तो इस समय चाहनेपर भी शब्द नहीं निकल पाता और अपने अग्रजका हाथ पकड़े यह कनूँ कहता जा रहा है ... मैं काली बछिया नहीं लूँगा, सफेद लूँगा।

## ९५-मान

'कनूँ! श्यामसुन्दर!' किंतु अब कहाँ बोलनेवाला है श्यामसुन्दर! इतनी देरसे कन्हाई अकेला कुंजमें बैठा है और कोई उसके पास नहीं आया। किसीने खोज-खबर नहीं ली उसकी। यह दाऊ दादा भी उसका ध्यान नहीं रखता। नहीं बोलेगा अब वह किसीसे। किसीके पास नहीं जायगा। दाऊ पुकारता है तो पुकारे, वह नहीं बोलेगा। मान किये बैठा है आज श्याम। वह रूठ गया है सखाओंसे और अपने अग्रजसे भी।

'कनूँ! क़हाँ है तू?' अरे देख, कितना सुन्दर पक्षी आया है यहाँ। दाऊ पुकार रहा है। उसने देख लिया था कि उसका छोटा भाई सखाओंसे पृथक् एक सघन कुंजमें जा छिपा है। ये बालक कृष्णको थका देते हैं। थोड़ी देर वह अकेला विश्राम करना चाहता है तो अच्छा ही है। उसके एकान्तमें बाधा नहीं देनी चाहिये। किंतु अब तो देर हो गयी। अब उसे बाहर आना चाहिए। इस सुन्दर पक्षीको देखकर प्रसन्न होगा वह।

'सुन्दर पक्षी आया है।' श्यामका जी चाहता है कि उठकर दौड़ चले उसे देखने; किंतु नहीं, वह रूठा बैठा है। दाऊके पास नहीं जाना है उसे। वह अकेला ही उस पक्षीको देखता रहे। जब वह श्यामके पास नहीं आता तो श्याम ही क्यों उसका पक्षी देखने जाय।

'तू सो गया क्या?' दाऊ आ रहा है कुँजकी ओर। अब श्याम सचमुच लेट गया और नेत्र बंद कर लिये इसने।

'कनूँ!' कहीं सोया और जागता व्यक्ति छिपता है। दाऊ पास आकर बैठ गया। छोटे भाईकी पीठपर धीरेसे हाथ रखा उसने।

'तू मुझे मत छू। जा, तू अपने पक्षीको देख और उसीके साथ खेल।' कृष्णचन्द्रने बड़े भाईका हाथ अपने शरीरसे हटा दिया और कुछ दूर लेटे-लेटे ही खिसक गया।

'तू रूठ गया है? मैंने तो कुछ किया नहीं।' दाऊके अधरोंपर मन्द हास्य आया। वह अपने छोटे भाईके पास खिसक आया। 'तू अबतक क्यों मेरे पास नहीं आया? मैं तुझसे नहीं बोलूँगा।' श्यामने फिर हाथ हटाया और फिर एक ओर हटा। इसने मुख दूसरी ओर कर लिया, जिसमें दाऊ इसके भरे नेत्रोंको देख न ले।

'कनूँ! उठ तो सही तू!' किया क्या जाय। यह दाऊ बलपूर्वक छोटे भाईको अङ्कमें उठा रहा है। श्याम चाहे जितना हाथ-पैर हिलाये, पंरतु इससे छूटने-जितनी शक्ति कहाँ है उसमें और अब इसका मुख अपने सामने कर दिया है दाऊने। 'तू उस पक्षीको देखने चल।'

अब दाऊके मुखकी ओर देखकर कैसे रूठा रहा जा सकता है और फिर वह पक्षी—कहीं उड़ गया वह तो?

## ९६-रीझ

'कनूँ! तू इसे सखा बनायेगा?' आज एक नवीन गोपकुमार आया है। कहीं पासके गाँवका होगा। बेचारा संकुचित हो रहा है। दाऊने अपने छोटे भाईको उसकी ओर आकर्षित कर दिया और इतना ही तो बहुत है।

'हाँ, हाँ! कन्हाई तो सदा उत्सुक रहता है किसीसे भी मित्रता करनेको। कोई भी, कैसा भी—इसे तो बस, मित्र चाहिये। यह झटसे पहुँच गया है उसके पास और उसका हाथ पकड़ लिया है इसने। 'तू मुझसे लड़ेगा तो नहीं? लड़ेगा तो मैं भी लड़ूँगा और भड़केगा तो चिढ़ाऊँगा।' न नाम पूछा इसने और न गाँव, लग गया उसे परिचित बनानेमें।

'श्याम, यह कुछ बलवान् तो दीखता नहीं।' एक सखाने कहा।

'तुम सब मुझे पटक देते हो, मैं इसके साथ मल्लयुद्ध किया करूँगा।' कृष्णचन्द्रको सब अनुकूलता ही दीखती है।

'कहीं यह घमण्डी निकला तो?' एक औरने शङ्का की। 'बड़ा मजा आयेगा इसे चिढ़ानेमें।' कन्हाईको अब कोई त्रुटि मैत्री करनेसे रोक नहीं सकती।

'तू तनिक ठहर तो।' एक बुद्धिमान् सखा समझा रहा है-'हम सब पता लगा लें कि इसमें कोई दोष तो नहीं।' 'क्यों रे तू कहाँ रहता है?'

'तुम सब मुझमें ही क्या कम दोष बताते हो?' श्यामसुन्दर सदा यही समझता है कि जैसे ये बालक और गोपियाँ उसे झूठ-मूठ दोष लगाती हैं, वैसे ही लोग दूसरोंको भी व्यर्थ ही दोष दिया करते हैं। वह किसी नये सखाको तंग नहीं करने देगा। 'तू मेरे साथ नाच। नाचना आता है तुझे?'

उसे नाचना आता हो या न आता हो, कन्हाई तो सिखानेवाला है ही। गोपबालक श्यामसे दो पद आगे हैं। सब घुल-मिल जाना चाहते हैं उसके साथ। यह तो कनूँ को चिढ़ानेके लिये उसकी परीक्षा लेनेकी चर्चा उठायी थी उन्होंने।

'यह मोटा तो खूब है।' बालक हँस रहे हैं।

'मुझे पीठपर ढोयेगा यह।' श्यामको गुण-ही-गुण दीखते हैं उसके।

'दादा! तू इसे छाक खिला।' अब वह कितना भी संकोच करे, न यह मयूरमुकुटी माननेवाला है और न उसका यह दादा ही।

'अच्छा सखा मिला है तुझे।' यह दाऊ विचित्र ही है। इसे अपनोंके गुण-ही-गुण दीखते हैं। किसीको अपनाकर यह उसके दोष देखना जानता ही नहीं और उसका यह अनुज--यहतो दोषोंको भी गुण देखता है। उन दोषोंको भी अपने आनन्दका साधन मानता है। इसकी यह रीझ--किंतु यह तो स्वयं ही रीझ-ही-रीझ है। दोनों भाई दो ओर बैठ गये हैं और अब ये छीकेके पदार्थ--नये सखाका भोजन किये बिना छुटकारा नहीं।

# ९७-दीनबन्धु

'दादा! यह कौन है?' गौ-चारणसे लौटते ही श्यामकी दृष्टि मार्गमें खड़े एक भिक्षुकपर पड़ गयी है और अब गायोंको गोष्ठमें पहुँचाना भूल गया यह।

कोई भिक्षुक—आज इस भाग्यहीनके जन्म-जन्मान्तरके सारे पुण्य एक साथ जग गये हैं। आज यह नन्दगाँव आया है। अभी-अभी ही आया है यहाँ। अभी किसी द्वारपर पुकारतक नहीं सका है। एक अद्‌भुत स्वर कानोंमें पड़ा और मार्गमें मूर्ति-सा खड़ा रह गया। कौन है इस अमृत-ध्वनिका विस्तार करने वाला? और जब वह अधरोंपर मुरली धरे चिरचपल गायोंके पीछे, सखाओंसे घिरा, अग्रजके साथ झूमता-सा आता दिखायी पड़ा—भिक्षुक जैसे भूल गया है कि वह कौन है और कहाँ है।

'मैली फटी कटिमें कछनी, कंधेपर एक चिथड़ा, हाथमें एक टेढ़ी-मेढ़ी लठिया। शरीरकी नस-नस दीख रही है। हड्डी-हड्डी गिनी जा सकती है इसकी। इतना दुर्बल भी मनुष्य होता है? श्याम इसे देखते ही चौंक गया है।'

'तू कौन है?' दाऊ पास आकर हाथ पकड़कर झकझोरकर पूछ रहा है। वह बोलता क्यों नहीं? यह तो रो रहा है, रोता ही जा रहा है।

'किसने मारा है तुझे? तू रो मत। दादा उसे मारेगा।' श्यामसुन्दर अपने पटुकेसे आँसू पोंछ रहा है उसके।

'तेरी मैया कहाँ है?' दाऊको एक विचित्र बात सूझी है। यह अपने घरसे भाग आया होगा। भला, मैया पास होती तो इसके कपड़े इतने मैले और फटे कैसे रहते?

'तेरे बाबाने मारा है?' कन्हाई आँसू पोंछता ही जा रहा है उसके।

'मेरी मैया और बाबा नहीं है। वे भगवान्‌के घर चले गये।' बूढ़ेको इन बालकोंके भोलेपनपर हँसी आ गयी।

'मैया नहीं है और बाबा भी नहीं?' कृष्णचन्द्र आश्यचर्यमें पड़ गया है। 'ओह, कितनी बुरी बात है। बिना मैयाबाबाके बेचारा कैसे रहता होगा।'

'तू हमारे घर चल। भूख लगी है न तुझे?' मैया नहीं तो खिलायेगा कौन? भूखा तो यह होगा ही। दाऊने अपना नीला पटुका उसके कंधे पर डाल दिया है।

'तेरी कछनी फट गयी है। तू मेरी पटुका पहन।' श्यामसुन्दर हठ कर रहा है। 'मेरी मैया तुझे मारेगी नहीं। तू पहन इसे।'

हक्का-बक्का हो रहा है भिक्षुक और ये ब्रजराज आ रहे हैं। ये भिक्षुकसे राम श्यामकी बात मान लेने का अनुरोध कर रहे हैं और ये दोनों भाई उसे हाथ पकड़कर खींचे लिये जा रहे हैं घरकी ओर।

## ९८-जन्मतिथि

'कनूँ, तू कर क्या रहा है?' सब सखा एकत्र हो गये, गायें गोष्ठसे निकलकर द्वारपर हुंकार करने लगीं और अभीतक यह कृष्णचन्द्र चलता क्यों नहीं दीखता? मैयाने तो आज शीघ्र इसे छुट्टी कर दी खिला-पिलाकर, फिर यह इस घरसे उस घरमें दौड़-धूप क्या कर रहा है?

'दादा! आज जन्मतिथि है न।' यहाँ नित्य ही किसी-न-किसीकी जन्मतिथि रहती है। बहुत थोड़े मनहूस दिन एवं अशुभ नक्षत्र हैं, जिनमें किसी सखाकी जन्मतिथि नहीं पड़ती।

'किसकी जन्मतिथि है?' श्यामकी जन्मतिथि तो है ही नहीं और दाऊकी जन्मतिथि भी नहीं। किसी सखाकी जन्मतिथि होनी चाहिये, पर किसकी?

'दादा! किसकी जन्मतिथि है?' इब इस भोलेपनकी कोई सीमा है? स्वयं जन्मतिथि मनानेका उद्योग कर रहा था यह और स्वयं ही पूछ रहा है कि जन्मतिथि किसकी है।

'मुझे तो पता नहीं है' दाऊ हँस पड़ा। 'दाम! तेरी जन्मतिथि नहीं है?' और अब श्रीदामाने अस्वीकारकर दिया तो 'भद्र! तेरी?'

'दादा? बता न किसकी जन्मतिथि है?' यह कैसा दादा है कि कन्हाईको जन्मतिथि नहीं बताता। श्याम जब बड़े सबेरेसे सम्भारमें लगा है, तब किसी-न-किसीकी जन्मतिथि तो होनी चाहिये।

'अरे, तुम सब क्या कर रहे हो?' माता रोहिणी को लगा कि आज बालकोंको कोई असुविधा तो नहीं हो रही है। नित्य तो ये सब गोचारणके लिए वनमें जानेको उतावले रहते हैं और आज खड़े क्यों है?

'माँ! किसकी जन्मतिथि है आज?' दौड़कर कन्हाईने माताका हाथ पकड़ा।

'जन्मतिथि?' मैयाके कानोंमें बात पहुँची और वह चौंक गयी। इतनी बड़ी बात भूल गयी वह? कैसी है उसकी देवरानी कि अपने बच्चेकी जन्मतिथि भी स्मरण नहीं रखती। उमंगसे गोदमें भर लिया मैयाने श्यामसुन्दको-'तेरे छोटे भाई तोककी जन्मतिथि है, लाल?'

'तोककी जन्मतिथि है!' कन्हाई नाचने लगा है। उसने कितनी महत्त्वपूर्ण बात सुझायी है।

'दादा! मैंने तेरे लिये भी बहुत-सी वस्तुएँ एकत्र कर ली हैं।' तोककी जन्मतिथि है। उसे आज उपहार देना है। श्यामसुन्दर ने ढेरों वस्त्र, आभूषण, खिलौने और पता नहीं क्या-क्या एकत्र कर रखे हैं। बड़े सवेरेसे वह इसी आयोजनमें लगा था। अपने बड़े भाईका हाथ पकड़कर वह अपनी एकत्र वस्तुओंकी राशि बड़े उत्साहसे दिखा रहा है-'दादा! हम दोनों मिलकर तोकको यह सब देंगे।'

## ९९-व्रजका राजा

'दादा! तू यहाँ बैठ!' आज श्यामसुन्दर पूरी उमंगमें हैं। वनमें आते ही उसने बड़े भाईके लिये एक ऊँची, समतल चिकनी शिला अपने पटुकेसे झाड़कर स्वच्छ करदी है और ढेरसे पुष्प बिछा दिये हैं उसपर।

'क्या? तूने सजाया है इसे, तू बैठ।' दाऊको अब पता लगा कि इतनी देरसे उसका छोटा भाई इस शिलाको उसके लिये सजानेमें जुटा था।

'बाबाने कह दिया है कि राजा तू है, अब बैठ तू।' कन्हाईने दाऊका हाथ पकड़ा।

कल दिनभर दोनों भाइयोंमें यही विवाद रहा कि ब्रजका राजा कौन है। श्यामसुन्दरका पक्ष था कि राजा दाऊ है और दाऊ कहता था कि राजा कन्हाई है।

यद्यपि गोपकुमार कृष्णचन्द्रके पक्षमें थे, फिर भी दाऊ कहाँ किसीकी बात मानता है। गोचारणसे लौटनेपर घरमें जानेके बदले श्याम सीधे बाबाके पास गया और उनका हाथ पकड़कर पूछने लगा-'बाबा, अपने ब्रजका राजा तो यह दाऊ दादा है न?'

'हाँ, हाँ! तेरा दादा त्तो जन्मसे ही राजा है। हम सबका पूरे ब्रजका यही राजा है।' बाबाने हँसते हुए कहा।

'यह कन्हाई राजा है, बाबा!' दाऊने भी बाबाका हाथ पकड़ा।

निर्णय बदला नहीं। श्यामकी विजय हो चुकी थी। बाबाने स्नेहसे पुचकारते हुए कहा-'राजा तो बड़ा भाई होता है। छोटा भाई तो युवराज होता है। कृष्ण ब्रजका युवराज है।'

कृष्ण तो है ही व्रजका नित्य युवराज; किंतु युवराज क्या होता है, यह समझनेका अवकाश उस समय कृष्णको नहीं था। वह विजयी हो चुका था। उसका दादा व्रजका राजा है। बड़ी उमंगसे मैयासे, माता रोहिणीसे और जो कोई मिला, उससे उसने यह मङ्गल-समाचार दौड़-दौड़कर सुनाया। सबने उसका समर्थन किया, एकने भी तो विरोध नहीं किया।

आज अब कल सायंकालकी अपनी विजयको सार्थक करनेमें श्याम जुट गया है। उसने अपने ब्रजके राजाके लिये शिलापर सिंहासन सजाया है और अब दाऊ क्यों उसपर बैठने-से मना करता है? अब तो उसे बैठना ही पड़ेगा। वह राजा जो है।

राजा बनना सबसे बड़ी उलझन है। दाऊ क्या करे? बाबाके निर्णयको वह टाल भी देता, पर यह कनूँ ऐसा करने कहाँ देता है। पुष्पोंसे सज्जित शिलातलका यह सिंहासन, पुष्पित कदम्बकी झुकी लहराती डालका छत्र—किस चक्रवर्तीका सिंहासन इससे भव्य होगा। इस सिंहासनपर मस्तकपर मयूरपिच्छका मुकुट सजाये यह नीलाम्बरधारी और उसके दाहिनी ओर हाथमें कमलको चवँर बनाये खड़ा श्यामसुन्दर—सहस्रशः पंक्तिबद्ध बालकोंसे पूर्ण यह राजसभा।

अमरावतीके अधीश्वर इस राजसभाके बाहरी द्वारपर ही प्रणिपात कर सकते हैं।

## १००-प्यास

'दादा! मुझे प्यास लगी है।' मैया नित्य प्रात: वनमें चले समय दाऊको बार बार सचेत करती है कि वह अपने छोटे भाईको यमुनाके पास न जाने दे। आज श्यामसुन्दरको प्यास लग गयी है। यहाँ आस-पास कोई झरना भी नहीं दीखता कि वह स्वयं जल पी आये।

'तू जल पी आ!' दाऊके स्वभावका कुछ ठीक नहीं। कभी तो वह छोटी-छोटी बातोंपर भी ध्यान रखेगा और कभी कहीं जमकर बैठेगा तो फिर पूरा बाबाजी बन जायेगा। कन्हाई चाहे तो धूम करे, उधर देखेगा ही नहीं।

'तू चल। नहीं तो मैया मुझसे झगड़ेगी।' ये सखा बड़े वैसे हैं। कोई-न-कोई मैयासे अवश्य कह देगा। ये सब तो झूठे ही दोष लगाया करते हैं; फिर श्याम अकेला जल पीने जाय तो कहेंगे नहीं? वह अकेला नहीं जायगा। बड़े भाईका हाथ पकड़ लिया उसने।

'अच्छा चल।' दाऊ धीरेसे उठा। उसने देख लिया है कि उसके छोटे भाईके पतले-पतले लाल-लाल ओठ प्यासके कारण कुछ सूखेसे जान पड़ते हैं।

'ना, तू पिला दे।' कनूँ भी कम अद्‌भुत नहीं है। कभी तो वह धूम करता घूमेगा और कभी सीधा बन जायगा तो इतना कि दूसरा कोई ढूँढ़े भी न मिले। दाऊने कमलका एक चिकना, कोमल नया पत्ता तोड़कर उसका दोना बना दिया और उसमें जल भरकर कन्हाईको देने लगा; किंतु श्याम अपने हाथमें दोना लेकर जल नहीं पीना चाहता। वह खिसकर दाऊके पास आ गया है। बड़े भाईके हाथसे ही जल पीना है उसे।

कमलका यह नवीन पत्र अभी पूरा हरा नहीं हुआ है। कुछ पीलेपनकी झलक है इसमें। इसके दोनेमें भरा स्वच्छ, शीतल झिलमिल करता जल। दाऊ अपने खिले पद्म से कर में दोना लिये है और यह झुका है श्यामसुन्दर। मयूरपिच्छ दाऊके कण्ठ तथा चिबुकको बार-बार छू लता है। पल्लवसे अधर लगे हैं दोनेमें। एक हाथसे दाऊका एक घुटना पकड़ रखा है इसने और दूसरे बायें हाथमें मुरलिका लिये उसे भूमिपर टिकाये है।

'तेरी प्यास गयी नहीं ?' कितना प्यासा था यह सुकुमार। दो-तीन दोने जल पी चुका! दाऊ बार-बार दोनेको भरता है। लेकिन अब यह नटखट जल कहाँ पी रहा है। इसने तो दोनेसे मुख लगा रखा है और चिबुकके पास जल गिराता जा रहा है।

'और ?' दाऊ हँस रहा है और नेत्र तथा भोंहोंसे 'और'की स्वीकृति देकर नेत्रोंमें ही यह भी हँस रहा है। बार-बार नेत्र ऊपर करके बड़े भाईकी ओर देखता है। घुटने और पीताम्बर भीग रहे हैं। जल धीरे-धीरे गिर रहा है मुखके पास से। भला ऐसी प्यास काहेको बुझेगी। यह अद्‌भुत प्यास ...।

'अब बस!' दाऊने हाथ रोकना चाहा।

'एक और!' श्यामके इस अनुरोधकी जो शोभा है, अद्‌भुत है वह और एक और दोना जल पीकर उसका 'बस!'—कितनी तृप्ति, कितना आनन्द, कितना माधुर्य है इस 'बस' की स्मित-रेखामें।

'आ!' दाऊ अपने पटुकेसे मुख पोंछ रहा है इसका।

## १०१-फल-संचय

'दादा, मैं आम खाऊँगा। देख न, इस वृक्षमें कैसे लाल-लाल आम हैं।' कन्हाई जब बहुत प्रसन्न होता है, तब इस प्रकार आकर बैठकर किसी वस्तुकी माँग करता है। वृक्षपर चढ़कर आम तोड़ लेना इसके लिये बहुत सीधा काम है। संकेत पाते ही कोई सखा ढेरों फल लाकर सामने रख देगा। और यह सब करनेकी आवश्यकता क्या है ? वृक्षके नीचे जाकर यह अपना लाल हाथ फैलाये तो फल स्वतः चू पड़ेगा। किंतु आज तो अग्रजसे लेकर फल खाने हैं इसे।

'आ!' दाऊ सदा कम बोलता है। वह उठ खड़ा हुआ और वृक्षके पास पहुँच गया है।

'तुम सब मेरे आम मत लेना।' कृष्णचन्द्रने अभीसे पटुका फेंटमें कस लिया है। ये सब सखा दौड़ आये हैं वहाँ। ये बड़े चंचल हैं, कन्हाई इन्हें अपने फल नहीं छूने देगा।

'तू रोकता क्यों है ? सबको खा लेने दे।' दाऊ हँसा।

'नहीं दादा! ये सब अच्छे आम ले लेंगे। मेरे लिये छोटे-छोटे खट्टे फल छोड़ देंगे। मैं अपने आप सबको बाँट दूँगा।' कोई गड़बड़ करे, यह ब्रजराजकुमारको कैसे सहन हो? वैसे वे स्वयं सबसे अधिक गड़बड़ कर लेते हैं, यह दूसरी बात।

'अच्छा, तुम सब वृक्षके नीचेसे हट जाओ। दूर हट जाओ।' दाऊ वृक्षपर चढ़नेसे रहा। वह तो तनेको नीचेसे पकड़कर पूरे वृक्षको एक साथ झकझोर देगा।

'कनूँ! अभी नहीं, रह। नीचे मत आ।' दाऊने पीछे मुड़कर देखा। उसका छोटा भाई फल उठानेको उत्सुक हो रहा है। अभी भदाभद फल गिर रहे हैं। उसे नीचे नहीं आना चाहिए।

'कोई मेरे फल छुयेगा तो, हाँ।' श्यामसुन्दर बार-बार लपककर पासके फलोंको उठा लेता है। वह एक छोटी ढेरी बना चुका है। दूसरे सब सखा चुपचाप खड़े हैं दस-पाँचको छोड़कर! किया क्या जाय, तोक तथा उसके समान नन्हें सखाओंको कन्हाई रोकनेकी बात ही कह सकता है। उनसे झगड़ा नहीं किया जा सकता।

'बस, दादा! बस' दोनों हाथोंसे वृक्षको पकड़कर दाऊ हिला रहा है। लाल, पीले, सिन्दूरी रंगके सुन्दर आमोंसे भूमि पट गयी है। फल गिरते ही जा रहे हैं। श्यामसुन्दर अब इन फलोंको एकत्र करनेके लिए उत्सुक है। ये नन्हें सखा मना करनेसे माननेवाले हैं नहीं, अतः शीघ्रता करनी है उसे।

'तू सबको फल एकत्र कर लेने दे। सब तेरी ढेरीपर ही एकत्र करेंगे?' दाऊ वृक्षसे नितम्ब भाग टिकाये खड़ा हो गया है और देख रहा है दौड़ते, झुकते पटुकेमें जल्दी-जल्दी फल समेटकर ढेरीपर एकत्र करते अपने छोटे भाईको।

'नहीं, दादा, ये सब मेरे फल ले लेंगे और फिर मुझसे लड़ेंगे।' कन्हाई उमंगमें है। हँस रहा है बार-बार बड़े भाईकी ओर देखकर कि उसके दादाने कितने फल गिरा दिये हैं! वह स्वयं संचय करेगा सबका। अकेले एकत्र करके बाँटेगा। घिरी आती हैं मुखपर अलकें और लगा है वह एकत्र करनेमें।

## १०२-अभ्यास

'कनूँ, आ!' लाठी चलाने और गदायुद्धका दाऊ जन्मजात परमाचार्य है। दूसरी बात यह कि श्यामसुन्दर दूसरे बालकोंके साथ लाठीका अभ्यास करे, यह इसे स्वीकार नहीं है। कन्हाई बहुत सुकुमार है। दूसरे गोपकुमार उमंगमें आनेपर पूरी सावधानी रख नहीं पाते। कहीं किसीका हाथ चूक गया और...

'आ दादा!' कृष्णचन्द्र पहले ही प्रस्तुत हो गया है। अपनी लठियाँ सम्हाल ली हैं उसने और मैदानकी भूमिपर दोनों हाथों उसका एक सिरा दृढ़तासे पकड़े, दूसरे सिरेको दूर पृथ्वीपर टेके कुछ तिरछे खड़ा है वह तनिक झुका हुआ।

सुविस्तृत भूमि है, वृक्षों एवं लताओंका घेरा है इस मैदानके चारों ओर और मैदानकी भूमि हरित दूर्वासे मंजुल हो रही है। गायें चारों ओर वृक्षोंके मध्य चर रही हैं। गोपकुमार पूरे मैदानकी सीमाको घेरकर मण्डलाकार खड़े हैं इस अभ्यासको देखनेके लिये।

पटुके, वनमाला, शृङ्ग, वस्त्र आदि उतारकर पर्याप्त दूर रख दिये हैं दोनोंने। अलकोंको समेटकर बाँध दिया गया है मस्तकके ऊपर जटा-मुकुटकी भाँति। कछनी कस ली गयी है। मस्तकसे किंचत् ऊँची सुदृढ़ लाठियाँ लिये दोनों एक दूसरेके सामने बीच मैदानमें आ खड़े हुए हैं।

'तू इधर-उधर मत देखना। मेरी लाठीकी ओर भी मत देखना। मेरे नेत्रोंकी ओर बराबर देखता रह और प्रयत्न कर मुझे लाठी लगानेका।' दाऊ अपने छोटे भाईको आदेश दे रहा है।

'मैं तुझे लाठी नहीं मारूँगा।' श्याम अपनी लठिया फेंकने जा रहा है।

'मेरी लाठीपर लाठी मार।' हँसा दाऊ। 'मुझे तेरी लाठी नहीं लगेगी। तू डर मत। चल!'

अब यह तड़ातड़, ये पैंतरे और यह आगे-पीछे उछलना वर्णनमें कैसे आये? अरुण हो उठा है कन्हाईका सुन्दर मुख। नन्हें हीरककण जैसे नीलकमलके दलोंपर बिखेर दिये गये हों—स्वेद-सीकर चमकने लगे हैं।

'तू कहाँ देखता है?' श्याम बीचमें चाहता है सखाओंकी ओर देख लेना। कितनी सुन्दर लाठी चलाता है वह! किंतु दाऊ तत्काल सावधान करता है उसे।

'तू थक गया। रहने दे अब।' कृष्णचन्द्रकी कोमल भुजाएँ कबतक वह श्रम सह सकती हैं।

'मैं थका नहीं हूँ। ले, रोक, दादा! लेकिन यह मानता नहीं। बड़े उत्साहसे उछल रहा है। चल रहा है इसका अभ्यास।

## १०३-दादा कहाँ है?

'दादा! दादा! दादा!' कन्हाई चाहे जैसे खेलमें लगा हो, तनिक-तनिक देरमें अपने बड़े भाईकी ओर अवश्य देख लेगा। दाऊ आस-पास है, यह देखकर वह निर्भय-निश्चिंत हो जाता है। उसका दादा पास है, फिर उसे क्या चिन्ता। किंतु इस बार उसे दादा दीखा नहीं और भूल गया श्याम खेलना। वह इधर-उधर देख रहा है और पुकार रहा है।

'भद्र! दादा कहाँ है?' श्यामसुन्दर ऐसे ढूँढ़ रहा है, जैसे बड़ी भारी भीड़में माता या पितासे पृथक् हुआ बालक व्याकुल होकर—कातर होकर उन्हें इधर-उधर देखता है।

'अभी तो यहीं था।' भद्र कहाँ समझता है कृष्णचन्द्रकी आकुलताको।

'सुबल! तूने देखा है दाऊ दादाको?' पूछनेके साथ मोहन इधर-उधर उचककर देखता जा रहा है।

'वह किसी वृक्षके नीचे या किसी कुंजमें बैठा होगा।' सुबलका उत्तर संतोष दे सकता है कन्हाईको?

'कनूँ! तू डर मत! दाऊ दादाको कोई राक्षस चुरा नहीं ले जायगा।' यह नन्हा तोक कुछ नहीं समझता। दाऊ दादाके पास राक्षस पहुँचा तो वह उसका एक घूसेमें कचूमर निकाल देगा, सो तो ठीक; किंतु है कहाँ दाऊ दादा? कन्हाई उसके बिना अपनेको जो अकेला पाकर व्याकुल है।

'दादा! दादा! कहाँ है तू?' कृष्णचन्द्र वृक्ष पर चढ़ गया है। वह पूरी शक्तिसे पुकार रहा है।

× × × ×

स्वर्णयूथिकाके ढेरों पुष्प सामने रखे दाऊ कुंजमें छिपा बैठा है। वह माला बना रहा है—खूब मोटी-सी बड़ी-सी माला।

'दादा! दादा!' कनूँ पुकार रहा है। उसके स्वरमें बहुत व्यग्रता है। दाऊके हाथ शीघ्रतासे चल रहे हैं। उसे अपनी वह माला पूरी करनी है।

'दादा! दादा!' कन्हाई इधर-उधर ढूँढ़ रहा है। उसका स्वर रुआँसा हो रहा है।

'कनूँ! दाऊने माला पूरी करते-करते पुकारा।'

'दादा! दादा! कहाँ है तू?' श्यामके स्वरमें उल्लास आ गया है। उसके नूपुर बज रहे हैं। वह दौड़-दौड़कर एक-से दूसरी कुंजमें झाँक रहा है।

'दादा!' यह आया कन्हाई। खिल उठे हैं आनन्दसे इसके नेत्र। 'तू यहाँ छिपा है, दादा?'

'कनूँ!' दाऊने उठकर अपनी पीली मोटी माला छोटे भाईके गले में डाल दी। यह श्याम दोनों हाथोंमें मालाको वक्षसे कुछ उठाकर देख रहा है। कितनी सुन्दर है यह माला।

नाच रहा है आनन्दसे यह।

## १०४-फिसलन

'कनूँ! तू मेरे पीछे बैठ!' दाऊ ठीक तो कहता है वहाँसे फिसलनेपर जो आगे होगा, उसीके ऊपर तो पीछेवाला नीचे लुढ़केगा।

'नहीं, दादा! मैं आगे चलूँगा।' कन्हाई पीछे नहीं रहना चाहता। वैसे सदा वह अपने अग्रजके पीछे चलता है, किंतु आज आगे चलनेकी धुन है उसे।

'अच्छा, आ, चल तू।' दाऊ चाहता है कि उसका सुकुमार छोटा भाई पहिले फिसलकर बढ़ जाय। जब वह नीचे उठकर खड़ा हो जाय, तब दूसरे चलें। कोई उसके ऊपर ही न लुढ़क पड़े।

वर्षा हुई है। वृक्ष एवं लताओंके पत्तोंसे बूँदे टपक रही हैं। पृथ्वी अभी भीग रही है और भीग रहा है पुलिन। बड़ी ऊँची तिरछी चिकनी शिला है और उसके नीचे सुकोमल रेत है भीगी हुई। शिला भीगकर और भी चिकनी हो गयी है। उसका दूसरा ऊँचा सिरा एक टीले पर है, जिसपर सरलतासे बालक चढ़ सकते हैं। खूब चौड़ी है शिला। तीन-चार एक साथ उसपर फिसलें तो भी उनके मध्यमें और इधर-उधर बहुत स्थान बच रहेगा। हाँ, ये दस-बारह साथ चल पड़ते हैं, धक्कम-धक्का करना ही तो इन बालकोंका आनन्द है।

गायें चरनेमें लग नहीं पा रहीं हैं। एक तो ये तृप्त हो गयी हैं, दूसरे घास बहुत भीगी है अभी। वे सब खड़ी-खड़ी पागुर कर रही हैं। कुछ बछड़ियाँ कान-पूँछ उठाकर कूद रही हैं इधर-से-उधर।

बालकोंने पटुके, मालाएँ, शृङ्ग, वेत्र, छीके आदि इधर-उधर डालियोंपर, भूमिपर, शिलाओंपर धर दिये हैं। केवल कछनी है कटिमें। बड़े उत्साहसे दौड़कर एक दूसरेको ठेलते हुए टीलेपर चढ़ते हैं और फिसलते हैं शिलापरसे। नीचे एक दूसरेके ऊपर लद्‌बद् गिरते हैं, हंसते हैं खुलकर, रेतमें लोट-पोट होते हैं और फिर हँसते-चिल्लाते टीलेपर दौड़ते चढ़ जाते हैं। अब भला, इनमें आगे-पीछेका क्रम कैसे रह सकता है।

गीली रेतसे सनी कछनी, सर्वाङ्गमें रेत लगी है और अलकोंतकमें भर गई है। दोनों हाथ उठाकर कन्हाई फिसल रहा है शिलासे। बड़ा प्रसन्न है वह। बगलमें सरकते सखाओंको जान-बूझकर हाथसे, देहसे धक्का देता जा रहा है।

'दादा! आ तू।' शिलासे सटकर रेतपर घुटनोंके बल हो गया है श्याम। यह चाहता है कि दाऊ इसकी पीठपरसे लुढ़के।

'तू हट।' दाऊ छोटे भाईको बचाना चाहता है।

'तू आ।' अब इसका आग्रह कैसे टाला जाय। दाऊ फिसलता आया और लुढ़क गया छोटे भाईकी पीठपरसे रेतमें; किंतु यह कनूँ उसे झटसे पकड़कर पकडे-ही-पकड़े लोट-पोट हो गया है और अब हँस रहा है, ताली बजा रहा है अपनी कुशलतापर।

'चल, चल दादा!' बड़े भाईका हाथ पकड़कर यह फिसलने जाना चाहता है बड़े उत्साहसे।

'तुझे चोट तो नहीं लगी?' किंतु दाऊके प्रश्नका उत्तर देनेका अवकाश किसे है।

श्याम उसे हाथ पकड़े लिये जा रहा है फिर ऊपर।

## १०५-अब क्या हो?

'दादा! दादा! देख, मैं कितने अच्छे जामुन ले आया हूँ।' श्यामसुन्दर दौड़ता आ रहा है। अपने पटुकेमें ढेरसे जामुन उसने भर रखे हैं—बिना यह सोचे कि पटुकेमें इन फलोंके काले-काले धब्बे पड़ जायँगे। दोनों हाथोंसे फलोंकी गठरी सम्भाले बड़ी प्रसन्नतासे उमंगमें भरा आ रहा है वह। दूरसे ही अपने अग्रजको पुकारने लगा है।

कनूँ आ रहा है। बड़े उल्लाससे फल लिये आ रहा है। किंतु इस प्रकार दाऊके लिये फल या सुन्दर फूल लेने बहुत दूर-दूर भटका करता है यह सुकुमार। जामुनकी शाखाएँ शीघ्र टूटनेवाली होती हैं और बड़े भाईके लिए उत्तम फल लेने बहुत ऊपरतक चढ़ जाता है यह। भला क्यों इतना हैरान होता है? क्यों इतना थका है? क्यों वृक्षपर चढ़ता है। दाऊ रूठ गया है इससे। वह नहीं लेगा इसके जामुन। उसने मना किया था, कहा था कि दूर मत जा; फिर क्यों नहीं सुना इसने? क्यों भाग गया यह? नहीं देखेगा वह इस समय इसकी ओर।

कनूँ आ रहा है; कितनी उमंगसे पुकार रहा है, किंतु इस प्रकार तो यह वनमें भटकना छोड़ेगा नहीं। कुछ भी हो, मन कुछ कहे, आज दाऊ छोटे भाईकी ओर इस समय नहीं देखेगा।

'दादा! दादा! यह क्या?' दादा दूसरी ओर मुख करके क्यों बैठा है? वह बोलता तो सदा कम है, पर देखता क्यों नहीं? श्यामकी गति मन्द पड़ गयी, उमंग चली गयी। मुख कुछ उतर गया।

'दादा!' दादा तो सम्मुख जानेपर भी नेत्र ऊपर नहीं उठाता। वह तो रूठ गया जान पड़ता है। उसका मुख तो गम्भीर हो गया है। उसके नेत्र भरे-भरेसे दीखते हैं। हाथ ढीले पड़ गये। काले-काले जामुन हरी घासपर बिखर गये।

'तू मेरी बात नहीं मानता, दूर-दूर भटकता है; मैं नहीं बोलूँगा तुझसे।' दाऊने मुख दूसरी ओर कर लिया।

'दादा रूठ गया? वह नहीं बोलेगा? अब क्या हो?' कन्हाईके लिये तो इतने सब सखा होनेपर भी जैसे कोई नहीं रहा। जैसे वह इस पूरे वनमें एकाकी हो गया।

'दादा! मैं अब कहीं नहीं जाऊँगा। कभी तेरी बात नहीं टालूँगा।' स्वरमें अपार अनुनय है और भर आये हैं कमल-लोचन; किंतु दादा तो देखता ही नहीं।

' दादा!' श्यामसुन्दर दोनों हाथोंसे मुख ढककर गिर पड़ा है फट्से बड़े भाईकी गोदमें।

'कनूँ! कनूँ!' ओह, यह कनूँ तो फफक-फफककर रोने लगा है। यह तो हिचकियाँ ले रहा है। व्यग्र, व्यस्त हो उठा है दाऊ। उसका कनूँ रो रहा है, हिचक रहा है। क्या करे वह? अब क्या हो?

## १०६-दयामय

'दादा, इसका पैर दुखता होगा। क्या लगाना है इसके पैरमें?' श्यामसुन्दर एक मृगशावकके पास बैठा है—उसे गोदमें लेकर उसके एक पैरको सहलाते हुए।

नवजात मृगशावक—बेचारा कूदते फाँदते एक लतामें उलझकर गिर गया। मोहनने देखा और दौड़ पड़ा। कहीं गिरा पटुका और कहीं छूटी मुरलिका। मयूरपिच्छ खिसककर बहुत तिरछा हो गया है इसका।

'तू चुपचाप बैठ? मैं तेरा पैर मल देता हूँ।' हिरनका बच्चा झटपट खड़ा हो गया, किंतु उसकी एक अगली टाँग ठीक नहीं पड़ रही है। वह लँगड़ा रहा है। कुछ चोट लगी है उसे। मोहनने दौड़कर उसे पकड़ लिया और बैठाने लगा। मृगशिशु भागता तो भला क्या, वह अपनी चोट भूलकर श्यामसुन्दरको सूँघने लगा है।

'तुम सब इसको तंग मत करो।' और भी गोपकुमार दौड़ आये हैं। कन्हाई नहीं चाहता कि उसके मृगशावकको दूसरा कोई छुए। बालक घेरकर खड़े हो गये हैं उसे और बड़ी सहानुभूतिसे देख रहे हैं उस बच्चेकी ओर। एक-दो उसके लिये दूर्वाङ्कुर भी चुनने लगे हैं, किंतु अभी तृण चरना सीखा कहाँ है उसने।

'अब इसका पैर नहीं दुखता। कुछ लगाना नहीं पड़ेगा इसे। क्यों रे, दुखता है तेरा पैर?' नीलाम्बर फहारते दाऊ आया और अपने छोटे भाईके सामने बैठ गया। प्रेमसे पुचकारा उसने मृगशावक को और उसके मस्तकपर हाथ फेरा।

हिरनके बच्चेने गर्दन लम्बी कर दी है। दाऊकी गोदमें मुख रखकर वह सो जानेकी तैयारी कर रहा है। उसके नेत्र झपकने लगे हैं। कन्हाईने उसके पैरको सहलाया—सहला रहा है; अब कहीं दर्द रह सकता है पैरमें। इस भोले बच्चेको इसकी चिन्ता नहीं कि गोपालकोंकी एक पूरी भीड़ उसे घेरे है। श्यामसुन्दरकी गोदमें सटा है उसका पीठका भाग और दाऊकी गोदमें है सिर उसका। इतना उत्तम स्थान, इतना श्रेष्ठ उपधन—तकिया कहाँ मिल सकता है। सोनेके लिये भूमिपर अपने चारों पैर फैलाकर कड़े करके अँगड़ाई ली उसने और शिथिल-देह हो सोने लगा।

श्याम पुचकारता जा रहा है, हाथ फेरता जा रहा है उसके देहपर। दाऊ उसके मस्तकपर अपने कमल-कर रखे बैठा है। पास खड़ी मृगी अपने बड़े नेत्रोंसे निर्निमेष देख रही है इन दयामय बन्धुओंको। अपने बच्चेके सौभाग्य पर वह क्या सोचती है—आप स्वयं सोच लें।

## १०७-अभिन्न

'दादा! कोई सखा पुकार रहा है।'

'कू!' यह कन्हाई कोकिलके स्वरमें कूककर उत्तर दे रहा है पुकारका। जब छोटा भाई पास है तो बड़ा भाई क्यों बोले।

'दादा! दादा!' गोपालकुमारको संतोष नहीं। वह अभी गिरिराजके नीचे है। लताओंकी ओटसे देख नहीं पाता कि ऊपर दाऊ है या नहीं है। कहीं श्याम उसे छकाता तो नहीं।

'क्या है? कहता क्यों नहीं तू?' कृष्णचन्द्रने अब इस बार स्पष्ट पूछा। भला, ऐसा क्या काम हो सकता है, जिसके लिए श्यामके रहते दाऊको कुछ करना पड़े।

'तू क्यों बीचमें बोलता है? वह तो दाऊको पुकार रहा है।' यह श्रीदाम भी श्यामसुन्दरसे झगड़नेके लिए उधार ही खाये रहता है।

मेरे ही दादाको तो पुकारता है। कन्हाईने इस प्रकार देखा, जैसे उसकी दृष्टि कह रही है-मेरा दादा मुझसे पृथक् है क्या? दादा बोले या मैं बोलूँ, दो बात कहाँ हैं।

'दादा! देख मैं कितना सुन्दर फल लाया हूँ। कनूँ, तू ले अपना फल।' यह तो मण्डलीभद्र आम ले आया है। दाऊके लिए पृथक् और श्यामके लिए पृथक् फल लाया है यह। दाऊके हाथमें लाकर देगा यह; पर कन्हाईको थोड़ी दूरसे झेल लेनेके लिये फल उछाल दिया इसने।

'दादा! यह कनूँका है। तेर लिए तो यह लाया हूँ मैं।' श्यामसुन्दरके बदले दाऊने फल झेल लिया दोनों हाथोंमें, किंतु मण्डलीभद्र तो दाऊके लिए दूसरा फल ले आया है।

'ला!' अब श्याम उद्यत हुआ है दूसरा फल झेलनेको।

'यह दादाका है।'

'तू फेंक तो सही।' दाऊने अपनी अनुमति प्रकट कर दी।

'तू ले लेना दादा।' किंतु जब श्यामसुन्दर झेलना चाहता है, तब दाऊ बीचमें भला क्यों पड़ने लगा।

गिरिराज गोवर्धनकी सबसे ऊँची चोटीपर खड़े हैं ये पाँच-सात गोपकुमार। गायें नीचे बिखरकर चर रही हैं। शेष गोपकुमार पर्वतपर इधर-उधर पुष्प-फल आदि चुननेमें लगे हैं। इन पाँच-सात गोपकुमारोंके आगे एक दूसरेके कंधेपर हाथ धरे, वन्यपुष्पोंसे सजे, गैरिक, रामरज, खडिया से अंगोंको चित्रित किये थे। नील-पीत-वसनधारी अपने एक-एक हाथोंमें आमका एक-एक पका फल लिए एक दूसरेकी ओर देख रहे हैं।

किसका फल किसके हाथमें है? किस हाथका किस मुखमें जायगा? आप सोचते हों तो सोचें, पर फल लानेवाले मण्डलीभद्रको तो कुछ सोचना नहीं। ये दो हैं कहाँ कि इनका भाग कोई पृथक्-पृथक् करेगा।

# १०८-वर्षगाँठ

'लाल! तू बाबाको और माँको प्रणाम कर आ!' आज कृष्णचन्द्रकी वर्षगाँठ है। ब्राह्ममुहूर्त्तमें ही महर्षि शाण्डिल्य ने ब्राह्मणोंके साथ पूजन कराया है। पूरे ब्रजमें आज महामहोत्सव है। आनन्दसे जैसे सब लोग उन्मत्त हो रहे हैं। पूजनके अनन्तर मैयाने अपने कुमारको समस्त गुरुजनोंका नाम ले-लेकर प्रणाम करनेको कहा है। अब सबके पीछे बाबा और माता रोहिणीको भी प्रणाम करना चाहिये उसे।

श्यामसुन्दरकी आजकी शोभा देखने ही योग्य है। मैयाने भरपूर सजाया है आज नीलसुन्दरको। चरणोंमें नूपुर, कटिमें पीताम्बरकी कछनीके ऊपर रत्नमेखला, कण्ठ में हारोंकी लड़ियाँ और घुटनोंतक लटकती वनमाला, कंधेपर पटुका, उँगलियोंमें अँगूठियाँ, कलाइयोंमें कङ्कण, भुजाओंमें रत्नाङ्गद, कर्णोंमें झिलमिल करते रत्नकुण्डल, मस्तकपर रत्नजटित कुलहीके ऊपर फहराता मयूरपिच्छ, भालपर गोरोचन खौरके मध्य महर्षि शाण्डिल्यद्वारा किया कुंकुम तिलक और उसपर चिपके अक्षतके अरुणाभ पाँच दाने, अंजनरंजित दीर्घ दृग- कन्हाई रुनझुन करता एक ओरसे दूसरी ओर दौड़ रहा है। मैया जिसे-जिसे बतलाती है, उसे-उसे दौड़कर पास जाकर प्रणाम करता है और फिर मैयाके पास दौड़ आता है।

बड़ी भीड़ है नन्दभवनमें। गोप, गोपियाँ और गोपकुमार सब अपने-अपने उपहार लिये चले आ रहे हैं।

'मैया! दादाको प्रणाम नहीं करना है क्या?' सबको जब प्रणाम किया गया, तब दादाको ही क्यों नहीं? श्यामसुन्दरने स्वयं स्मरण किया अग्रजको।

'हाँ लाल! अब तू अपने दादाको भी प्रणाम कर आ!' मैयाने उल्लासपूर्वक आदेश दिया।

'दादा! दादा!' किंतु आज दादा है कहाँ? वह इतनी देरसे दीखता क्यों नहीं है?

'पुकारते नहीं बेटा!' प्रणाम पास जाकर करते हैं! मैयाने स्नेहसे समझाया।

'कनूँ!' वह निकला एक कक्षमें से दाऊ। छोटे भाईकी पुकार सुन ली है इसने। वह अपने छोटे भाईको आज उपहार देगा। अपने उपहार ही तो सजा रहा था वह।

आज इस नीलाम्बरधारीकी शोभा भी अतुलनीय है। स्वयं मैयाने ही इसे भी सजाया है। अङ्ग-अङ्गमें रत्नाभरण जगमग कर रहे हैं।

'दादा!' छम-छम करता श्याम आया और घुटनोंके बल बैठकर बड़े भाईके चरणोंपर मस्तक धर दिया इसने।

'गोप, गोपियाँ, गोपकुमार शान्त स्थिर देख रहे हैं। आँगनमें यह अग्रजके पदोंमें प्रणत श्यामसुन्दर! दाऊ झुककर दोनों हाथोंसे पकड़कर छोटे भाईको हृदयसे लगानेके लिए उठ रहा है, पर आज यह श्यामसुन्दर उठता नहीं। यह तो पड़ा ही रहना चाहता है प्रणाम करते।

## १०९-दाऊ और कनूँ

एक ही जीवनके घनतत्वने दो देह धर लिये हैं। उसका एक देह है स्वर्णगौर और दूसरा शरीर है इन्दीवर सुन्दर। दोनोंके शरीरोंके रंग ही दो हैं। एक ही प्राण हैं दोनोंमें। एकके बिना दूसरा रह नहीं सकता।

कौन कहता है कि दोनोंमें भेद नहीं हैं। भेद बहुत है, बहुत है। फिर भी दोनों अभिन्न हैं, एक हैं।

यह दाऊ है—जैसे सारी गम्भीरता इसमें बचपमें ही पैर तोड़कर आ बैठी है। किसमें साहस है जो इसकी तनिक भी उपेक्षा कर दे या इसकी हँसी उड़ा सके। बड़े बूढ़े मुनि भी इसकी ओर सिर झुकाकर ही बैठते हैं।

और यह कनूँ है—सारी चंचलताका यही केन्द्र है। विश्वमें सारा-का-सारा नटखटपन इसीकी चंचल अँगुलियोंके संकेतसे आता है। यह जानता ही नहीं कि शांत कैसे बैठा जाता है। बड़ी-बड़ी उजली दाढ़ीवालोंको भी यह अँगूठा दिखा आता है और इसे चिढ़ानेका जिसका मन न हो, वह तो कोई पुराना खड्डूस ही हो सकता है।

दाऊ और कनूँ—इनमें परस्पर ही क्या कम भेद है। 'दादा! दादा! दादा!' कनूँ प्राय: पुकारता ही रहता है। प्राय: उसके पुकारनेका कोई तात्पर्य नहीं होता। वह तो पुकारनेके लिए ही पुकारता है। उसका दादा उसके पास सटकर बैठा हो तो भी

मजे में जोरसे पुकारता है और दाऊ है कि केवल हँस देता है। श्यामके पुकारनेपर कदाचित् ही वह बोलता है। वह कन्हाईकी ओर देखता है और मुस्कराता है। मुस्कराता है और देखता है।

'कनूँ!' जब कन्हाई देरतक दीख न पड़े, जब संध्याको बनसे गायें लेकर लौटना हो, जब कोई आशङ्काकी बात हो, तबकी बात छोड़ दीजिये। केवल ऐसे ही अवसरोंपर दाऊ अपने छोटे भाईको सचमुच पुकारता है। नहीं तो वह केवल सम्बोधन करता है। कन्हाई कितनी दूर बैठा है या खेलनेमें लगा है, यह कुछ नहीं। दाऊ तो धीरे-से कहेगा-'कनूँ!' जैसे उसका कनूँ उससे सटकर ही बैठा है।

श्याम खेलनेमें लगा हो तो माता रोहिणी पुकारते-पुकारते थक जाती है, वह सुनता ही नहीं। मैया यशोदाकी पुकार उसके कानोंमें ही नहीं आती। उस समय वह किसीका बुलाना नहीं सुनता, किंतु अपने बड़े भाईका सम्बोधन सुननेके लिए कन्हाईके कान बड़े तेज हैं। दाऊ दूर बैठा है-पर्याप्त दूर आँगनमें। कनूँ बाहर गली में खेल रहा है। 'कनूँ!' कब धीरेसे दाऊने यों ही कह लिया, पास बैठी उसे पुचकारती मैया भी नहीं सुन पाती। वह मुँहमें बोलने का ही अभ्यासी है।

'कनूँ!' किंतु अपने दादा का यह सम्बोधन खेलनेमें लगा कन्हाई अवश्य सुन लेगा। खिलौने धरे रहें, घरौंदा अधूरा पड़ा रहेगा, गुँथनेको हाथमें लगी हुई मालाके पुष्प मार्गमें बिखर जायेंगे, श्याम घरमें हो या वनमें, छोटेसे बड़े होने तक इसमें कभी अन्तर नहीं पड़ा कि वह दाऊके पुकारते ही दौड़ेगा। हाथमें धूल, खिलौने, पुष्प—जो भी हो, लिये आयेगा-'दादा!' वह आकर बड़े भाईकी ओर ऊपर मुख उठाकर उससे सटकर बैठ जायेगा। किसीको कुछ कहना नहीं रहता। दाऊ मुस्करायेगा। कनूँ खिलखिलाकर हँसेगा और दो क्षण उठकर अपने दादाके सामने या चारों ओर घूम-घूमकर कूदेगा, फुदकेगा, नाचेगा।

कनूँ और दाऊ—दोनों अपनेमें एक-जैसे हैं। कोई कनूँके आगे दाऊको कुछ कह तो दे; वह लाठी ही नहीं, पूरा ऊखल उठाकर सिरपर पटक देनेको खड़ा हो जायगा। कहनेवालेकी नाक, कान, चुटिया जो हाथमें आ जाय—बस उसकी कुशल नहीं समझनी चाहिये।

दाऊके भालपर तनिक-सा स्वेद झलका और श्याम दौड़ा कमलका पत्ता तोड़ने। संसारमें जितनी सुन्दर, स्वादिष्ट और अच्छी वस्तुएँ हैं, सबपर वह मानता है कि

उसके दादाका स्वत्व है। सब उसके दादाके लिए सुरक्षित रहनी चाहिये। दाऊ—जिसके सिरको यमराज अपने घर ले जाना चाहें, वह दाऊके आगे श्याम को कुछ कहनेका साहस करे। कन्हाईका मुँह तनिक झुका और दाऊ घूँसा बाँधता है—किसने तुझे खिझाया है? और दाऊका घूँसा—वह जिसपर पड़ेगा, वह क्या फिर पानी माँगेगा?

'श्याम थक गया है।' 'कनूँ भूखा है।' 'मोहन इस फूलको लेकर प्रसन्न होगा।' 'कन्हाई यहाँ नाचेगा।' दाऊको अपने छोटे भाईको छोड़कर कुछ सूझता ही नहीं। कोई उससे पूछे कि संसार भरमें क्या-क्या है, तो वह सम्भवत: बड़े मजेसे कहेगा 'कन्हाई!' और चुप हो जायगा। बस, जैसे संसारमें उसका कन्हाई-ही-कन्हाई है।

दाऊ और कनूँ—कनूँ और दाऊ। क्या हुआ कि दोनोंके शरीर गौर और श्याम हैं। क्या हुआ कि एक गम्भीर ओर एक चपल है। हैं दोनों एक ही, सर्वथा एक। गौर श्याम—श्याम गौर।

# राम-श्याम की झाँकी

# ( दूसरा भाग )

## ११०-हप्प!

कन्हाई अभी-अभी दौड़ा-दौड़ा आया है। यह नटखट अपने सहचरोंके साथ किसी घरमें धूम करने गया था और वहाँसे जब वह गोपी उलाहना देने चली तो अकेला दौड़ा आया है। गोपी पता नहीं मैयासे क्या-क्या कहेगी, अत: इससे पहिले मैयाके समीप पहुँच जाना सुरक्षित है।

नील सरोजसुन्दर सुकुमार शरीर स्थान-स्थान पर अधिक स्निग्ध दीखता है। अलकें बिखरी हैं और मयूर-पिच्छ कहीं गिरा आया है। भालपर मैयाका लगाया कज्जल बिन्दु पोंछा गया है। अब केवल उसका फैला चिह्न मात्र शेष है। नेत्रोंका अंजन भी कुछ फैला है। स्पष्ट है कि किसी बड़े सखाने धूमके मध्य अलकों पर, शरीरपर पड़ा दधि, नवनीत या दूध पोंछ दिया है। उसका जो चिह्न है, श्यामको पता नहीं है इन चिह्नोंका। इसके स्निग्ध चरणोंमें कुछ धूलि भी चिपकी है, इसका भी ध्यान नहीं है।

कण्ठमें कौस्तुभ चमक रहा है, लघु मुक्ताओंकी मालाके मध्यसे और वक्षपर उसी मालाकी वाम लड़ीसे सटा श्रीवत्स चिह्न झाँक रहा है। कलाइयोंमें पद्मराग-जटित कङ्कण हैं। भुजाओंमें हीरकमण्डित केयूर हैं। कटिमें कटिसूत्र और मणिकांची हैं। चरणोंमें नूपुर हैं। दिगम्बर शिशु नन्दनन्दन दौड़ता आया है और अपने भवनके द्वारपर आकर यह देखने मुड़ पड़ा है कि वह गोपी जो उलाहना देने चली थी, अभी कितनी दूर है।

'अरे, यह तो पीछे ही लगी आ पहुँची।' कन्हाई चौंक गया। वैसे ही स्थूल शरीर और वैसी ही साड़ी—अब नन्हा नन्दलाल, यह इतनी शीघ्रतामें कैसे समझे कि यह कोई दूसरी ही है। मुखकी ओर देखनेका तो अवसर ही नहीं मिला इसे।

'यह तो आ गयी!' झटपट कुछ करना आवश्यक था। इसे ऐसे ही मैयाके समीप तक तो जाने देना ठीक नहीं। कृष्णने झटकेसे मध्य द्वारमें खड़े होकर इस

ढंगसे 'हप्प!' कहा मानो द्वार रोककर धमका रहा हो-'खबरदार! यह मेरे बाबाका भवन है। मैं तुझे इसमें भीतर नहीं घुसने दूँगा।'

दाहिने करकी मुट्ठी बँधी है और अँगूठा सीधा खड़ा कर लिया है इसने। बायाँ कर भी उठा है; किंतु उसकी मुट्ठी अधखुली है। अधरोंको दाँतोंसे दबाकर कमल मुखकी भङ्गी को इसने कठोर कर लिया है।

'क्यों रे! तू मुझे भी हप्प करता है?' आने वाली हँस पड़ीं नीलमणिकी यह भङ्गी देखकर।

'अरे, यह तो कुबला चाची है।' कन्हाईने सहसा सिर उठाया और अब उसका संकुचित मुख—दो क्षण यही इसकी समझमें नहीं आया कि यह जादू क्या है। यह गोपी इतनी शीघ्र कुबला चाची कैसे बन गयी औ अब करना क्या चाहिए। बायाँ हाथ वैसे ही उठा रहा अर्धकुंचित और दाहिनी मुट्ठीका अँगूठा भी झुका लेना स्मरण नहीं रहा। केवल 'हप्प!' करनेवाला मुख खुल गया—तनिक खुला रहा और फिर बात समझमें आ गयी। कुबला चाची हँस रही हैं—ये रुष्ट तो होना जानती ही नहीं है। इनसे डरने की आवश्यकता नहीं है।

कन्हाईने दोनों भुजाएँ ऊपर उठा दीं अङ्कमें जानेके लिए। चाचीने उठा लिया। अब तो चाचीको मैयाके समीप जाना है; किंतु वे हँसती-हँसती इसके मुखकी ओर देखती कह रही हैं-'कहूँ ब्रजेश्वरीसे कि तू अब मुझे भी 'हप्प!' करने लगा है।'

कनूँ इस चाचीसे-इतनी वात्सल्यमयीसे भला क्यों डरेगा? जानता है, यह कहनेवाली नहीं हैं। इसने अपना दाहिना हाथ इनके मुखपर धर दिया और इनके मुखकी ओर देखता हँस रहा है।

## १११-ऊँची नाक

आज प्रात: काल मैया अपने प्रांगणमें नीलमणिको अङ्कमें लेकर आ बैठी। पाटल गौरवर्ण, बड़े-बड़े अंजन रंजित लोचन, भालपर सिन्दूर बिन्दु, कबरीमें लगी मल्लिका-माला। सर्वाभरण भूषिता, अरुण परिधाना मैयाकी साड़ी सिरसे खिसक आयी है। इसके दक्षिण उरु पर कन्हाई बैठा है।

'मैया!' सहसा दौड़ता, भागता तोक आया और मैयाकी गोदमें उसके वाम उरुपर बैठकर अपना नन्हा बाम कर मैयाकी ठुड्ढीमें लगाकर मैयाके मुखकी ओर मुख उठाकर बोला।

'क्या है लाल!' मैयाने वामकरसे तोकको भी वैसा ही सम्हाल लिया है, जैसे दक्षिणकरसे कन्हाईको सम्हाले है।

मैयाकी गोदमें ये खिले इन्दीवरके समान कनूँ और तोक। पौने दो-दो वर्षके ये शिशु। दोनों एक रूप, एक वर्ण, एक-सा शृङ्गार। केवल तोक तनिक पतला और छोटा है।

दोनोंकी अलकें तैल स्निग्ध हैं। नेत्रोंमें कज्जल तो है ही, भालपर भी कज्जल बिन्दु हैं। कण्ठमें छोटे मोतियोंकी मालाओंमें व्याघ्रनख लटक रहे हैं। कटिमें ढीली पीत कछनी हैं।

'मैं हाऊके घर जाऊँ?— तोक बड़े भोलेपनसे पूछ रहा है।—

'क्यों? मेरा लाल हाऊके घर भला क्यों जायगा?' मैया तोककी ओर देखने लगी है।

'मेरी मैया शामको कह रही थी' तोकने कहा-'तू अब रातको उछले कूदेगा तो तुझे हाऊके घर भेज दूँगी।'

'अच्छा! अतुलाको आने तो दे। आज उसके कान पकड़ती हूँ।' मैयाने तोकको पुचकारा-'वह मेरे लालको हाऊके घर भेजने चली है।'

'मैं हाऊके घर जाऊँगा।' तोकको अपनी माताको दण्ड दिलाने की चिंता नहीं है। यह हाऊको ही देख लेना चाहता है-'मैं जाऊँगा, यह कनूँ जायगा, दाऊ दादा जायगा, भद्र जायगा, तेजस्वी जायगा, अंशु जायगा ...।' तोक सखाओंके नाम गिनाता ही चला जा रहा है।

'इतनी बड़ी सेना लेकर तू वहाँ जाकर क्या करनेवाला है?' माता रोहिणीने समीप आकर खड़े-खड़े पूछा।

'मैं हाऊकी नाक चपटी कर दूँगा।' तोकने अपनी छोटी-सी बायीं हथेलीको मैयाकी नाकपर रख दिया बतलानेके लिय कि वह कैसे हाऊकी नाक चपटी करेगा।

'लेकिन तू व्रजेश्वरीकी नाक क्यों चपटी कर रहा है?' माता रोहिणीने हँसकर पूछा।

तोकको लगा कि उससे भूल हो गयी है। लेकिन भोला तोक मैयाकी नाकपर से हथेली उठाना भूल गया है। यह तो अपनी भूलके भानसे भौचक्का मैयाका मुख देखने लगा है।

कन्हाईने झटसे तोकका हाथ मैयाकी नाकपर-से हटाया और अपने दोनों करोंकी सुकुमार लाल-लाल हथेलियोंसे मैयाकी नाक दोनों ओरसे दबाकर उठाने लगा है कि यदि तोकके दबानेसे यह नाक कुछ चपटी हुई भी हो तो तत्काल उठा दी जाय।

तोक चकित, प्रशंसा भरे दृगोंसे अब कन्हाईकी ओर देखने लगा है। इसका कनूँ कितना बुद्धिमान है। अपनोंकी भूल सुधार देनेमें कैसा तत्पर है।

'अब तुम्हारा नीलमणि तुम्हारी नाक ऊँची करने लगा है।' माता रोहिणी हँसती जा रही हैं। वे कृष्णसे कह रही हैं-'रहने दे लाल! तुम सबोंके होनेसे से ही व्रजेश्वरी और व्रजराजकी नाक सबसे ऊँची हो गयी है। अब उसे नीची करनेवाला कभी कोई उत्पन्न ही नहीं होगा।'

मैया तो भाव-विह्वल हो गयी है। इसने दोनों भुजाओंसे कन्हाई और तोक दोनोंको एक साथ वक्षसे सटा लिया है और मैयाके पयोधरोंका अमृतरस स्रवित होकर इसकी कंचुकीको आर्द्र करता जा रहा है।

## ११२-दूध पिला दे

'श्याम! तूने भाभीको छेड़ा है?' मैया यशोदाने द्वारसे दौड़कर आते अपने लाड़लेसे तनिक डाँटकर पूछा।

बात क्रोध करनेकी ही है। यह बेचारी नयी बहू है। अभी नन्दगाँवमें इसे आये पूरे सात दिन भी नहीं हुए। यह बहाना तो भला क्या बनायेगी। भोली लड़की है। मैयाको तो लगता है कि वह उसकी अपनी ही बहू है।

यह कहती है-'साससे कहनेपर उन्होंने कह दिया कि तू ही नन्दभवन चली जा।' वे साथ आनेको भी तैयार नहीं हुई। कहती थीं-'नन्दरानी तेरी सास ही हैं। जो कहना है, उनसे ही कह। मेरी बात वे विश्वास नहीं करेंगी।'

आकर इसने आँचल हाथमें लेकर मैयाके चरण छूए। मैया आशीर्वाद दे, इससे पहले तो यह फफक कर रो पड़ी। मैयाने गोदमें दबा लिया। मुख पोंछा आँचलसे और पूछा तो इसने जो कुछ सुनाया, उससे गुस्से में भर गयी।

इसका उलाहना पूरा भी नहीं हुआ कि कन्हाई बाहरसे दौड़ता-दौड़ता आया है। वह सदा ऐसे ही आता है। लेकिन कुछ बोले, इससे पहले मैया बिगड़ उठी है।

'मैंने ? भाभीको ?' श्याम ऐसे बोला जैसे अभी बात उसकी समझमें नहीं आयी है। वह घूँघट थोड़ा दबाये इस नयी बहूको झुककर देख रहा है इस प्रकार जैसे पहचानना चाहता है कि यह भांभी है या कोई और ?

'मैया!' कन्हाई तो प्रसन्न होकर झपट-सा पड़ा है—मैं इस भाभीको कहता था-'तू मुझे दूध पिला दे!'

'दूध ?' अब चौंकनेकी बारी मैयाकी थी। वह बहू तो मुख छिपाने लगी है। 'दूध कहाँ है इसके ?'

'दूध है तो।' अब लो, कन्हाई तो मैयाके सामने ही इसका अंचल खींचने लगा है।

'अरे हट! मैयाने लालाका हाथ पकड़कर खींचा। अभी इसके बच्चा कहाँ है ? दूध तो तब होगा जब इसके बेटा होगा।' मैया बड़ी कठिनाईसे अपनी हँसी दबाये हैं।

'तब तू इसे जल्दीसे बेटा देनेको कह!' श्याम मैयासे अनुरोध करने लगा है और नयी बहू तो वह—लज्जासे भागी जा रही है। वह भी हँसीसे घूँघटमें हिलती-डुलती जा रही है।

## ११३-नटखट

'दारी!' नन्हें कन्हाईने मुख फुलाकर असन्तोषकी पूरी भङ्गी प्रदर्शित करते कहा।

'दारी'-ब्रजमें बहुत प्रचलित गाली है, आप चाहें तो अश्लील गाली भी कह सकते हैं, किंतु ब्रजमें इसका अत्यन्त सामान्य उपयोग है। कोई इसे गाली मानता-समझता नहीं है।

'दारी' वृद्धासे लेकर नन्हीं बालिका तकको 'दादीका', अथवा 'सारे' समवयस्क या कुछ छोटे पुरुषमात्रको प्यारकी गाली—गाली भी नहीं, प्यारकी पद्वी, सम्बोधन है व्रजमें; किंतु आज कन्हाईने इसे 'दारी' कहकर गाली दी है। गाली देनेका पूरा भाव, पूरी झुँझलाहट है इसकी मुख भङ्गीपर।

कन्हाई नन्हा-सा तो है ही। यही कोई पाँच वर्षका और अभी सबेरे-सबेरे सोकर उठा है। वस्त्रके नामपर कटिमें केवल कछनी है। वह भी इस समय ढीली ढीली हो रही है। घुँघराली, काली कोमल केशराशि इस समय रूक्ष हो रही है, मुखके चारों ओर बिखरी हैं। भालपर कोई तिलक नहीं। अंजन थोड़ा फैल गया है, पर बहुत नहीं फैला है।

चरणोंमें मणि-नूपुर, कटिमें रत्न-किंकिणी, करोंमें कङ्कण, भुजाओंमें केयूर, वक्षपर छोटे मोतियोंकी माला, कण्ठमें कौस्तुभ, कानोंमें पाटल रत्न-कुण्डल। लेकिन कुण्डल केश राशिसे झाँकते लगते हैं। न मयूरपिच्छ, न बनमाला, न तिलक और न पटुका। नन्दतनय अभी सोकर उठा है; परन्तु आलस्य नेत्रोंसे चला गया है।

यह कोई दूसरे गाँवकी है। तनिक ठिगनी, थोड़ी मोटी-चौड़ी और अच्छी गोरी। लगता है दो-तीन बच्चों की माता होगी। किसी ऋषि-मुनिने कुछ सुना दिया होगा। ये जटा दाढ़ी वाले बाबा लोग पता नहीं क्या-क्या कहते हैं, इस नन्हें ब्रजराज-तनयको। यह उनकी बातोंके ही बहकावेमें आकर आती है। सबेरे-सबेरे नन्दगाँव आ गयी और कन्हाईको देखते ही दूरसे भूमिपर मस्तक रखकर प्रणाम किया इसने।

कन्हाई है ही अटपटा। कोई नहीं कह सकता कि यह कब, किसके किस कार्यसे रुष्ट या तुष्ट हो जायगा। इसने प्रणाम किया और श्याम नूपुर रुनझुन करते दौड़ा आया है। इससे ३-४ हाथ दूर खड़े होकर मुख बनाकर रोष से देखता, दाहिने हाथ की मुट्ठी बायीं हथेलीपर मारता है--और उसने गाली दी इसे--'दारी'।

'तू गाली देता है ?' भद्रने पास आकर तनिक डाँटते स्वरमें कहा। यह श्यामसे केवल नौ महीने बड़ा भद्र ऐसा रोब दिखाता है जैसे यही बड़ा दाऊ है।

'हाँ' कन्हाईने ढिठाईसे कहा-'यह मेरे सामने धरती पर सिर क्यों पटकती है ? मैं कोई पत्थरका देवता हूँ। देवता तो पत्थरका होता है।'

'दारी!' उसकी ओर रोषसे देखते इस नटखटने फिर अपनी गाली दुहरा दी।

# ११४-प्रतिबिम्ब-शृंगार

श्याम और भद्र दोनों अभी चार वर्षसे छोटे हैं। भद्र बड़ा है कन्हाईसे लगभग तीन महीने; किंतु बालकोंमें कहाँ यह बड़ा-छोटापन चलता है।

बालक तो बहुत हैं; किंतु सब इस समय पुलिनपर दाऊको देवता बनानेमें लगे हैं। सब दाऊको बैठाकर उसके चारों ओर रेत एकत्र कर रहे हैं। सबने कटि तक दाऊको रजमें ढक दिया है। दाऊ बैठा है पालथी मारे और बालक दोनों हाथों उसके आसपास रेत एकत्र करनेमें जुटे हैं।

श्याम और भद्र यमुना तटपर आ गये हैं। आया तो था अकेला भद्र; किंतु अब श्याम भी आकर उसके बायें कन्धेसे कन्धा सटाकर वैसे ही उझका जलमें देखने लगा है। पता नहीं भद्र जलमें अपना प्रतिबिम्ब देख रहा था या और कुछ। श्याम यह देखने उझक गया है कि पानीमें भद्र क्या देखता है।

दोनों एक-एक घुटना मोड़े, एक-एक हाथ भूमिमें टिकाये झुके हैं। ताम्र गौर भद्रभी कछनी पीली ही बाँधता है। इसने अभी अपना नीला पटुका कन्धेसे खिसका दिया है, जो इसकी कछनको घेरे पैरोंके पास पड़ा है।

तैल स्निग्ध, नन्हें मोतियोंकी लड़ीसे सजे केशमें माता रोहिणीने हंसका पिच्छ लगा दिया है। भुजाओंमें छोटे केयूर हैं। कारमें कङ्कण, पैरोंमें नूपुर, कानोंमें मणिकुण्डल। दाहिना पैर मोड़कर खड़ा किये, वामकर भूमिमें टेक भद्र उझककर जलमें कुछ देख रहा था।

कन्हाई अपना पटुका कितने क्षण कन्धेपर रख पाता है? वह उसे कहीं गिरा आया है। भद्रसे सटकर, दाहिने चरणकी पालथी बनाये, बायाँ पैर घुटना मोड़कर खड़ा किये, दाहिना कर भद्रके वाम करसे सटाकर टिकाये भूमिपर, भद्रके कन्धेसे कन्धा सटाकर श्याम भी जलमें उझककर देखने लगा है।

दोनोंके सिर सटे हैं। दोनोंके मस्तकमें लगे मयूरपिच्छ और हंसपिच्छ पास-पास लहरा रहे हैं। दोनोंकी अलकें झुककर आगे लटक आयी हैं। दोनोंके कुण्डल आगे झुके हैं। दोनोंके अंजन-रंजित बड़े-बड़े लोचन, गोरोचन अंकित भाल।

भद्रने अपना बायाँ कर उठाया। दाहिने करका अरुण पाटल पुष्प, बायें करमें लिया और धीरेसे पुष्प कन्हाईकी अलकोंमें सजाकर, वाम भुजा श्यामके कण्ठमें डाल दी उसने। अब उझककर कन्हाईके केशोंमें लगाये उस पुष्पका प्रतिबिम्ब पानीमें देखने लगा है। यह पुष्प अभी थोड़ी देर पहिले उसे दाऊने दिया था; किंतु कनूँकी अलकोंमें पहुँचकर यह कितना सुन्दर लगता है!

श्यामने पानीमें अपनी अलकोंमें लगा पुष्प देखा। भद्रकी ओर मुख किया उसने। इसके दृग कहते हैं-'तूने इस पानीवाले मुखकी अलकोंमें पुष्प लगा दिया?'

एक लगभग वैसा ही अरुण पुष्प कन्हाई भी लाया है। इसे भी दाऊने ही दिया है। अब यह अपना पुष्प पानी वाले भद्रके सिरकी अलकोंमें लगावेगा।

श्यामने दाहिनी कर उठाया और पानीमें हाथ डालकर पुष्प छोड़ दिया इसने। अरे! पुष्प तो ऊपर आया और वह तैर चला प्रवाहमें। भद्रके प्रतिबिम्बकी अलकोंमें तो वह लगा ही नहीं।

'तुम दोनों वहाँ क्या कर रहे हो?' मैयाको बालक तनिक देर न दीखें तो ढूँढ़ने भागती है। वह दूरसे ही पुकारती आ रही है। लेकिन मैयाके आनेसे इस समय श्याम प्रसन्न हुआ है। वह हाथ हिलाकर मैयाको समीप बुला रहा है।

'वहाँ जलमें क्या है?' मैयाने हाथ फैलाये, किंतु कृष्ण तो उसे जलमें देखनेको संकेत कर रहा है।

'वह फूल'-कृष्णने जलमें अपने प्रतिबिम्ब अलकोंमें लगे पुष्पकी ओर संकेत किया-'उसे उस भद्रके केशोंमें लगा।'

मैया हँस गयी अपने लालके भोलेपनपर। लेकिन श्याम जलमें संकेत कर रहा है। इसकी बात न सुनो तो मचलने लगेगा। मैयाने कृष्णकी अलकोंसे पुष्प निकाला और भद्रकी अलकोंमें लगा दिया।

भद्रके प्रतिबिम्ब की अलकोंमें पुष्प लगा देखकर कन्हाई प्रसन्न होकर ताली बजाने लगा है और अभी उस प्रतिबिम्बको ही देखे जा रहा है।

अपना कनूँ इतना प्रसन्न है तो अब पानी में प्रतिबिम्ब कौन देखे। भद्र कन्हाईको देख-देखकर ताली बजा रहे हैं और मैया अपने इन दोनों बालकोंको प्रसन्न देखकर पुलकित हो रही है।

# ११५-कृकलास?

'माँ! माँ! तू इसे मार!' कन्हाई पुकारता दौड़ा आ रहा है। यह सदा इसी प्रकार उतावलीमें रहता है।

'क्या है? कौन?' माता रोहिणीने साधारण स्वरमें पूछा। उनको पता है कि उनका यह चपल इसी प्रकार दिनमें कितनी ही बार पुकार करता आता है।

'इसे मार!' यह तो नन्दनन्दनकी साधारण माँग है। कभी किसी गोपीको, कभी किसी बूढ़े गोपको, कभी किसी कपिको या किसी कौवेको ही मारनेको कहता दौड़ा अवेगा। जो इसकी बात न माने, जो इसके कहे अनुसार न चले, जो इसे खिझावे, उस सबको माँ या मैयाको मारना चाहिए। यह कहाँ समझता है कि माँ किसी वृद्ध गोप या गोपीको मार नहीं सकती। पर इसके लिए माँ सर्वसमर्थ हैं। वे वृक्षपर कूदते कपि और उड़ते काकको भला क्यों नहीं मार सकतीं?

नन्हा कन्हाई केवल कटिमें कछनी लपेटे हैं। अलकें थोड़ी अस्तव्यस्त हो गयी हैं, परन्तु उनमें लगी मुक्तामाल और मयूरपिच्छ यथास्थान हैं। भाल पर तिलक, कज्जलबिन्दु, नेत्रोंमें अंजन, अभी इसने धूलि-स्नान नहीं किया है। इसका अंग अभी स्निग्ध, स्वच्छ है।

'तू चल!' आकर इसने माता रोहिणीका वाम कर पकड़ा और उन्हें खींचने लगा।

'कौन है?' माता द्वारसे बाहर आनेसे पूर्व पूछ लेना चाहती हैं; किंतु कृष्ण जब अपनी धुनमें होता है, किसीकी सुनता कहाँ है।

'इसे मार! यह मुझे चिढ़ाता है।' द्वारके बाहर भवन भित्तिपर कहींसे आकर एक मोटा कृकलास (गिरगिट) चिपका बैठा है। तनिक पीताभ, लाल कण्ठ-ग्रीवा। लम्बी पूँछ फैलाये वह बार-बार झटका देकर अपना सिर मटकाता है। कन्हाईने माता रोहिणीको अपने हाथके संकेतसे दिखलाया।

'यह तुझे चिढ़ाता है?' माताको हँसी आ गयी। 'तू भी इसे चिढ़ा दे।'

माताने जानबूझकर नहीं कहा कि-'तू सबको चिढ़ाता फिरता है, भला को‍ई तूझे चिढ़ानेवाला तो आया।'

'अच्छा!' कृष्ण दो क्षणतक देखता रहा उस गिरगिटको। जैसे देख रहा हो कि यह चिढ़ाना बन्द करता है या नहीं। लेकिन गिरगिटने फिर दो-तीन बार सिर हिलाया।

अब कन्हाई वहीं उसके सामने भूमिमें दोनों पैर पूरे फैलाकर पेटके बल लेट गया है। दोनों भुजाएँ सीधी खड़ी करके कुछ उदरका भाग, वक्ष, ग्रीवा ऊँची उठा रखी है इसने। अपने मस्तकको झटका देकर तीन-चार बार ऊपर-नीचे किया।

बेचारा कृकलास इसे स्थिर अपलक देखने लगा है। वह अपना सिर मटकाना भूल ही गया है।

'और चिढ़ायेगा? चिढ़!' कन्हाई ने फिर अपने मस्तकको दो-तीन बार झटके देकर ऊपर नीचे किया और कृकलाससे पूछने लगा। जैसे उसे इसने चिढ़ाकर पराजित कर दिया है।

माँ रोहिणी मुखसे वस्त्र लगाकर नि:शब्द हँस रही हैं। माता यशोदाको उन्होंने हाथके संकेतसे समीप बुलाया है कि अपने लालकी इस विजयको वे भी देख सकें।

आपने मत्स्य, कच्छप, वाराह, हयग्रीवादि अवतारोंकी बात सुनी है। भगवान नारायणने हंसका भी रूप धारण किया था और नृसिंहका भी; किंतु मैया यशोदाके इस अङ्कधनका यह कृकलासावतार—इतना सुन्दर, इतना मनोहारी, ऐसा चपल आपको कोई अवतार कहीं मिला है?

कन्हाई तो कृकलासको चिढ़ाकर अब मैयाकी गोदमें जानेको दोनोंकर उठा चुका है। इसके उदरका निचला भाग धूलि-धूसर हो चुका है।

## ११६-अनुकरण

अनोखा अनुकरण करता है यह नन्हा नन्दलाल। इसकी नकलमें भी नवीनता होती है। यह उसे वास्तविकतासे भी अधिक रोचक आनन्ददायी बना देते हैं।

गोपियोंको तो इसे देखे बिना चैन नहीं, कोई किसी बहाने और कोई किसी बहाने नन्दभवन पहुँची ही रहती है। किसीको जावन लेना है, किसीके घरकी अग्नि बुझ गयी है। किसीको पूछना है कि उसके पुत्र या देवरकी वर्षगाँठ कब पड़ेगी। काम बहुत हैं और सबको मैया यशोदासे ही सब पूछना, कहना, लेना है। मैयाको सबने बलात् ज्योतिषी, वैद्य आदि भी मान लिया है।

मैया हँसती है। कभी कह भी देती है कि उसे गाय या बछड़ेकी औषधिका क्या पता। उसके एक ही तो लाल हुआ। बच्चोंका उपचार भी तो उसे पता नहीं है। लेकिन बड़ी-बूढ़ियाँ भी सबेरेसे आ बैठती हैं तो दूसरी आवेंगी ही। तरुणियाँ कह देती हैं-'किससे पूछें? जिनसे पूछना है, वे अपने घर कभी मिलती भी हैं?'

ये सब कन्हाईको घेरे रहेंगी। कोई बूढ़ी तनिक खाँसी कि यह नटखट अपना पूरा मुख खोलकर, सिरको झटका देकर ऐसे खाँसेगा कि सब हँसने लगेंगी।

'तेरी मैया दही कैसे चलाती है?'

अब श्याम दही चलानेकी ही नकल नहीं करेगा, यह कटि, उदर, वक्ष सब हिलावेगा—ऐसे हिलावेगा कि मैया भी हँसकर लोट -पोट हो जाय।

'तेरी बड़े ताऊ कैसे चलते हैं?'

यह कहींसे कोई लकुटा ढूँढ़ेगा। पगड़ी लपेटेगा। कन्धे पर लकुट रखकर सिर झुकाकर इसका चलना और दो-चार पद चलकर इधर-उधर देख लेना देखने ही योग्य होता है।

अपने छोटे चाचाकी नकल करेगा तो बार-बार मूँछों पर ताव देनेका अभिनय करेगा। इतना अकड़कर चलेगा, मानो पीछे गिर जानेवाला हो।

'तेरी ताई कैसे सोती है?'

अब यह सिकुड़कर पैर पेटमें दबाकर खर्राटेका स्वर पूरी शक्तिसे निकालेगा।

'लाल! यह कैसे सोती है?' ताई या माँ रोहिणी किसी भी तरुणी गोपीकी ओर संकेत कर दे सकती हैं। वह लज्जासे लाल होकर झिड़केगी-'चल, मैं ऐसे कब सोती हूँ।' क्योंकि यह नटखट तो दोनों हाथ-पैर पूरे फैलचित्त लेट जायगा, उसके शयनका नाटक करते।

यह गोपियों, गोपोंकी ही नकल करता हो, ऐसी बात नहीं है। बिल्ली म्याऊँ करेगी तो यह भी उसके साथ 'म्याऊँ-म्याऊँ' करने लगेगा। कोई कुत्ता भूँक दे तो यह भूँकेगा और बन्दरको दोनों हाथ आगे करके, झुककर, मुख पूरा खोलकर 'खों-खों' करना तो इसका प्रिय खेल है।

आँगनमें नाचते मयूरके साथ दोनों कर पीठकी ओर करके नाचेगा। मार्गमें पावसमें मेंढकके समीप बैठकर उसके कूदनेपर वैसेही कूदेगा। यह तो 'हम्मा' करती गायोंको भी 'हम्मा' करने लगता है और बछड़ोंके साथ भी कूदता या दौड़ता है।

'लाल! यह श्रीदामा रूठता कैसे है?' एक दिन श्रीदामाके नन्दसदन आनेपर एक गोपीने पूछ लिया।

श्यामसुन्दरने एक बार देखा श्रीदामाकी ओर-'कहीं यह झगड़ा तो नहीं करेगा?'

श्रीदामा भी इसकी ओर कुतूहलसे देखने लगा है-'यह क्या बतलावेगा?'

दोनों कर भूमिमें टेकर, दोनों पैर पीछे मोड़कर यह चपल बैठ गया है। सिर झुकानेसे अलकें मुखके चारों ओर आ गयी हैं। इसने मुख खूब लम्बा खींच लिया है और कपोल फुला लिये हैं।

श्रीदामा हँस पड़ा है और गोपियाँ तो सबकी सब अंचलमें मुख छिपाकर हँसने लगी हैं।

## ११७-तेरा घर है तो धो!

'तू यहाँ क्या कर रहा है?' गोपी यमुनाजीसे जल लेकर आयी तो देखती है कि उसका घर, आँगन बालकोंसे भरा है। तीनसे पाँच वर्षके बालक। गोरे साँवले, सलोने सुन्दर बालक। सब सजे, सबके केश तेल स्निग्ध, सबके नेत्रोंमें अंजन, सब आभरण-भूषित। सब हँस रहे हैं, उछल-कूद कर रहे हैं। नन्दनन्दन एकसे दूसरे कक्षमें दौड़ा-दौड़ कर रहा है। गोपी जल-कलश भूमिपर रखना भूल गयी। वैसी ही द्वारपर ठिठकी कई क्षण खड़ी रही। फिर उसने पुकारकर पूछा।

'क्यों ? कुछ भी कर रहा हूँ, तुझे क्या ?' नन्हा कन्हाई एक कक्षके द्वारपर खड़ा हो गया है। वह बिना हिचके गोपीकी ओर देखकर ऐसे पूछ रहा है, जैसे वह स्वयं गृहपति है और यह कोई कहींसे भटक आयी है।

'मुझे क्यों नहीं ? मेरा घर है।' गोपीको हँसी आ रही है इस नटखटकी धृष्टतापर।

'यही तो देख रहा हूँ।' कन्हाई इधर-उधर देखता है।

'क्या ?' गोपी हँसकर पूछती है।

'यह मेरा घर तो नहीं है।' कृष्णचन्द्र वैसे ही निर्भय खड़ा है-'यह तेरा घर है ?'

'और नहीं तो तेरे बाबाका है।' गोपीने स्वर तनिक कड़ा किया।

'अरे रुक! यह क्या करने जा रहा है ?' गोपी कुछ और कहने जा रही थी कि चौंककर चिल्लायी। कन्हाईने खड़े-खड़े ही कछनी खोल ली है। इसके सब सखाओंने कछनियाँ खोलकर हाथमें ले ली हैं।

'मेरे बाबाका घर तो है नहीं।' नन्दलाल निश्चिन्त खड़े-खड़े ही लघुशङ्का प्रारम्भ कर चुका है। इसे लघुशङ्का लगी है तो सब बालकोंको लगेगी ही। 'मुत्ती कर रहा हूँ। तुझे करना है तू तू भी कर।'

सैकड़ों बालक हैं। पूरा आँगन, लगभग सभी कक्षोंमें भरे हैं। जो जहाँ खड़ा है, वहीं जलधारा गिराने लगा है। गोपी चिल्लायी-'नहीं! नहीं!'

'तेरा घर है तो तू धो।' कन्हाई अँगूठा दिखाता, मटकता, हँसता इसके समीपसे ही निकल भागा है। सबके सब इसे छूते, चिढ़ाते, धक्का देते भरसे बाहर भाग गये।

'तो यह चपल इसी कामके लिए स्थान देख रहा था ?' गोपीको हँसी आ रही है। थोड़ी झल्लाहट भी हो रही है-'मेरा घर इन्हें इसी योग्य लगा ?'

बड़ी कठिनाई है। सब कक्ष, पूरा आँगन जहाँ-तहाँ सब गीला कर गये। अब न भीतर पैर रखनेको स्थान है, न कलश रखनेको। ऊपरसे सब कह गये-'तेरा घर है तो धो।'

अब दोपहर तक तो इसे सब धोते ही रहना पड़ेगा।

'चलो कुशल हुई।' मन-ही-मन कहती कलशका जल आँगनमें फेंककर लौट पड़ी है-'इन्हें कोई बड़ी आवश्यकता नहीं थी, नहीं तो मैं आज मर लेती।'

अब इसने सीख लिया कि कम-से-कम नटखट नन्दलालसे घर इसका नहीं है, यह भूलकर भी नहीं कहना चाहिए। अपना घर कहा तो धोनेकी विपत्ति सिर धरी है। किसीसे कहेगी तो सब हँसी ही तो करेंगे? आपपर ऐसी विपत्ति आ जाय तो?

## ११८-वेणी-बन्धन

'तू यमुना किनारे चलेगा?' श्यामने भद्रसे पूछा। 'बहुत आनन्द आवेगा।'

'तू यमुनामें स्नान करेगा तो मैया खीझेगी' भद्र सदा इस नटखटका सरलतासे साथ नहीं दिया करता।

'तू चल तो सही, मैं स्नान नहीं करूँगा। हम झटपट लौट आवेंगे।' कन्हाईकी कोई योजना है। अकेले वह पूरी होने योग्य नहीं। दाऊको उसमें सम्मिलित नहीं किया जा सकता। श्रीदामा और सुबलको सर्वथा नहीं। मधुमङ्गल पोङ्गा है। विशाल, ऋषभ, अर्जुन, वरूथपादि बड़े सखा साथ नहीं देंगे। सब सीधे हैं। अंशु, तेजस्वी, देवप्रस्थ, तोक बहुत छोटे हैं। ये साथ भी दें तो मध्यमें हँसकर बात बिगाड़ देंगे। अब केवल भद्र बचता है। श्याम इसे प्रस्तुत करनेमें लगा है।

'भद्र दादा!' बहुत आनन्द आवेगा। तू मेरी बात मान ले। कृष्णको मनुहार करनी होती है, तब इस प्रकार दादा कहता है।

आज गोधन-पूजनका दिन है। दीपावलीका दूसरा दिन। गोवर्धन-पूजन भी होगा। गायोंको वनमें जाना नहीं है। बालक सब गायों-बछड़ोंके शृंगारमें लगे हैं। इतनेमें थोड़ी देर यमुनातट घूम आनेमें भद्रको आपत्ति नहीं है। कन्हाईको अकेले तो जाने नहीं दिया जा सकता। यह पता नहीं क्या ऊधम करे वहाँ।

'बरसानेकी लड़कियाँ अभी जल लेने आ रही हैं। तू उन सबकी चुटिया एक साथ बाँध देना।' कृष्णने प्रस्ताव किया।

'तू ही कर यह काम।' भद्र झल्लाया-'जैसे वे तुझे अपनी वेणी एक साथ बाँधने देंगी।'

'तू सबके सिर इकट्ठे कर दे तो मैं बाँध दूँगा।' श्यामने सहज ढंगसे कहा-'नहीं तू बाँधना स्वीकार कर ले, मैं उनके सिर इकट्ठे कर देता हूँ।'

'उनके सिर कोई कलश है कि तू उठाकर उन्हें इकट्ठे कर देगा?' भद्रको यह विनोद भाया तो है। सब लड़कियोंकी चुटिया एक साथ बाँध दी जाय तो सचमुच आनन्द तो आवेगा, पर वे बाँधने देंगीं।

'मैं कर दूँगा। तू यहाँ बैठ।' नन्दनन्दनने भद्रको यमुनाके उज्ज्वल पुलिनपर बैठाया। उसे पालथी मारकर बैठानेके पश्चात् उसकी गोदमें सो गया पैर लम्बे फैलाकर। पीठ बाहरकी ओर और मुख भद्रकी गोदमें छिपा।

'ये आज ऐसे क्यों पड़े हैं?' बालिकाओंका यूथ छोटी-छोटी कलसियाँ मस्तकपर धरे आया। वे गाती, हँसती आयी थीं। उन्हें यमुना जल ले जाकर आज स्वयं गोपूजन करना है। पुलिनपर सखाकी गोदमें मुख छिपाये शान्त लेटे श्यामसुन्दरको देखकर सबका हृदय धक्से हो उठा। कलसियाँ पुलिनपर पटककर सब दौड़ीं।

'क्या हुआ है इन्हें?' भद्रको सबने घेर लिया। 'इन्होंने एक हाथसे क्यों पेट पकड़ रखा है? इनका शरीरतो हिल रहा है। बहुत पीड़ा है इन्हें?'

'तुम्हीं पूछो, देखो।' भद्र कठिनाईसे हँसी रोके हैं। जानता है कि यह नटखट हास्यके कारण हिल रहा है। 'यह बोलता तो है नहीं।'

'तुम्हें क्या हुआ है? कहाँ पीड़ा है?' कोई बैठ गयीं। कोई झुक गयीं। सब अत्यन्त आकुल देखने पूछने लगीं।

भद्रकी जंघापर बराबर कन्हाई अँगुलियोंसे दबाव डालकर संकेत कर रहा है-'इनकी चुटिया बाँध!'

भद्रने दोनों हाथ उठाये। बालिकाएँ व्याकुल श्यामको देखने, छूने, पूछनेमें लगी हैं। उनको पता ही नहीं है कि कोई उनकी वेणी पकड़कर एकमें, बाँधनेमें लगा है।

'अब उठता क्यों नहीं?' सब वेणियाँ समेटकर एकमें बाँधकर भद्रने सखाकी पीठपर धीरेसे धौल धर दी और हँसा।

कन्हाई इसीकी प्रतीक्षामें था। वह तो अपने पैरोंकी ओर अत्यन्त फुर्तीसे सरका और दूर जा खड़ा हुआ। भद्र भी पीठकी ओर लुढ़क कर भागा।

लड़कियाँ अब चौंकीं। उनके मस्तक सट गये, खिंच गये वहाँसे हटनेका प्रयत्न करते ही। सबकी सब चिल्लायीं; किंतु दोनों नटखट दूर खड़े ताली बजाकर हँसते उछल रहे हैं।

इतनी सारी बालिकाओंकी एकमें बँधी चुटियाँ। अब जबतक उमनेंसे एक सुलझ न जाय, कोई कैसे दूसरोंको इस उलझनसे छुड़ावे। सबके कर ऊपर उठे अपनी चुटिया सुलझानेमें लगे हैं। वे अभी ठीक खीझ भी नहीं पाती हैं और वे दोनों ऊधमी तो दूर खड़े ताली बजा रहे हैं।

## ११९-पूजा

कन्हाईको ऊधमके अतिरिक्त जो कार्य प्रिय हैं, उनमें से एक है पूजा। यह दूसरी बात है कि जिसकी पूजा की जाय, वह पूजाको भी इस पलका एक ऊधम ही माने।

श्याम कब किसकी पूजा करना चाहेगा, कोई नियम नहीं है। यह तो अपने बाबाके महावृषभ धर्मकी, कामदाकी नन्दाकी भी पूजा कर लेता है। करने दें तो अपने बछड़े गौरव या मोटे बन्दरकी भी पूजा करनेमें इसे आपत्ति नहीं है; किंतु गौरवकी पूजा करने जाओ तो वह कूदकर भागता है और मोटा बन्दर पेड़पर ही जा बैठता है।

कृष्णको पूजा छोटे देवताकी प्रिय नहीं है। बाबाने जब कहा-'भगवान शालिग्रामकी पूजा कर।' तब मुँह बना लेता है-'वे तो नन्हेंसे हैं। न बोलते हैं, न खाते हैं।'

वैसे मूर्तिकी पूजा करनी हो तो यह शिवलिङ्गकी-बड़ेसे शिवलिङ्गकी श्रद्धा सहित पूजाकर लेता है; किंतु प्रिय तो पूजाके लिए इसे चलता, बोलता, खाता देवता है। ऐसी पूजाके लिए इसके देवता दाऊ दादा हैं। जब चाहो, उनकी पूजा कर लो। वे चुपचाप बैठ जायँगे और जिसके जैसे मनमें आवे, पूजा करते रहो।

'तू मेरी पूजा कर।' तोकने कहा; क्योंकि आज सबेरे-सबेरे श्यामको पूजाकी धुन चढ़ी है। भद्र, सुबल, श्रीदाम, विशाल, देवप्रस्थ, वरूथप आदि सबको समेट लाया है-'हम सब आज पूजा करेंगे।'

'किसकी पूजा करेगा?' भद्रने पूछा-'दाऊ दादाको बुला लाऊँ?'

'नहीं, नये देवताकी पूजा करेंगे।' कन्हाई कहाँ नैष्ठिक पुजारी है कि एक ही देवताकी रोज-रोज पूजा करता रहे।

'इस मधुमंगल की?' भद्र हँसा। कृष्णचन्द्र हाँ करने ही वाला था; किंतु मधुमंगल भाग खड़ा हुआ। वह इस नटखटको जानता है। पता नहीं पूजाके नामपर यह इस शीतकालमें उसके सिरपर कितने घड़े पानी डालेगा।

'तू मेरी पूजा कर।' नन्हें तोकको देवता बननेमें कोई आपत्ति नहीं हे। जानता है कि श्याम अपने इस छोटे भाईको तंग नहीं कर सकता।

'तू तो छोटा है।' कन्हाईने अस्वीकार किया-'छोटा तो देवताका प्रसाद खाता है। देवता बड़ा होता है।'

'बड़े तो बाबा हैं। तू बाबाकी पूजा करेगा?' भद्रने पूछा।

'हम बाबाकी पूजा करेंगे। मैं उनकी दाढ़ीमें फूल लगाऊँगा।' तोक ताली बजाकर नाचने-उछलने लगा है।

कृष्णचन्द्रको पूजा करनी हो तो केवल इस पुजारीकी श्रद्धासे काम नहीं चलता। देवतामें भी पूजा करानेकी श्रद्धा होनी चाहिए। बाबामें इतनी श्रद्धा नहीं है। वे अभी अपने नन्हें शालिग्रामजीकी पूजामें लगे थे। बालकोंकी भीड़ पहुँची, सब चिल्ला रहे थे-'हम बाबाकी पूजा करेंगे।' बाबाने पुचकार कर कह दिया-'तुम लोग माँकी पूजा करो। माँ सबसे बड़ी देवता होती है।'

'लाल! तू अपनी मैयाकी पूजा कर। व्रजेश्वरी तो तेरी मैया है।' कन्हाई मित्रोंको लिए माता रोहिणीकी पूजा करने पहुँचा तो उन्होंने भी पिण्ड छुड़ा लिया। इन बालकोंसे पूजा करानेकी श्रद्धा उनमें भी नहीं है।

'तू यहाँ बैठ!' श्यामने मैयाका हाथ पकड़ा। इसे पूजा करनी है और यह भी कोई बात है कि जिसे देवता बनाने जाओ, वही अस्वीकार कर देता है। अब कृष्ण मैयाका अस्वीकार नहीं सुनेगा।

'क्या बात है?' मैयाने पूछा।

'तू बैठ।' कन्हाई मचला-'हम पूजा करेंगे।'

मैया हँसकर बैठ गयी है और उसके लालके साथ ये सैकड़ों बालक मैयाकी पूजा करनेमें लगे हैं।

बालकोंकी पूजा—इसमें क्रम और विधिका क्या काम। अवश्य मधुमंगल मन्त्र बोलने आ गया है। यह कहता है–'मैं इस सबका जन्मसिद्ध आचार्य हूँ। अपनी दक्षिणा मैं क्यों छोड़ दूँ?'

कोई मैयाके केशोंमें कुसुम लगा रहा है। कोई इसकी नासिका ही चन्दन-श्वेत करने लगा है और कोई चरणोंपर जल डाल रहा है। कन्हाई पूजा कर रहा है, अपने मित्रोंके साथ मैयाकी पूजा कर रहा है।

पता नहीं क्यों गोपियाँ और माता रोहिणी भी हँस रही हैं खड़ी-खड़ी। हँस तो मैयाभी रही है, पर देवताको तो प्रसन्न होना ही चाहिये। कन्हाई पूजा जो कर रहा है।

## १२०-शपथ

'कनूँ!' आज तेरी वर्षगाँठ है। भद्रने सबेरे ही सूचना दी।

'हाँ, है तो।' मैयाने कल ही कहा था कि सबेरे गायें चराने नहीं जाना है, वर्षगाँठ है; किंतु इस नन्हेंसे कृष्णको स्मरण कहाँ रहता है कि वर्षगाँठ क्या होती है और उसमें क्या करना पड़ता है। अब भद्रने कहा है तो वह जानता होगा। पूछा कन्हाईने–'वर्षगाँठ को क्या होता है?'

'मैं तेरी चुटियामें गाँठ लगाऊँगा।' भद्रको एक विचित्र बात सूझ गयी–'मैं लगाऊँगा, सुबल लगावेगा, तोक लगावेगा, ऋषभ लगावेगा, अर्जुन लगावेगा, श्रीदाम…'

'बापरे! यह भद्र तो नाम गिनाता ही चला जा रहा है।' कन्हाईने दोनों हाथ अपनी चुटियापर रख लिये। वह चुटिया टटोलने लगा–'भद्र बड़ा नटखट है, कहीं इसने पहिले ही गाँठ न लगा दी हो।'

'इतने सखा—सबके सब लगावेंगे तो फिर बेचारी चुटिया तो क्या सिरकी सब अलकें गाँठ-ही-गाँठ बन जायँगी।' सोचकर ही कन्हाई घबड़ाया। उसने कहा–'तेरी वर्षगाँठ है।'

'वर्षगाँठ तो तेरी है, मेरी कैसे हो जायगी।' भद्रने मुँह बनाया।

'होगी कैसे नहीं। मैं कर दूँगा।' लेकिन श्याम समझता है कि उसके करनेसे वर्षगाँठ नहीं होगी, अतः कहता है-'मैयासे कहूँगा, माँ से कहूँगा, बाबासे कहूँगा-भद्रकी वर्षगाँठ कर दो।'

'वर्षगाँठ तो महर्षि शाण्डिल्य आकर कराते हैं।'भद्रने अँगूठा दिखाया-'बाबाने उन्हें बुलाया है। वे तेरी वर्षगाँठ कराने आते ही होंगे।'

अब नन्दनन्दन कुछ चिन्तामें पड़ गया है—महर्षि शाण्डिल्य आनेवाले हैं, उनको रोका तो जा नहीं सकता और ये ऋषि लोग जो करना चाहते हैं, उसे किये बिना मानते नहीं। तब ?

बात और उलझ गयी है-'महर्षि शाण्डिल्य चुटियामें गाँठ लगावेंगे तो सब ऋषि-मुनि, ब्राह्मण भी लगावेंगे। सब बड़े-बूढ़े गोप लगावेंगे, सखा लगावेंगे, कदाचित् गोपियाँ भी...' ओह! गाँठें-गाँठें, लाखों-करोड़ों गाँठें सिरके केशोंमें...' कन्हाई सिर झुकाकर सोचने लगा है।'

'ये सब लोग मेरे ही सिरके केशोंमें गाँठें क्यों लगावेंगे?' सब लगावेंगे तो अकेली चुटियामें लगानेसे कैसे पूरा पड़ेगा। तब तो सिरके पूरे केशोंमें गाँठे लगेंगी और यह बला उसीके सिर क्यों? दूसरे किसी सखाकी ऐसी वर्षगाँठ कभी आयी हो, यह तो इसे स्मरण नहीं आता।

'तू भूल जाता है-जल्दी ही भूल जाता है।' भद्रने झटसे एक कारण गढ़ लिया-'जो तेरे केशोंमें गाँठ लगा देगा, उसे तू नहीं भूल सकेगा।'

'मैं नहीं भूलँगा-किसीको नहीं भूलूँगा। कृष्णने छुटकारेका उपाय देख लिया। वह भद्रसे आग्रहपूर्वक कह रहा है। भद्रकी बात सटीक बैठी है-जो चुटिया या केशमें पक्की गाँठ लगा देगा, उसे भूला कैसे जा सकता है।'

'अच्छा, नहीं भूलेगा?' भद्रने परिहासका स्वर सर्वथा छिपा रखा है। वह गम्भीर बन गया है-'शपथ खा।'

'शपथ?' कन्हाई चौंका। वह भला किसकी खाय। लेकिन एक नाम उसे झटपट स्मरण आ गया-'मामा कंसकी शपथ!'

'चल!' भद्र कहीं ऐसे भुलावेंमें आता है-'कंसकी शपथ भी कहीं शपथ होती है?'

'अच्छा अपनी...।' लेकिन भद्रने मुखपर हाथ रख दिया।

'तू मेरी शपथ खा।'

'तेरी?' एकदम चौंका कृष्णचन्द्र। उसने जोरसे सिर हिला दिया। भद्रकी, सखाकी, गोपोंकी, गायोंकी-अरे, ब्रजके तो एक तृणकी शपथ भी नहीं खायी जा सकती।

'तब हम तेरी चुटियामें गाँठ लगावेंगे।' भद्र अपनी बातपर अड़ा है और इतनी सारी गाँठें सिरमें...?

'तू मेरी शपथ कर कि अपनोंको भूलेगा नहीं।' भद्रका स्वर दृढ़ है।

'नहीं भूलूँगा? तेरी...' मैया यशोदाके लालके कमल-दल विशाल लोचन भर आये हैं सखाकी शपथ करते। उसके कण्ठसे स्वर स्पष्ट नहीं हो पा रहे; किंतु मनमें तो शपथ आ गयी न?

'नहीं भूलूँगा-किसीको नहीं भूलूँगा! जो भी मुझे अपना कहेंगे उन किसीको नहीं!! तेरी...!'

और भद्रने अपने कनूँको भुजाओंमें भर लिया है। यह वर्षगाँठकी अङ्कमाल उसकी-'कोई तेरी चुटियामें गाँठ नहीं लगावेगा।'

## १२१-बोध

'कनूँ! यह बोध क्या होता है? कल वनमें एक ऋषि आ गये थे। ये ऋषि-मुनि बड़े विचित्र होते हैं। पता नहीं क्या-क्या ये नन्हें नन्दनन्दनको कहते हैं। अब कल जो आये, वे श्यामको पता नहीं क्या 'बोध-बोध' करके कह रहे थे। आज बात स्मरण आई तो भद्रने पूछ लिया।'

'बुद्धूको बोध होता है तो वह बुद्ध बन जाता है।' श्याम खिलखिलाकर हँसा-'तू बुद्धू है?'

'बुद्धू तो तू है, बुद्धवारको उत्पन्न हुआ।' भद्रने भी चिढ़ाया 'मैं तो मङ्गलको उत्पन्न हुआ हूँ।'

'क्या बात है?' सहसा दाऊ दादा समीप आ गये और सहज ही उन्होंने पूछ लिया।

'कल वे ऋषि आये थे यहाँ अपने पास।' भद्रने कहा-'वे पता नहीं बोधका नाम लेकर क्या-क्या इस कन्हाईसे कहते थे। मैं इससे पूछता हूँ कि यह बोध क्या है, तो यह बात बतलाता नहीं।'

'यह कहता है मुझे कि तू बुधको उत्पन्न हुआ अतः...!' श्यामने सखाकी ओर देखा और नेत्रके संकेतसे पूछा-'कह दूँ दादासे?'

'ठीक कहता है भद्र।' दाऊ दादाने अनुजकी बात पूरी सुने बिना ही कहा- 'इसीसे तुम महाबुद्ध हो-बोध हो।'

'ओह! तो बोधका अर्थ है बुद्धू।' भद्र ताली बजाकर हँसता हुआ उछला। 'ऋषि भी इसे चिढ़ाते थे?'

'ऋषि-मुनि किसीको चिढ़ाते नहीं!' दाऊने गम्भीरतासे कहा-'तुम्हें जानना है कि बोध क्या है?'

'यह कन्हाई है न?' भद्रका कन्हाई ही बोध है तो भला इसमें जानने-सुननेकी क्या बात है।

'तुम भी हो।' दाऊकी यहबात भद्रको नहीं रुची। लेकिन उसे लगा, अब चुप रहना चाहिए। कहीं दादा डाँटने न लगें। यह कुछ रूठता लगता है।

'मेरी ओर देखो!' दाऊ वहीं बैठ गये।

हरित दूर्वाच्छादित कोमल भूमि। चारों ओर पुष्पभारसे झुकी झूमती लताएँ और मध्यमें यह नीलाम्बरधारी, एक कुण्डलधारी स्वर्णगौर दाऊ आसन लगाकर, दोनों कर गोदमें लेकर अर्धोन्मीलित दृग बैठ गया है। यह शोभा, यह श्री, यह ध्यानमुद्रा किसी ऋषि-महर्षिके स्वप्नमें भी आ सकती है?

ज्योति-ज्योति—दुर्निवार ज्योति और यह क्या हो रहा है? क्या हो रहा है यह सब—भद्र कुछ नहीं समझ पाता। जो वह देख रहा है, अनुभव कर रहा है, वाणीमें नहीं आता वह।

वृन्दावन, गायें, गोप, पृथ्वी, पर्वत, यमुना, सूर्य, चन्द्र और जाने क्या-क्या-सब दाऊ बनाता है, सबको दाऊ बनाता-चलता है। सब दाऊके संकेतसे बनते-मिटते हैं—दाऊ! उसका अपना दाऊ दादा।

'दाऊ कन्हाई! कन्हाई-दाऊ!' यह क्या है? दोनों भाई एक और वह स्वयं वह स्वयं है यह-क्या?

पता नहीं कितनी देर--जब भद्र सावधान हुआ, दाऊ कह रहा था-'यह है बोध।'

आपको कुछ बोध लगा?

## १२२-तिलक

आज कन्हाई शीघ्र उठ गया है और उठते ही इसने अधरोंसे शृंग लगाकर 'धूतू धू' प्रारम्भ कर दिया है।

यह लो, अब तो नन्दग्रामके सब घरोंमें शृंग गूँजने लगे हैं। यह सब ध्वनियाँ नन्दगृहकी ओर बढ़ती आ रही हैं।

ये बालक मैयाको सदा हड़-बड़ीमें डाले रहते हैं। आज गोपाष्टमी है। गायोंका आज पूजन होता है। मैया चाहती है कि कन्हाई कुछ देरसे जागे तो वह समारोहका कुछ काम पूर्ण करले। उसने सायंकाल कहा भी था बालकोंसे-'कल गोचारणको नहीं जाना है। उठनेमें शीघ्रता मत करना।' लेकिन इन बालकोंकी अपनी ही योजना रहती है।

'आज यह क्या हो रहा है?' क्यों से सब शङ्ख-शृंग बजाते नन्दगृहकी ओर इतने सबेरे आ रहे हैं? किसी वर्ष ऐसा नहीं हुआ है तो गोप-गोपियोंके मनमें भी कुतुहल जागना स्वाभाविक है। वे सब भी बालकोंके पीछे चल पड़े हैं।

'कनूँ! क्या है आज?' मैयाने पूछ लिया।

'क्यों, गोपाष्टमी नहीं है।' श्यामने तनिक अधरोंसे शृंग हटाया।

'तो?—गोपाष्टमी है तो गो-पूजन होगा, यह धुआँधर शङ्खनाद सबेरे-सबेरे क्यों?' मैया तनिक झल्लायी।

'तू ही तो बता रही थी कि गोपाष्टमी को भद्रकी जन्मतिथि है।' कृष्णने फिर क्षणभरको शृंग हटाया।

'भद्र! बेटा भद्रसेन!' मैया पुकारने लगी है। यह भद्र तो बाबाके पास सोता है और सदा ब्रजराजके साथ जाग जाता है; किंतु इस समय तो भद्र शङ्ख बजानेमें लगा है। यह क्या उसके शङ्खका स्वर सबसे पृथक गूँज रहा है।

'क्यों? भद्रका तू क्या करेगी!' कृष्ण चौंका। मैया भद्रके जन्मदिनपर उसका जो सत्कार करेगी, वह पहले स्वयं क्यों न करे वह।

'उसे झटपट स्नान करके, वस्त्र पहिनने चाहिए।' मैयाने कहा-'में उसे तिलक करूँगी।'

'हम भद्रका तिलक करेंगे। भद्रकी आज जन्म-तिथि है।' कन्हाई शृंग कटिमें लगाकर द्वारकी ओर पुकारता दौड़ गया है। द्वार तक पहुँच गया है सखाओंका समूह और शृंग-शङ्ख बजाना छोड़कर सब इस नवीन उत्साहमें आ गये हैं। भद्रको स्नान करना है, उसे वस्त्राभरण धारण करने हैं, यह बात अब भला कौन सोचने लगा है। कृष्ण फिर भीतर भाग गया है। उसे कुंकुम चाहिये। अपने लिए सब सखाओंके लिए झोली भरकर कुंकुम चाहिये।

'हम भद्रका तिलक करेंगे।' सब उत्कण्ठित हैं; किंतु भद्र है कहाँ? वह कहाँ चला गया?

वह इस अपने कन्हाईके ऊधमसे कहाँ भागे। भागकर वह श्रीब्रजराजके अङ्कमें आ बैठा था; किंतु आज तो बाबा भी श्यामके साथ हो गये हैं। अङ्कमें बैठे भद्रको अपने भुजाओंमें लपेटकर स्थिर कर दिया है उन्होंने और यह आ गया है श्याम, सब सखाओंको लेकर।

'हम भद्रका तिलक करेंगे।'

'ऐसे नहीं लाल!' बाबाने कन्हाईको चुटकी भर कुंकुम उठाते देखकर रोका। ऐसे अँगूठेसे तिलक तो महर्षि शाडिल्य करते हैं, ब्राह्मण करते हैं।

'मैं भी करूँ तो?' श्याम ठिठक गया है।

'तुम लोग चाहे जिसे अँगूठा दिखा देते हो न!' बाबा ने हँसते-हँसते समझाया। 'इसीलिए तुम्हारे अँगूठे तिलक करने योग्य नहीं हैं।'

'हम भद्रको तिलक करेंगे!' ऐसे सीधे कहीं कृष्ण मानता है।

'तिलक करो; किंतु अँगूठे से नहीं।' बाबाने कृष्णके दाहिने हाथकी अनामिका छूकर बतलाया-'इससे करो।'

श्यामके दक्षिणकरकी पतली सुकुमार, अनामिकापर तनिक-सा कुंकुम उठा है और वह अपने सखाको तिलक लगाने जा रहा है। बाबाकी गोदमें बैठे, उनकी भुजाओंमें बँधे सखाको कन्हाई तिलक करने जा रहा है।

यह तिलक आपके भालपर भी तो लग सकता है?

## १२३-तुझे लूँगा

'कनूँ! आज तेरी वर्षगाँठ है—तू क्या लेगा?' बात कही तो भद्रने है; किंतु जैसे सबके हृदयका प्रश्न इसके मुखसे निकला है।

'कृष्ण! बता तो सही, तू आज क्या लेगा?' लो, दूसरे सब गोप कुमार तो पूछ ही रहे थे, यह दाऊ भी पूछने लगा है।

'श्याम! क्या लेगा तू?' बरसानेसे छकड़े आये हैं उपहारोंसे भरे और द्वारसे दौड़ता आया यह श्रीदाम, नन्दनन्दनके सामने ऐसा खड़ा हो गया है, जैसे वह साकार ही प्रश्न हो।

मैयाने आज खूब सजाया है अपने नील सुन्दरको। यह सदा सुसज्ज रहनेवाला नटनागर आज रत्नाभरणोंसे भरपूर अलंकृत है।

आज भाद्रकृष्ण नौमी है—ब्रजमें यही नन्दलालकी जन्मतिथि है, आज गोप-कुमार वनमें गोचारण करने कैसे जा सकते हैं। आज तो ब्रज-युवराजकी वर्षगाँठका महोत्सव है और ब्रजका कोई महोत्सव क्या गो-पूजनके बिना पूर्ण होता है।

सब सखा आज सुसज्ज हैं। सबको उनकी माताओंने भरपूर सजाया है। सब बड़े सबेरे नन्दभवन भाग आये हैं।

महीनेभरसे बालक-वृद्ध, स्त्री-पुरुष सब इसी चिन्ता-चिन्तन और प्रस्तुतिमें लगे हैं कि वर्षगाँठ पर वे ऐसा क्या उपहार दें कि श्यामसुन्दर एक क्षणको खिल उठे।

अभी महर्षि शाण्डिल्य आवेंगे ब्राह्मणोंके साथ। हवन होगा, गो-पूजन होगा और कृष्णचन्द्र ऋषि, ब्राह्मण, वृद्धजनको प्रणाम करेगा उनके आशीर्वाद लेगा। तब कहीं उसको उपहार देनेका समय आवेगा। लेकिन गोपकुमारोंने उसे सबेरे ही घेर लिया है और भद्रने प्रश्न करके प्रश्नोंकी झड़ीको मुखर कर दिया। सभीका एक ही प्रश्न है-'तू आज क्या लेगा।'

मयूर मुकुट तनिक झुक गया है। कृष्ण दो क्षण अवनत बदन सोचने लगा और लो वह सहसा खिल उठा है। वह जैसे कूद-सा-पड़ा है वहीं। दोनों भुजाएँ भद्रके कण्ठमें डालकर लिपटता बोला वह-'मैं तुझे लूँगा!' 'मैं तुझे लूँगा!'

अब यह एकसे दूसरेके कण्ठसे लिपटता वनमाली—गोपकुमारके साथ आलिंगनबद्ध श्रीकृष्ण! यह उपहार ग्रहण है या आत्मोपहारका अर्पण?

'मैं तुझे लूँगा!' यह लिपटा श्रीदामके कण्ठसे यशोदाकुमार और कोई यह पीछेसे खिल-खिलाती बोल उठी है—'इसे या इसकी बहिनको?'

स्वर्णगौर श्रीदामका मुख पाटलारुण हो गया है और कन्हाई—जैसे यह चपल भी कुछ सङ्कोचमें पड़ गया है।

## १२४-यह उपहार

आज बरसानेमें महोत्सव है। कीर्तिकुमारीकी वर्षगाँठ है आज!

वृहत्सानुपुर (बरसाना)की शोभाका वर्णनकर पाना वैसे ही सम्भव नहीं है और आज तो उसकी एक-एक गली, प्रत्येक गृहका हर कोना मन लगाकर गोपों-गोपियोंने सजाया है।

सखियोंने मानो सौन्दर्यकी अधिदेवताओंको सजानेमें अपनी समस्त निपुणता आज न्योछावर कर दी है।

'आपको सबसे प्रथम किसका उपहार प्रिय लगेगा?' ललिताने परिहासपूर्ण पूछ लिया।

'तुम सबके किसी उपहारकी मुझसे कभी उपेक्षा हुई है?' वृषभानु-नन्दिनी स्वभावसे इतनी भोली हैं कि परिहास करने जाकर सखियोंको संकुचित होना पड़ता है। वे कह रही हैं-'तुममें मैंने कहाँ किसीको अपनेसे पृथक् माना है कि किसीके उपहारको प्राथमिकता देनेकी बात तू उठाती है।'

सम्पूर्ण शास्त्रीय विधि सम्पन्न हो चुकी है। देव-भूदेव पूजन कबका हो चुका। ब्राह्मण सपत्नीक सुपूजित होकर आशीर्वाद देकर, अच्छी प्रकार दान-दक्षिणसे तर्पित होकर अपने आवासोंको जा चुके।

प्रणति पाकर और आशीर्वाद देकर कुलगोत्र वृद्धाएँ माता कीर्तिके समीप एकत्र हो गयीं। वृषभानु बाबाको आज आगन्तुकोंके सत्कारसे अवकाश नहीं है। कभी-कभी ही उत्साहकी मूर्ति बना श्रीदाम आता है अन्त:पुर में। अन्यथा वह भी सजा-धजा आज बाहर अपने वयस्कोंके सत्कारमें लगा है।

सखियोंने घेर रखा है श्रीराधाको। आज वे अपने उपहार अर्पित करने वाली हैं इस अपनी प्राणभूता को। कितनी उमंग, कितने उल्लास, कितनी सचिन्ततासे इन्होंने अपने उपहार सजाये हैं। लेकिन उपहार अर्पणका प्रथम स्वत्व—ललिता इसमें प्रमाद कैसे कर सकती हैं।

'हम तो तुम्हारी हैं ही।' ललिताने कहा-'लेकिन नन्द गाँवसे उपहारों के छकड़े आये हैं। और सन्देश आया है कि नीलाम्बरधारी अग्रज पूछते हैं-'लली, क्या लेगी?'

'उनका आशीर्वाद! श्रीराधके कण्ठसे अत्यन्त क्षीण अस्फुट स्वर उठा। उनका मस्तक झुक गया।'

'उनके छोटे भाईने कुछ नहीं भेजा।' हँसकर सखीने कहा-'भेजा है केवल एक पद्मपुष्प!'

'तू इसे कुछ नहीं कहती है?' दोनों करोंसे उस सुरंग सरोजको लेकर हृदयसे लगाये कीर्तिकुमारी तो भावसमाधिमें चली गयीं। उसका कदम्ब पुष्प-सा रोमांचकण्टकित श्रीअंग, स्वेद-धरार्द्र होते कौशेय वस्त्र, नेत्रोंसे झरती परम-पावन प्रेम-धारा...

सखियाँ शान्त, मौन खड़ी हैं अपनी अधीश्वरीकी ओर एकटक देखती।

## १२५-धृष्टता

'तू इतना बिना रँगा क्यों है ?' होलीका दिन और भद्रसेनके शरीर--विशेषत: मुखकपोलका कुछ भाग बिना रँगके दीखता है, यह क्या आश्चर्य करनेकी बात नहीं है ?

'मैं क्या तेरी भाँति गुलालके थैलेमें बैठा था।' भद्रका कहना भी ठीक है। कृष्णचन्द्र आपाद मस्तक ऐसा हो रहा है जैसे स्नान करनेके तत्काल पीछे वह अबीर या गुलालसे भरे थैलेमें जा घुसा था।

मस्तकपर न मयूर पिच्छ है,न कन्धेपर पटुका और न कण्ठमें वनमाला, कटिकी कछनीमें भी आज मुरली नहीं है।

आज आभूषणोंके नामपर कण्ठमें मोतियोंकी माला है कौस्तुभके नीचे लटकती। भुजाओंमें अङ्गद है। और कलाइयोंमें मणि-कङ्कण।

वस्त्रके नाम पर केवल कछनी है किंतु वह पीताम्बर है या नहीं, पता नहीं। आज तो यही पता लगाना अशक्य है कि मैया यशोदाका लाल साँवला है या गोरा। कहा न कि कन्हाई ऐसा लगता है जैसे गुलाल भरे बोरेमें से सीधे निकला आ रहा हो।

श्यामके पास न पिचकारी है और न अबीरकी झोली। इसको आवश्कता भी क्या है। आज प्रात: वह ऐसे ही नन्दभवनसे निकला है। किसीकी झोलीमें हाथ डालकर मुट्ठीमें गुलाल भर ली तो वह झोली वालेके मुखको लाल करेगा या दूर किसीको ताककर मुट्ठी फेंकेगा, कौन कह सकता है।

पता नहीं किस-किसकी पिचकारियाँ झपट लीं आज इसने और उसीका रंग उसीके ऊपर्!

इसने और इसके सखाओंने जो धूम आज पूरे ब्रजमें मचा रखी थी-किसी गोपिकाको तीन चारने पकड़कर रंगके विशाल पात्रमें नहीं पटका, उसके सिरपर ही पात्र उलटकर सन्तोष कर लिया तो समझो कि वह बहुत सस्ते छूट गयी।

अब मध्याह्न होनेको आया है। श्यामसुन्दर सखाओंके साथ यमुना स्नान करने चल पड़ा है। अत्यधिक दौड़-धूप, उछल-कूदसे सब कुछ शिथिल हुए हैं और अचानक कृष्णकी दृष्टि भद्रपर पड़ गयी।

यह भद्र कुछ महीने बड़ा क्या है, कन्हाईपर रौब ही जमाता रहता है। पता नहीं क्यों गोपियाँ और व्रजकी लड़कियाँ भी इसका थोड़ा संकोच कर लेती हैं। लगता है आजकी धूममें भी सबने इसे कुछ तो बचाया ही है। वैसे इसके वस्त्र और शरीरका रंग भी बता पाना कठिन है; किंतु इसके मुखपर गुलाल की मुट्ठी किसीने नहीं मली होगी। हो सकता है कि यह अपना मुख बचाता रहा हो। यह भी तो लड़कियोंको कम ही तंग करता है। वे अनुनय करें तो इसे सबसे पहिले दया आ जाती है।

'हुँ' अब भद्रके पास इसका क्या उपाय है? आज होलीके दिन नन्दनन्दन धृष्टता करे तो इसे डाँटा जा नहीं सकता और इसने तो भद्रको दोनों भुजाओंमें जकड़ लिया है। अपनी अबीर भरी घुंघराली अलकें सिर हिला-हिलाकर यह भद्रकी नाक, कपोल, ललाटपर रगड़े चला जा रहा है-रगड़े ही जा रहा है। सखा सब ताली बजाकर कूदने लगे हैं।

## १२६-पद्वी-वितरण

'दाऊ ब्रजका राजा है!' कन्हाई कूदता पूरे उच्चस्वरमें पुकार रहा है।

बालक पुकारते हैं-'कृष्णचन्द्र युवराज है।'

भद्र स्वयं बोलता है-'भद्रसेन मन्त्री पद पण्डित।'

श्याम नटखटपनसे चिल्लाया-'मधुमंगल है पोंगा पण्डित।'

किसी गोपने पूछ लिया-'भला कौन है श्रीदामा?' मोटे बन्दरका मामा।

नटखट कन्हाई ताली बजाकर हँसने लगा।

'चल श्रीदामा बन्दरका मामा क्यों होने लगा।' हँसते-हँसते मैयाने अपने नीलमणिका हाथ पकड़ा।

'तू समझता भी है क्या बकता है?' माता रोहिणी भी हँसती समीप आ गयीं-'तू बन्दरका बाप बनेगा?'

'बनूँगा!' कृष्णको हतप्रभ करना कठिन है। यह तो मजेसे कहता है-'मैं सबसे बड़े बन्दरका बाप हूँ!'

अब किसको कैसे स्मरण आवेगा कि त्रेतामें ही श्रीमिथिलेश-नन्दिनीने हनुमानको अपना ज्येष्ठ पुत्र स्वीकार कर लिया था। यह कृष्णचन्द्र अब द्वापरमें भी इस सम्बन्धको अस्वीकार कैसे कर सकता है। श्रीदामाको मोटे बन्दरका मामा बननेसे चिढ़ना हो तो चिढ़े; किंतु कृष्णको बन्दरका बाप कहलानेमें कोई आपत्ति नहीं है।

होलिका-दहन करके बालक ग्राममें आ गये हैं। इन्होंने अपना कीर्तन पूरा कर लिया है।

नरहरि नख लाल। प्रह्लाद प्रतिपाल॥

अब इनको पद्वीदानकी धुन चढ़ी है। मैया कहती है कि अब ये सब उछलना त्यागकर कुछ ब्यालू करें। शीघ्र सो जायँ। कल रंगोत्सव मनाते दिनभर धूम करते थकेंगे; किंतु बालक अभी अपनी धुनमें है।

'तभी तू भी बन्दरों जैसा कूदता, मुख बनाता है।' मैया अपने कुमारको रोकना चाहती है। उसे डर है कि ये इस उत्साह में कहीं बड़ोंकी अटपटी पदवी लेकर अशिष्टता न करने लगें। इन्हें रोका जाना चाहिये। लेकिन बालक अभी उत्साहमें है-

'दाऊ व्रजका राजा है।'

'कृष्णचन्द्र युवराज हैं।'

'भद्रसेन मन्त्री पद पण्डित।'

चल रहा है यह और बेचारे श्रीदामाको सब मोटे बन्दरका मामा बनानेमें लगे हैं।

## १२७-आकांक्षा-पूर्ति

'अरे! अरे!' मैया अचानक हड़बड़ा उठी है। इसकी समझमें ही नहीं आता कि यह क्या कहे, क्या करे इस समय।

फाल्गुन है तो क्या हुआ, अभी सर्दी तो पड़ती ही है प्रातःकाल। मैयाने अपने नीलमणिको उबटन, तेल लगाकर अभी भी पलनेमें धूपमें लिटाया था। तैल-स्निग्ध अलकोंको सम्हालकर उनमें एक छोटी मोतियोंकी माला सजा दी; एक मयूर पिच्छ लगा दिया। नेत्रोंमें अंजन, भालपर भी कंजन बिन्दु। कटिमें छोटे रत्नोंकी मेखला, करोंमें कङ्कण, चरणोंमें नूपुर। कण्ठमें व्याघ्रनख है मुक्तामालाके मध्य।

यह नीलसुन्दर प्रात:कालीन धूपमें अपने अरुण चरण उछालता किलक रहा था। अपने इस सात महीनेके अनुजके पलनेको पकड़े दाऊ इसीकी ओर देख रहा था। मैया यशोदा और माँ रोहिणी भी इसीकी ओर देखती खड़ी थीं। यह हँसता किलकता हो तो पैर इसके पास से हटना ही नहीं चाहते।

एक वृद्धा-गोपी आ गयीं। मैयाने और माँने भी उनके चरणोंमें प्रणाम किया अंजन हाथमें लेकर। उन्होंने दोनोंको आशीर्वाद दिया और पलनेमेंसे इस नन्हें नटखटको उठा लिया। इसे उठाकर दोनों हाथोंमें लेकर सिरसे ऊपर किया। यह भी अपने अरुण कोमल चरण नचाने लगा। कभी उनकी नासिकापर चरण रखता, कभी भालपर, कभी कपोलपर।

'मेरा लाल! मेरा युवराज!' वृद्धा विभोर हो रही थीं। मैया और माँ अपलक देख रही थीं इसीकी ओर। अचानक दाऊ ताली बजाकर हँसने लगा।

'क्या है रे?' माँने दाऊकी ओर देखा।

'अरे! अरे!' मैया हड़बड़ा उठी।

नन्हा नीलसुन्दर मजेसे वृद्धाके मस्तक ललाटका अभिषेक करने लगा है।

'अच्छा! अच्छा!'-वृद्धा अत्यन्त प्रसन्न हो उठी हैं। उन्होंने इस नटखटको ऐसे झुका लिया है कि उनके वक्ष, उदरके वस्त्र भी अभिषिक्त हो जायँ।

'छोटा भाई नटखटपन करता है और तू हँसता है?' माँने दाऊको धमकाया; किंतु स्वरमें रोषके स्थानपर हास्य ही अधिक है। दाऊ माँकी ओर देखता ही नहीं। यह तो छोटे भाईकी ओर देखता ताली बजाता हँस रहा है।

वृद्धाने अपना अंचल हाथोंमें ले लिया है। श्यामको बायें हाथसे वक्षसे सटाये उसके पद पोंछने लगीं हैं, जो स्वयं इसने आर्द्र कर लिये हैं।

'मात:!' मैया अत्यन्त संकोचमें पड़ गयी है। यह अपराधिनीकी भाँति मुख बनाये जैसे क्षमा माँगने लगी है-'शिशु अबोध है। नवीन वस्त्र मैं रखे देती हूँ। आप उष्णोदकसे स्नान कर लें।'

'स्नान कर लूँ मैं?' वृद्धाने मैयाकी ओर हँसते-हँसते देखा और कन्हाईको फिर दोनों हाथोंमें सिरके ऊपर उठा लिया-'मेरे लालने तो मेरी आकांक्षा पूरी कर दी।'

'बहू! तू नहीं जानती कि मैंने कितने वर्ष नियमपूर्वक कार्तिक, मार्गशीर्ष और माघमें सूर्योदयसे पूर्व माघ स्नान किया है।' वृद्धा, कन्हाईकी ओर ही देखती कह रही हैं-'नारायणसे यही माँगती थी कि तेरी गोद भरे और तेरा लाल मुझे इस प्रकार पवित्र करे। मेरा स्नान आज इस नटखटने सफल कर दिया।'

## १२८-ऊँघ

ब्राह्ममुहूर्त हो गया है। अन्धकार घटने लगा है। नन्दगाँवके गोष्ठोंमें गोप गायोंको चारा देने लगे हैं। घरोंमें दीपक जल गये हैं और दधि-मन्थनकी ध्वनि गूँजने लगी है।

'मैया!' नन्दनन्दन अपने रत्न-पालनेपर कुनमुनाता है। इधर-उधर नन्हें करोंसे टटोलता है। मैया उसे मिलती नहीं। वह उठ गयी है और किसी कार्यमें लगी होगी।

झीना पीतपट अरुण चरणोंने एक ओर कर दिया है। कन्हाई उठ पड़ता है, बैठता है और पलनेसे उतर खड़ा होता है।

छोटा-सा कन्हाई दिगम्बर है। कमरमें रत्न-मेखला है। करोंमें हल्के कङ्कण हैं। कण्ठमें मुक्तामालाके मध्यसे कौस्तुभ झाँक रहा है। अलकें बिखरी हैं। नेत्रोंका काजल कपोलों तक फैल गया है।

श्याम अभी भी नींदमें ही है। वह दोनों हथेलियोंसे नेत्र मलता है और ऊँघता हुआ लड़खड़ाते पदोंसे चल पड़ता है। उसे मैयाको ढूँढ़ना है। मैया गयी कहाँ? मैया मिले तो वह सो जाय उसकी गोदमें। सूने पलनेपर कहीं कोइ अकेला सो सकता है।

उसे पता नहीं है कि किधर जा रहा है। कुछ पद चलकर खड़ा होता है। नन्हा-सा मुख खोलकर जम्हाई लेता है। नेत्र मलता है और फिर चल देता है लड़खड़ाता-ऊँघता। कभी नेत्र आधे खुलते हैं और कभी बन्द नेत्रोंसे ही चल पड़ता है।

'मैया!' कन्हाई चौंकता है। उसे पता नहीं है कि वह नन्दभवनसे बाहर निकल आया है और मार्गमें खड़ा है। लेकिन नेत्र खुलनेपर लगता है कि वह भवनसे बाहर आ गया है। जो द्वार सामने दीखता है, उसीमें प्रवेश कर जाता है।

'मैया!' उस भवनकी स्वामिनी चौंकती है। यह स्वर भी क्या छिपनेवाला है। यह प्राणोंको आनन्दके सागरमें उभचुभ कर देनेवाला स्वर और यह ऊँघता, लटपट पदोंसे चलता जो चला आ रहा है सामने नीलसुन्दर!

'लाल!' मथानी छूट जाती है। गोपी दोनों हाथ फैलाये झपटती है और कन्हाई तो अभी नींदमें है। उसे कहाँ पता है कि कहाँ आया है और यह कौन है। उसे तो सो जानेके लिए एक गोद चाहिए।

गोदमें श्याम को लेकर गोपी वहीं भूमिमें ही बैठ जाती है। अब उसे अपनी ही सुधि नहीं है।

इस यशोदाके लालने उसके अंचलमें सिर छिपा लिया है। उसके एक स्तनाग्रको मुखमें लेकर, दूसरे स्तन पर नन्हा हाथ रखकर वह तो सो भी गया। दूध पीने की उसे सुधि नहीं और गोपीको क्या अपनी सुधि रह सकती है?

## १२९-ज्ञान

'कनूँ! तू जानता है, ज्ञान किसे कहते हैं?' आज वनमें आते ही श्रीदामाने दौड़कर स्नेहपूर्वक श्यामका हाथ पकड़ा।

'हाँ-हाँ'-नन्दनन्दन उत्साहसे बोला-'तुझे चाहिए?'

'तू लड़ाईकी बात क्यों करता है?' श्रीदामा कुछ रूखा मुख बनाकर बोला-'मैं तो पूछ रहा हूँ।'

'क्या?' कृष्णने देखा अब सखाकी ओर।

'आज सबेरे-सबेरे एक बाबा मेरी पौर आकर पुकारने लगा-'लाली! लाली! लाली!' श्रीदामा बोला-'मैं दौड़ आया और उससे पूछा-तुम्हें क्या चाहिए?'

'फिर?' अब श्याम गम्भीर हो गया था।

'ये बाबा बड़े बिकट होते हैं।' श्रीदामा कहता गया--उसने मुझे झड़क दिया-'लालीसे लेना है।'

'बुरी बात।' भद्रको क्रोध आता लगा। वह बाबा सामने होता तो कदाचित यह उसकी दाढ़ी नोच लेता। श्रीवृषभानु बाबाके कुमारको कोई झिड़क दे! ऐसा है क्या जिसे ये न दे सकें।

'तू तो जानता है कि बहिन कितनी संकोचशीला है।' श्रीदामाने भद्रकी ओर मुख करके कहा-'वह ललिताके साथ द्वारपर दौड़ आयी।'

'लाली! मुझे ज्ञान-दान करो।' बहिनको देखतेही यह बाबा गिड़गिड़ाया। लेकिन बहनने सिर झुका लिया। अपने पैरोंकी ओर वह देखने लगी। श्रीदामने कहा-'मैं समझ गया कि मेरी भाँति इसे पता नहीं, कि ज्ञान होता क्या है।'

सचमुच जो आह्लादिनी हैं, उन महाभाव रूपाको क्या पता कि ज्ञान होता क्या है। उनसे प्रेम-भक्ति माँगी जाती है या...

'ललिता हँस पड़ी। उसने पूछा, श्रीदामाने कहा-वह बोली-बाबा! यह किसकी छाछ है-भैंसकी या बकरियाकी?'

'छि: ! तो यह बाबा सबेरे-सबेरे बकरिया या भैंसकी छाछ मांगने आ टपका?' श्रीदामा हँस रहा था-'लेकिन बाबा तो खीझ गया लगता था।'

'उसे ज्ञान चाहिए तो वह तेरी पौरिपर क्यों मरने गया!' कन्हाई कुछ रूक्ष स्वरमें बोला, जैसे बहुत अप्रिय लगी हो यह कथा उसे-'उसे तब मेरे पास आना चाहिए था।'

'तेरे पास ज्ञानका खजाना गड़ा है?' भद्रने चिढ़कर पूछा।

'हाँ है, लेगा तू?' श्याम कहीं इस प्रकार हतप्रभ होता है।

'कहाँ है?' भद्रको भी तो डराया धमकाया नहीं जा सकता।

'तू इतना भी नहीं जानता?' अब कन्हाई खुलकर हँस पड़ा-'अपने बाबाके गोष्ठके पीछे जहाँ गोप सब कूड़ा-कतवार डालते हैं, उसपर उगा झंखाड़ तू ने देखा नहीं है?'

'अच्छा!' सब बालकोंने ताली बजा दी। सचमुच बहुत बुद्धू था वह बाबा। उसे वह झंखाड़ चाहिए तो बरसाना जाकर लालीको पुकारने क्यों लगा था? उसे तो नन्द गोष्ठका कोई सेवक दे देता। स्वयं आ जाता नन्दगोष्ठके पीछे तो कोई उसे झंखाड़ उखाड़नेसे मना करने लगा था।

ये तो गोपोंके अनपढ़ बालक हैं। इनकी समझमें यही आया है कि जड़ी-बूटी ढूँढ़नेवाला कोई जटाधरी भटक गया था ब्रजमें आकर; किंतु आप बहुत विवेकी हैं तो विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि नन्दगोष्ठमें पिछवाड़े कूड़ेके ढेरपर उगा झंखाड़ ज्ञान नहीं ही होगा?

## १३०-विवाद

श्याम आज सखाओंके संग कुंजमें बैठा है। पाँच-सात कदम्बके वृक्षोंका झुरमुट है और वह पुष्पोंसे लदा है। वृक्षोंपर मालती लताने एक और हरी चादर दो ओर फैलादी है। फूली मालतीकी शाखाएँ श्वेत हो रही हैं। पूरा कुंज मधुर मादक सुगन्धि और भ्रमरोंकी गुंजारसे भरा है।

छोटे-छोटे गोपबालकोंका समूह बैठा है इस कुंजमें। कठिनाईसे ही कोई छः सात वर्षके होंगे। अधिक तो तीन-चार वर्षके ही हैं। दो वर्षके ही कुछ हैं। यह दिगम्बर और कछनीधारी बालकोंकी मण्डली है।

छड़ियाँ, पटुके कुंजमें और बाहर भी इधर-उधर अस्त-व्यस्त पड़े हैं। किसीको इनकी चिन्ता नहीं। चिन्ता और सँभाल करनेकी आयु ही अभी इनकी नहीं है। यह तो इन सबका हठ है कि बछड़े चरानेकी छूट इनको अपने घरोंसे मिल गयी है। नन्दगाँवके समीप ही वनमें इन्हें बछड़े चराने आनेकी चेतावनी घरसे चलते समय माता-पिताने बार-बार दी है।

इनके बछड़े-बछड़ियाँ भी इन जैसे ही अल्हड़ हैं। यह बात दूसरी है कि नन्दनन्दन वनमें हैं तो उनमें-से कोई घर हाँकनेपर भी नहीं जायगा, ले जानेपर नहीं रुकेगा; किंतु इन महीने भरसे लेकर तीन-चार महीनेके बछड़ोंको चरना कहाँ है। ये सब वनमें कूदेंगे, फुदकेंगे और थक जायँगे तो बालकोंके आस-पास ही कहीं वृक्षके नीचे बैठ जायँगे।

इस समय कुंजमें कोई बछड़ा-बछड़ी नहीं है। बालक जैसे खेल-कूदकर आ बैठे हैं, बछड़े भी प्रायः बैठ गये हैं जहाँ-तहाँ। वे कहीं दो-तीन सटकर बैठे हैं और कहीं एकाकी भी। दो-चार इधर-उधर खड़े भी हैं।

बालकोंके शरीरमें धूलि लगी है। किसीके अंगोंपर कीचड़ या गोबरके चिह्न भी हैं। सबके केशोंमें, कण्ठमें, भुजाओंमें, कानोंपर पल्लव, पुष्प, गुच्छे, पक्षियोंके परोंके अटपटे शृंगार हैं। कुण्डल, मालाएँ, बाजूबन्द, कङ्कण इस वन्य-शृंगारसे दब गये हैं।

कन्हाई अपना पटुका कहीं गिरा आया है। एक कानमें कुण्डलके साथ कदम्ब-पुष्प लटक रहा है, दूसरे कानपर कनैरका पीला फूल रखा है। बिखरी अलकें सखाओंके द्वारा पुष्पोंसे भर दी गयी हैं। मयूरपिच्छ तिरछा हो रहा है। वंशी कछनीमें खोंस ली गयी है।

अचानक एक दूधके समान उजला बछड़ा कूदता आया। उसने श्यामके इधर-उधर बालकोंके पास फुदकी लगायी और फिर अपने सिरसे कन्हाईकी पीठको ठेलने लगा।

'गौरव! क्या है?' मोहनने मुड़कर बछड़े को पुचकारा। उसके मुख, गर्दनके निचले भागको सहलानेका प्रयत्न किया।

'हुं' एक छोटी-सी हुंकारी बछड़ेने भरी और कूदकर कृष्णके सहलानेके प्रयत्नको उसने असफल कर दिया। वह अब श्यामके पेटमें सिर लगाकर ठेलनेकी चेष्टा करने लगा है।

'गौरव तुझसे झगड़ने आया है।' कई बालक एक साथ बोल पड़े।

'तू अप्रसन्न है? झगड़ा करेगा तू?' कन्हाई उठकर खड़ा हो गया। उसने बछड़ेके गलेमें भुजाएँ डाल दीं।

'हुं' बछड़ेने फिर छोटी हुंकार भरी। कूदकर पृथक हो गया और फिर कृष्णचन्द्रकी जाँघपर सिरसे ठेलने लगा।

बछड़ेको प्यास लगी है, यह बात उसका पीताम्बरधारी चरवाहा समझता क्यों नहीं? आस-पास जल दीखता नहीं है और यह मयूरमुकुटी कुंजमें बैठा अपने सखाओंके साथ गप्प लड़ाता बैठा है तो बछड़ा झगड़ेगा नहीं। बछड़ेको भूख लगे, प्यास लगे या कुछ और हो, उसकी सब आवश्यकता-पूर्तिका दायित्व जिसपर है, वह उपेक्षा करे तो दोष उसीका तो?

'तू प्यासा है ?' मोहन अपने बछड़ोंकी भाषा समझता है। 'रूठ मत! चल, तुम सबको जल पिलाने चलते हैं।'

अब सब बालक खड़े हो गये। अब वे अपने पटुके, छड़ियाँ ढूँढ़ने उठाने लगे हैं और बछड़ा श्यामको सूँघकर कुंजसे बाहर फुदकता जा रहा है।

## १३१-विशाल

'दादा!' कन्हाई अपने बड़े सखाओंको 'दादा' कम ही कहता है। बहुत प्यारमें हो या कोई काम लेना हो तभी दादा कहता है। नहीं तो दादा केवल दाऊ हैं। दूसरे सब एक दूसरेको नाम लेकर ही पुकारते हैं।

'दादा!' अब यह कृष्णचन्द्र उछलता-कूदता आकर विशालके कन्धेपर बैठ गया है और उसको दादा कह रहा है तो विशाल समझ गया है कि कृष्णको कुछ काम आ पड़ा है।

विशाल सचमुच विशाल है। प्रलम्बकाय और लम्बे शरीरके समान ही हृष्ट-पुष्ट। वह अभी दस वर्ष का है, पर दूरसे कोई तरुण गोप जैसा दीखता है। क्या हुआ कि आयुमें दाऊसे वह महीने भर छोटा है। देहकी दृष्टिसे दाऊसे भी लम्बा और पुष्ट दीखता है वह।

'दादा! मैं फल लूँगा।' श्यामने बड़े प्यारसे विशालकी अलकोंमें अपनी अंगुलियाँ नचाते हुए कहा-'वह पका लाल आम!'

शैशवमें भी विशाल इस कृष्णको अपनी पीठपर चढ़ाकर नन्द भवनका पूरा प्रांगण घुमा लाता था। कभी-कभी तो वह दो-तीनको एक साथ पीठपर बैठा लेता था।

'तू श्यामसुन्दरका घोड़ा है ?' गोपियाँ हँसकर पूछतीं तो विशाल चिढ़नेके स्थानपर हँस पड़ता था; किन्तु कृष्ण प्रतिवाद किये बिना नहीं रहता था-'यह मेरा दादा है।'

माखन-चोरीका क्रम चला गोकुलमें तो वह भला विशालके बिना कैसे पूरा होता। ऊखल पर पाटा, पाटे पर अर्जुन या वरूथप और उसकी पीठपर खड़ा होता

विशाल। विशालके कन्धेपर चढ़नेपर ऐसा कौन-सा छीका था जो कन्हाई के हाथ न आ जाय।

'अच्छा!' विशाल हँस गया। यह कनूँ ऐसे ही उछलता-कूदता उसके कन्धेपर आ बैठता है। इस नन्दलालका भी अपना ढंग है। किसी सखासे बार-बार लिपट जायगा, किसीको गोदमें बैठा लेगा, किसीकी गोदमें सिर धर दिया करेगा; किन्तु विशालके तो कन्धेपर ही जैसे इसका आसन है।

'तू उठ! मैं फल तोड़ूँगा।' श्याम कन्धेपर चढ़ा है और विशालको उसे लिए-ही-लिए उठना है।

'तू उतर! मैं तोड़े देता हूँ।' विशालको भी इस नटखटसे थोड़ा उलझना रुचता है।

'मैं तोड़ूँगा! तू उठ!' कन्हाई उसका सिर झकझोरने लगा है और अपने चरण नचाने लगा है। अब उठना तो पड़ेगा ही इसे।

फल—फल कन्हाईको खाना है, यह आपसे किसने कहा? फल श्यामको रुचा है तो वह उसे तोड़ेगा। किसी सखाको—सम्भव है विशालके मुखको ही उस फलका स्वाद लेना पड़े।

## १३२-अर्जुन

'नहीं, तू गायें नहीं चरा सकता।' अर्जुन गोपकुमारोंमें सबसे सीधा है। आयु में ऋषभ, विशाल, वरूथप और अर्जुन दाऊसे कुछ ही दिन छोटे हैं। सीधा ऋषभ भी बहुत है; किंतु उसके सीधेपन में भी एक गाम्भीर्य है लेकिन अर्जुन तो सीधा है-भोला है।

'तू वंशी बजा, नाच, गा और बहुत मन हो तो सुबल या भद्रके साथ मल्लयुद्ध कर ले।' अर्जुनने दो टूक सुना दिया-'तू गायें नहीं चरा सकता।'

'मैं गाय चराऊँगा।' वह गोपाल ही यह चुनौती कैसे टाल दे। वह क्या गोपकुमार नहीं है? वह श्रीब्रजराजका कुमार है। गोविन्द गायें नहीं चरा सकेगा? कन्हाई हठ पकड़ गया है कि आज सबकी गायें वह अकेला चरायेगा।

गायें अपने आप चरती हैं। उनका चरना स्वभाव है। उन्हें घेरने, ठीक दिशामें हाँकनेका काम ऋषभ, विशाल आदि बड़े सखा भी कभी-कभी ही करते हैं। यह काम प्राय: अर्जुन करता है। यह इतना सीधा है कि सब इसीसे अपनी गायें घेरनेको कहते हैं। यह तो जो झगड़ पड़ा हो, उसकी गायें भी घेरता है।

'तू चरा नहीं सकता, व्यर्थ हठ मत कर।' अर्जुनको सीधी बात कहनी आती है। इसने कन्हाईको लगभग झिड़क दिया।

'बात क्या है?' अर्जुनका ऊँचा, झल्लाया स्वर सुनकर भद्र पास दौड़ आया।

'मैं गायें चराऊँगा।' कन्हाई तना खड़ा है। लाल हो आया है इसका मुख।

'अच्छा चरा।' भद्र हँस पड़ा-'अर्जुन! तनिक चराकर देख लेने दो!'

कन्हाईने लकुट उठाया; किंतु श्यामके लकुटसे तो एक शशक तक नहीं चौंकता, गायें क्या चौंकेगी। सब मोहनके चारों ओर घिर आई हैं। लकुट उठाता है तो इसका लकुट ही सूँघने लगती हैं।

कृष्ण पास हो तो गायें चरनेमें लगेगी या श्यामको देखेंगी-सूँघेंगी? इन्द्रियाँ इसीलिए तो संसारमें भटकती हैं। चरती-विचरती हैं कि गोविन्द इनके सामने नहीं है। गोपाल स्वयं लकुट लिए पालन करने खड़ा हो तो चरना सूझेगा?

कन्हाई ठेलता है, हाँकता है; किंतु गायें हैं कि टससे मस नहीं होती हैं। वे नन्दनन्दनको घेरे हैं। सूँघती हैं, हुंकार करती हैं और थनोंसे दूधकी धारा गिराती हैं।

'कनूँ!' भद्रने देख लिया कि श्याम खिन्न होने लगा है। वह हताश हो चुका है। पास आकर कन्धेपर हाथ रखकर स्नेहसे बोला-'तू इनको बुलाया कर। तू दूर गये को बुला सकता है जो हममें-से कोई नहीं कर सकता। अपनेसे दूर हटाना तेरा काम तो नहीं है। इन्हें अर्जुनको ले जाने दे। सायंकाल तू ही तो इन्हें बुलावेगा।'

कन्हाई हँस पड़ा है। बात समझमें आ गयी लगती है।

## १३३-ऋषभ

'श्यामसुन्दर! तुम अब थक गये हो!' समीप आकर ऋषभने अपना सशक्त दाहिना हाथ कृष्णके वाम स्कन्धपर रख दिया।

इसका सदाका यही ढंग है। गोप-किशोरोंमें सबसे आयुमें यह ऋषभ बड़ा है। सबसे लम्बा और पुष्टकाय है। सबसे अधिक गम्भीर है। ऊधम करना, चिल्लाना इसके स्वभावमें नहीं है। कोई सखा हँसीमें भी कुछ कहे तो इसे वह सच ही लगता है, इतना सीधा है। झगड़ना जैसे जानता ही न हो।

'बूढ़े दादा।' मोहन ही नहीं, दूसरे सखा भी इसे यही कहकर चिढ़ाते हैं; किन्तु ऋषभ चिढ़ना कहाँ जानता है। यह तो चिढ़ानेवालेके कहनेपर भी उसकी गायें लौटा लाने चल देता है।

रहता है सदा दाऊके साथ लगा लगा; किंतु इसकी दृष्टि कन्हाईको देखती रहती है। कृष्ण कब थक गया, कब प्यास लगी श्यामको, कब धूप उसे असह्य हो रही है, यह सब कृष्णसे अधिक इसे पता रहता है और जब यह कोई अनुरोध करता है—कहता सदा अनुरोधके ही स्वरमें अपनी बात है; किंतु इसका अनुरोध तो भद्रतक आदेश मान लेता है।

ऋषभने सघन नीपतरुके नीचे किसलयकी शय्या बनाकर उसपर पाटल एवं पद्मके दलोंकी स्तर रचना की है। इतना श्रम किया है लग कर इसने तो उस शय्याको सार्थक करनेके लिए श्याम क्या श्रमित भी नहीं हुआ होगा?

'कहाँ-मैं तो अभी कहीं नहीं थका।' नटखट नन्दनन्दन सहसा कूदना-उछलना छोड़कर खड़ा हो गया है और अपने बाहु, वक्ष, चरण एक-एकको इस ढंगसे देखने लगा है जैसे इनमें कहीं थकावट हो तो उसे ढूँढ़ लेना चाहता है।

'बूढ़ा दादा कहता है तो तू थक गया है!' अब तो थक जाना पड़ेगा; क्योंकि तोकने हाथ पकड़ लिया है-'चल, तू नीपके नीचे सुबलकी गोदमें सिर रखकर लेट। मैं तुझे वायु करनेके लिए खूब बड़ा-सा पद्म-पत्र तोड़ लाता हूँ।'

'भद्र!' कन्हाईने सोचा था कि भद्र उसे अभी थोड़ा और खेलनेको कह देगा; किंतु भद्र ऐसे अवसरोंपर कहाँ साथ देता है। वैसे वह ठीक कहता है-'तोक दौड़ गया है पद्म-पत्र लेने। अब तू लेटेगा नहीं तो वह रूठ जायगा।'

भद्रको भी लगता है कि श्याम सचमुच कुछ थक गया है तभी थका हो तो -क्या-नीप तरू के नीचे यह पल्लव-तल्पपर लेटेगा और मौलिश्रीके झरते सुमन इसकी अलकोंमें उलझते जायँगे—बड़ी सुन्दर शोभा होगी इसकी।

जब सब एक साथ कहते हैं तो श्याम को मानना ही है कि वह थक गया है।

## १३४-देवप्रस्थ

कन्हाईसे कोई पूछ ले-'तू किसका है?'

'तेरा!' सुनिश्चित उत्तर है।

एक साथ कई पूछें यही प्रश्न तो कृष्ण सबको पृथक-पृथक कहेगा-'तेरा! तेरा!'

दाऊ और भद्रका उत्तर इससे मिलता ही है; किंतु किंचित् भिन्न। दोनों पृथक्-पृथक् एक-एकसे कुछ नहीं कहेंगे। दोनोंका उत्तर है—'तुम सबका!'

सबसे भिन्न उत्तर है इस देवप्रस्थका। इससे प्राय: गोपियाँ, गोप और सखा भी पूछते हैं। यह तोतली बोलीमें बोलता था, तबसे इससे पूछा जाता है—इसलिए पूछा जाता है कि इसका उत्तर देनेका ढंग बहुत प्यारा है।

'तू किसका है?'

देवप्रस्थ झट हँस पड़ेगा, ऐसा हास्य जैसे यूथिकाके अंजलि भर कुसुम बिखर गये हों और कहेगा-'देवताका?'

'कौन है तेरा देवता?'

इसका उत्तर देनेके लिए इधर-उधर देखेगा। दाऊ दादा, कन्हाई, श्रीब्रजराज, मैया, माता रोहिणीमें-से कोई दीख जाय तो दौड़कर लिपट जायगा उनसे।

इनमें-से कोई सामने न मिले तो कोई वृषभ, कोई गाय, कोई बछड़ा। ये भी न हों तो सूर्यकी ओर उँगली उठावेगा और सूर्य भी न हों तो पृथ्वीपर बैठकर दोनों हथेलियोंसे भूमिको थपथपा देगा। किसने बतलाया इसे कि ब्रजधरा, सूर्य आदि सब देवता हैं ?

'देव!'-प्राय: सब इसे इस छोटे नामसे ही पुकारते हैं। श्याम पूछता है-'तू देवता है ?'

'मैं देवताका हूँ।' बड़े जमे ढंगसे कहेगा और फिर कन्हाईके गलेसे लिपट जायगा।

देवप्रस्थ, तेजस्वी, अंशु और तोक ये सब छोटे हैं श्यामसे। इनमें सबसे छोटा तोक। महीने पन्द्रह दिन ही छोटे बड़े हैं ये परस्पर।

देवप्रस्थका सौन्दर्य—जैसे पाटलदलसे इसका शरीर बना है। देवलोकसे कोई बहुत सुन्दर सुकुमार देवता बालक बनकर कन्हाईके साथ खेलने आ गया है, यही लगता है इसे देखकर और मोहनको भी इसे सजानेमें आनन्द आता है।

'देव!' कृष्णके पुकारते ही यह पास दौड़ आवेगा।

'आ बैठ! तू देव है न?' कन्हाई पूछता है।

'हाँ!;' बड़े भोलेपनसे यह कहता है।

'बैठ! मैं तेरी पूजा करूंगा।' ढेरसे पल्लव, पुष्प, पुष्पगुच्छ, गुंजा, मयूरपिच्छ आदि लेकर श्याम बैठ गया है। अब यह अपने देवको सजाने लगा है। यह दूसरी बात है कि देव इसको भी साथ-साथ सजाता जाता है।

## १३५-तेजस्वी

ताम्र और गौर, सुदीर्घारुण लोचन, किंचित् कृशकाय, अरुणपीत वस्त्र, यह नन्हा गोपकुमार तेजस्वी—इसका नाम ही तेजस्वी नहीं है, सचमुच यह अद्‌भुत तेजस्वी है।

'सब उठो! दादा! तू उठ पहिले!' यह है तो आयुमें प्राय: सबसे छोटा, केवल तोक और अंशु इससे छोटे हैं, शरीरमें तोकसे भी छोटा लगता है; किंतु तेजस्वी है न!

सबको—दाऊ दादा तक को यह चाहे जब आदेश दे देता है–'अब हम सब यमुना-तटपर चलेंगे। अपनी गायें प्यासी हैं।'

गायें इसकी हैं या और किसीकी—गोप-कुमारोंमें यह भेदबुद्धि वैसे भी बहुत कम है। यह तेजस्वी तो सम्पूर्ण ब्रजको अपना ही मानता है।

'यह अपने ब्रजराजकुमारका सेनापति है।' गोपियाँ हँसती हैं तेजस्वीके चापल्यपर; किंतु तेजस्वी है कि वह बूढ़े गोपों तकसे कुछ कहता है तो ऐसे स्वरमें कहता है मानो वही ब्रजाधिपति है और उसके आदेश का अविलम्ब पालन होना चाहिए।

'ये राक्षस कहाँसे आते हैं?' उस दिन कन्हाईने व्योमासुरको मारा तो अचानक तेजस्वीके नेत्र लाल हो उठे। 'बक, वत्स...जाने कितने राक्षस आये–आते गये व्रजमें! ये दुष्ट आते कहाँसे हैं?'

'मथुरासे।' दाऊ दादाने सहज भावसे कह दिया। दाऊ इसका बहुत स्नेह करते हैं। जैसे कन्हाईको तोक अतिशय प्रिय है, दाऊ का अपार वात्सल्य है तेजस्वीपर।

'मथुरामें सब राक्षस ही हैं?' तेजस्वी क्रुद्ध पूछ रहा है।

'नहीं! वहाँ बहुत अच्छे लोग हैं।' दाऊने स्नेहपूर्वक हाथ पकड़ा–'लेकिन वहाँका राजा कंस दुष्ट है। उसने बहुतसे राक्षस पाल रखे हैं। वही इन्हें भेजा करता है यहाँ।'

'तू उठ! लकुट उठा अपना।' तेजस्वीने दाऊका हाथ पकड़ा–'मैं आज ही इस दुष्ट कंस और उसके सब राक्षसोंको मार दूँगा!'

'मथुरा दूर है।' दाऊ हँस पड़े–'कंस कोई यहाँ थोड़े ही बैठा है।'

'तू उठ तो सही!' तेजस्वी झल्लाया–'चाहे जितनी दूर हो, मैं चलूँगा वहाँ तक।'

तेजस्वी बालक है—नन्हा बालक; किंतु यदि सचमुच दाऊ लकुट लेकर उसके साथ चल पड़ें तो कंस और उसके सब राक्षसोंको यह मार देगा इसमें आपको कोई सन्देह है?

'कन्हाई थक गया है।' दाऊने अपने अनुजकी ओर देखा–'वह हम दोनों चलें तो मानेगा नहीं और आज उसे दौड़ाना ठीक नहीं है।'

'हाँ!' तेजस्वीका क्रोध शान्त होने लगा है। यह कनूँ इतनी देरसे खेलता रहा है, व्योमासुरसे कुश्ती लड़ता रहा। थक तो गया है, महा हठी है, दाऊ जाय तो साथ गये बिना मानेगा नहीं। अब पहिले इसे विश्राम देना ही ठीक है।

## १३६-अंशु

'कनूँ! तुझे भूख लगी है।' जिसे भूख लगी है, उसे पता नहीं है। ऐसा होता तो है, फिर कन्हाई इतना भोला है कि उसे अपना कुछ भी पता नहीं रहता। यदि उसे अपनी भूखका पता नहीं है तो क्या आश्चर्य! खेलमें लगने पर तो किसी बालकको भूख भूल जाती है।

'नहीं तो!' श्यामने चौंककर कहा।

'लगी है—तुझे भूख लगी है।' अंशुने अपनी बात बड़ी दृढ़तासे कही-'अपना पेट देख!'

अब कृष्ण सिर झुकाकर अपने उदरको बड़े ध्यानसे देखने लगा है। इसके उदरमें कहाँ किधर भूख लगी है, यह देख लेना चाहता है। भूख कोई धूलि, गोबर या चंदन है कि ऐसे दीखेगी।

'कहाँ लगी है?' बड़े भोलेपनसे श्यामने अंशुकी ओर देखकर पूछा।

अंशु छोटा है कन्हाईसे। तोकसे यह कुछ ही दिन बड़ा है। तोक यदि श्रीकृष्णकी दूसरी मूर्ति है तो अंशु दाऊ दादाकी छोटी प्रतिकृति है। वैसा ही स्वर्ण गौर, वैसा ही नीलाम्बर परिधान। दूरसे दाऊका भ्रम हो जाय यदि इसके छोटे आकारपर ध्यान न जाय और कोई यह न देखे कि इसके दोनों कानोंमें कुण्डल हैं।

आकृतिसे कुछ नहीं होता। यह भी तोकके समान कन्हाईके आस-पास ही कूदता-फुदकता है। श्याम भी इसको बहुत स्नेह करता है।

आज बड़े उल्लास-से--बहुत लड़-झगड़कर घरसे अपने छीकेमें कई नये पकवान ले आया है। पता नहीं क्या बात है-इसकी माँ छीका भरते समय इसे खिझाती है--हँसती जाती है और कहती है-'तुझे अपने लिये इतना सब चाहिए?'

आज माँने खिझाया भी खूब और छीका भी खूब भरा। इतना झगड़कर इतना भारी छीका कन्धेपर ढोकर यह इतनी दूर वनमें लाया है और यह कनूँ है कि आते ही खेलमें लग गया। कब तक अंशु धैर्य रखे—कब तक प्रतीक्षा करे।

'तू इतना खेल चुका तो भूख नहीं लगेगी?' अंशु झल्लाया-'अपना पेट तुझे पिचका नहीं दीखता?'

'हम सब आम खायेंगे।' श्याम जान-बूझकर इसे खिझा रहा है।

बाबा कहते हैं-'सबेरे खाली पेट फल नहीं खाते।' कब से घरसे कलेऊ करके चले हैं, यह स्मरण किसीको न रहे तो उसका दोष?

'तुझे तो भूख लगी नहीं है' यह लो--श्यामने अंशुका छीका झपटकर उठा लिया और शिलातलपर सामने रखकर बैठ भी गया-'तू खेल! मैं भूख मिटाता हूँ।'

'जैसे तुझे अकेलेको ही भूख लगती है।' अंशु अब तोकको, सुबलको, भद्रको--सबको पुकारने लगा है। भोजन भी कोई अकेले करनेका काम है।

## १३७-तोक रूठ गया है

तोक रूठ गया है। गोपकुमारोंमें सबसे छोटा, वनमाली, पीताम्बरधारी, मयूर मुकुटी, केकीकण्ठाभनील कन्हाईकी दूसरी तनिक छोटी मूर्ति तो आज अपने ही सगे भाई भद्रसेनसे रूठ गया है। वह कहता है-'नहीं भद्रसे नहीं बोलूँगा।'

कन्हाईके तो प्राण ही मानो बसते हैं अपने इस चचेरे छोटे भाईमें। मोहन सबको चिढ़ा सकता है--सबको खिझा सकता है; किंतु तोक तो मानो श्यामका प्यार ही प्यार पानेको बना है। किसीसे तोक रूठ जाय तो कृष्ण रूठा धरा है और वह आज भद्रसे रूठ गया है। नन्दनन्दनका हाथ पकड़े, बड़े-बड़े नेत्रोंमें आँसू भरे, वह मचल रहा--'तू भद्रसे मत बोल! भद्र बुरा है! बहुत बुरा है भद्र!'

'क्या हुआ! भद्रने तुझे खिझाया है?' श्यामने सुन्दर वक्षसे सटाकर अपने पटुकेसे तोक के नेत्र पोंछे। लाल-लाल हो आया है तोकका मुख।

एक छोटा-सा पाटल पुष्प तोकको जँच गया। तोकको कुछ जँचे तो वह कन्हाईको मिलना चाहिए। किसी प्रकार उचककर दो पत्तियोंके साथ उसे डाल तोड़ा और प्रसन्नतासे लगभग नाचता हुआ बोला-'कितना सुन्दर लगेगा यह कनूँकी अलकोंमें।'

'इसमें एक काँटा है।' भद्र समीप खड़ा था छोटे भाईके। उसके नेत्र पता नहीं कैसे सदा इतने सावधान रहते हैं। उसने रोका-'कहीं गोविन्दने अपनी अलकोंपर हाथ घुमाया और उसकी अँगुलीमें यह लग गया तो?'

'कहाँ?' तोकने पुष्पकी ओर चौंककर देखा और अपना हाथ बढ़ाया उसकी टहनीपर फिरानेके लिए।

'यह देख!' भद्रने पुष्प झपट लिया तोकके हाथसे। ऐसे टटोलनेमें तो तोक स्वयं अपने हाथमें काँटा चुभा लेगा। भद्रने काँटेसे अपनी भुजापर हल्की खरोंच बनाकर भुजा तोकके सामने कर दी और तोकने वह खरोंच देखी तो उसके नेत्र भर आये। वह रूठ गया है।

'तूने अपने काँटा क्यों चुभाया?' तोक रोते-रोते बोला और दौड़ा-दौड़ा आया है श्यामके पास उलाहना देने।

'ठीक, मैं भी नहीं बोलता भद्रसे।' कन्हाई हँसीको दबाये है किसी प्रकार-'दुखने दे उसकी खरोंच।'

'नहीं, तू उसे ठीक कर दे!' तोक यह कैसे सह ले कि भद्रके हाथपर लगी खरोंच उसे पीड़ा देती रहे। वह अब कृष्णसे मचल रहा है-'तू चल, पहिले उसे ठीक कर दे।'

## १३८-भद्र

'कनूँ! तेरा पटुका कहाँ है?' भद्रने पूछ लिया।

यह कन्हाई अभी अभी दौड़ा-दौड़ा आया है। अब भी किंचित् श्वासमें वेग है। अलकें थोड़ी मुखपर आ गयी हैं। कपोल-पालीपर कुण्डल अभी-अभी स्थिर हुए हैं। यह कुछ कहने दौड़ा आया है भद्रसे और आकर इसने दोनों हाथ भद्रके कन्धोंपर धर दिये हैं।

यह नन्दनन्दन बहुत चंचल है। इसे दो क्षण बैठना अच्छा नहीं लगता। इधरसे उधर और उधरसे इधर फुदकता ही फिरता है। यह कुछ कहने दौड़ आया था और भद्रने टोक दिया-'तेरा पटुका कहाँ है?'

'मेरा पटुका?' श्याम भूल ही गया कि वह क्या कहने दौड़ा आया था। उसे तो पता ही नहीं कि पटुका उसके कन्धेपर है या नहीं। उसने दोनों हाथ भद्रके कन्धे-से उठाकर अपने कन्धे टटोले, वक्षकी ओर देखा, पीछे देखा, इधर-उधर देखा-'कहाँ गया उसका पटुका?' वह ऐसा हैरान है जैसे पटुका भी कोई बछड़ा है जो कहीं भाग गया है।

'यह रहा' झटपट भद्रके पटुकेपर दृष्टि पडी तो कृष्णने झपट लिया उसे और अपने कन्धेपर ठीक सजाता बोला-'तूने मेरा पटुका क्यों ले लिया था?'

'यह तेरा पटुका है?' भद्र हँस पड़ा।' देखता नहीं है कि यह दाऊ दादाके जैसा नीला है। तेरा पटुका तो पीला-पीला है।'

'पटुका तो यही मेरा है।' कहीं गोविन्द ऐसे हार माना करता है। इसने पटुकेके दोनों छोर दोनों हाथोंसे पकड़कर उठाकर उन्हें ध्यानसे देखा-'तूने इसका रंग पलट दिया है। चल घर, मैं मैयाको कहूँगा।'

'कनूँ! कनूँ! यह तेरा पटुका' वरूथप दौड़ा आ रहा है कृष्ण का पीताम्बर लिए। समीप आकर बोला-'तू इसे कहाँ पटक आया था?'

'मेरा पटुका?' श्याम चौंका। वरूथपके हाथसे पीताम्बर लेकर उसने ध्यानसे देखा-'अरे, मेरा तो यह है।' अब भद्रका पटुका वह उसे मनुहार करके न दे तो भद्र रूठेगा नहीं?